दुश्मन

मक्सिम गोर्की

परिकल्पना

दुश्मन

(नाटक)

मक्सिम गोर्की

परिकल्पना

जनचेतना, डी–68, निरालानगर, लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2004

परिकल्पना प्रकाशन
जनचेतना, डी–68, निराला नगर,
लखनऊ–226020 द्वारा प्रकाशित

वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ
द्वारा मुद्रित

मूल्य: रु. 35.00(पेपर बैक)
रु. 70.00(सजिल्द)

आवरण–परिकल्पना एवं संयोजन–**रामबाबू**

Dusman by MAXIM GORKY

मक्सिम गोर्की–एक नाटककार के रूप में

नाट्य-लेखन के क्षेत्र में प्रवेश से पहले गोर्की की विद्रोही सर्वहारा चेतना वैज्ञानिक समाजवादी विचारधारा से लैस हो चुकी थी।

1901 में उनका पहला नाटक *'स्मग सिटिजन्स'* प्रकाशित हुआ जिसमें पहली बार रूसी मज़दूर को इतिहास के नये नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया था। उसके अगले ही वर्ष 1902 में उनका दूसरा नाटक *'दि लोअर डेप्थ्स'* प्रकाशित हुआ, जिसे कई समालोचक और नाट्य-निर्देशक आज भी गोर्की की सर्वश्रेष्ठ नाट्य रचना मानते हैं।

'दि लोअर डेप्थ्स' के प्रकाशन के समय तक मक्सिम गोर्की को न केवल रूसी क्रान्तिकारी जनवादी और यथार्थवादी परम्परा के एक सम्भावना सम्पन्न वारिस के रूप में मान्यता मिल चुकी थी, बल्कि उनके यथार्थवाद का अनूठा नयापन भी ध्यानाकर्षण का केन्द्र बन चुका था। तोल्स्तोय और चेखव जैसे लेखकों से समाज के अँधेरे रसातल से उठकर कला-साहित्य की दुनिया में आये इस विचित्र सर्जक के कृतित्व की मौलिकता एवं अनूठेपन को लक्षित किया और उनकी प्रतिभा का ऊँचा मूल्यांकन किया।

'लोअर-डेप्थ्स' के प्रकाशित होने के साथ ही गोर्की *ओस्त्रोव्स्की* और *चेखव* जैसे महान नाटककारों और रूसी यथार्थवादी नाट्य-परम्परा की एक अग्रवर्ती कड़ी के रूप में देखे जाने लगे थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में, क्रान्तिकारी उभार के वर्षों के दौरान गोर्की के इन दोनों नाटकों का मंचन एक सार्वजनिक घटना हुआ करता था और प्रायः इनका इस्तेमाल ज़ारशाही-विरोधी आन्दोलनों-प्रदर्शनों के दौरान जनता को उद्वेलित करने के लिए किया जाता था। देखते ही देखते गोर्की के इन दो नाटकों के मंचन ने रूसी दर्शकों की पूरी संरचना बदल डाली। प्रेक्षागृहों का कुलीन परिवेश 'रैडिकलाइज' होने लगा और उसकी चौहद्दी विस्तारित होने लगी। **शेक्सपियर** की क्लासिकी परम्परा से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के महान यूरोपीय आलोचनात्मक यथार्थवादी नाटकों तक के मंचन के लिए प्रसिद्ध **मास्को आर्ट थियेटर** और विश्वख्यात नाट्य निर्देशक-अभिनेता और रंग सिद्धांतकार **स्तानिस्लाव्स्की** के सामने गोर्की के नाटकों ने नयी समस्याएँ और चुनौतियाँ ला खड़ी कीं। रंग-प्रयोगों के नये-नये आयाम और रंग-सिद्धान्तों के विकास की संभावनाओं के नये क्षितिज उद्घाटित होने लगे।

1902 में 'दि लोअर डेप्थ्स' प्रकाशित होने तक गोर्की की सृजनात्मक सक्रियता का एक दशक पूरा हो चुका था। सितम्बर, 1892 में उनकी पहली कहानी *'मकरचुद्रा'* प्रकाशित हुई और इसके साथ ही वे न केवल हजारों आम पाठकों के प्रिय लेखक बन गये, बल्कि सभी गण्यमान्य रूसी लेखकों का ध्यान उन्होंने अपनी ओर खींचा। 1892 तक गोर्की दर्जनों किस्म

की मेहनत-मजूरी के कामों का तजुर्बा हासिल कर चुके थे, बरसों तक विशाल रूस के सुदूर छोरों तक का चक्कर काट चुके थे और यह सब कुछ करते हुए विश्व-साहित्य का, खासकर उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोपीय यथार्थवादी साहित्य का जमकर अध्ययन भी किया था। कुछ दिनों तक ग़ैरकानूनी नरोदवादी सर्किलों से जुड़कर मज़दूरों-किसानों के बीच प्रचार-कार्य भी किया था और गिरफ्तारी के बाद पुलिस निगरानी में रहने का भी अनुभव हासिल किया था।

1890 का दशक शुरू होते-होते गोर्की नरोदवादी राजनीति की सीमाओं को समझ चुके थे। रूस के भविष्य के अग्रदूत मज़दूर वर्ग की ऐतिहासिक क्रान्तिकारी सम्भावनाओं को पहचानने के साथ ही वे वैज्ञानिक समाजवाद के अध्ययन के तरफ भी प्रवृत्त हुए। राजनीति के क्षेत्र में, मजदूरों और छात्रों के बीच सक्रिय विभिन्न मार्क्सवादी मण्डलों ने उनका ध्यान खींचा तो दूसरी ओर, कोरोलेंको ने उनके साहित्यिक दीक्षा-गुरू की भूमिका निभाई। गोर्की की विकासमान राजनीतिक चेतना उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में ही स्पष्टतः दीखने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक की अपनी कहानियों और निबन्धों में मजदूरों-मजलूमों के हित को प्रस्तुत करते हुए उनके "जीवन के मालिक" निम्नपूँजीपति वर्ग की उन्होंने खूब लानत मलामत की।

न केवल रूसी साहित्य में, बल्कि पूरे विश्व साहित्य में पहली बार मज़दूरों के जीवन के सहानुभूतिपूर्ण यथातथ्य चित्रण से आगे बढ़कर उनके क्रान्तिकारी उभार, और उनके भीतर छुपे मानवीय सारतत्व को गोर्की की रचनाओं ने अभिव्यक्त किया। मज़दूर वर्ग की इतिहास-निर्माण में ऐतिहासिक भूमिका की पहचान करते हुए गोर्की ने अपनी रचनाओं में उन्नीसवीं शताब्दी के यथार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद की सर्वश्रेष्ठ परम्पराओं को विकसित किया और फिर आगे चलकर इन दोनों का संश्लेषण करते हुए, समाजवादी यथार्थवाद की आधारशिला रखी। *'कोनोवालोव'*, *'ओरलोव दम्पति'*, *चेल्काश'* और *'किरिल्का'* जैसी अपनी प्रारम्भिक यथार्थवादी कहानियों में आम जनों के जीवन का विश्वसनीय चित्रण करते हुए गोर्की ने रूसी समाज में एक नई सामाजिक-राजनीतिक चेतना के प्रस्फुटन के तथ्य के साथ ही अलग-थलग व्यक्तिगत विद्रोहों की अपरिपक्वता-निरर्थकता को भी रेखांकित किया। साथ ही, *'बुढ़िया इज़रगिल'*, *'बाज का गीत'*, *'तूफानी पितरेल का गीत'* जैसी स्वच्छन्दतावादी रचनाएँ अपने दन्तकथा नायक या रूपक-चरित्र और "बहादुरी के पागलपन" की थीम के साथ क्रान्तिकारी कार्रवाई का संदेश-सी देती प्रतीत होती हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक गोर्की की सामाजिक-विचारधारात्मक खोजी यात्रा उन्हें मार्क्सवाद के मुकाम तक पहुँचा चुकी थी। वे लेनिन के *'इस्क्रा'* अखबार की राजनीति से अपनी प्रतिबद्धता घोषित कर चुके थे और 1901 में राजनीतिक कार्रवाइयों के लिए मुकदमे और इलाका-बदर के दण्ड का भी सामना कर चुके थे। पहली बार, *'फ़ोमा गोर्देयेव'* और *'वे तीन'* उपन्यासों में पुराने आलोचनात्मक यथार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद के श्रेष्ट तत्वों का संश्लेषण करते हुए गोर्की ने सर्वहारा वर्ग और बुर्जुआ वर्ग के विभिन्न संस्तरों के प्रतिनिधि चरित्रों को उभारा और मेहनतकशों के अन्धकारमय जीवन के आभासी यथार्थ को भेदकर उनकी इतिहास-निर्मात्री शक्ति की पहचान की।

एक नाटककार के रूप में गोर्की की सृजन-प्रतिभा तब प्रस्फुटित हुई, जब वे मार्क्सवादी बन चुके थे। कहा जा सकता है कि गोर्की के सृजन-कर्म के माध्यम से समाजवादी यथार्थवाद उपन्यासों और कहानियों से पहले नाटकों के रूप में सामने आया। *'स्मग सिटिजन्स'* और *'दि लोअर डेप्थ्स'*- इन दोनों ही नाटकों में हमें यथार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद के क्रान्तिकारी तत्वों का एक अद्भुत संश्लेषण देखने को मिलता है। *'दि लोअर डेप्थ्स'* में गोर्की ने पूँजीवाद के तिरस्कृतों की जिन्दगी का, व्यवस्था द्वारा जीवन के "रसातल" में धकेल दिये गये लोगों की जिन्दगी का, विश्वसनीय चित्रण करते हुए धार्मिक मानवतावाद और सुकून देने वाले झूठों के विषाक्त प्रभावों को कायल कर देने वाले ढंग से उद्घाटित किया है। लेकिन इसके साथ ही नाटक के एक पात्र सातिन के एक स्वगत-कथन (मोनोलॉग) के जरिए उन्होंने मनुष्य की भव्यता और सृजनात्मक मेधा का काव्यात्मक गुणगान भी किया है। दिलचस्प बात है कि 1903 में लिखी गयी *'मैन'* नामक दार्शनिक प्रगीतात्मक कविता की भी थीम वही है जो सातिन के स्वगत-कथन की है।

1904 में गोर्की का अगला नाटक *'दि समर पीपुल'* प्रकाशित हुआ। उसके अगले ही वर्ष दो और नाटक *'चिल्ड्रेन ऑफ दि सन'* और *'दि बारबेरियन्स'* प्रकाशित हुए। इन नाटकों में गोर्की ने उस रूसी बुद्धिजीवी समुदाय की भर्त्सना की थी जो या तो बुर्जुआ फिलिस्टाइन हो गया था, या फिर उसने स्वयं को "विशुद्ध" पाण्डित्य के दायरे में कैद कर लिया था। गोर्की के ये तीनों नाटक संस्कृति के निर्माताओं से अपनी रचनाओं के जरिए मुखर जन-पक्षधरता और सक्रिय भूमिका का प्रत्यक्ष आग्रह करते हैं। नाटककार गोर्की इस मुकाम तक आते-आते नई विकासमान सच्चाइयों को पकड़ने और अभिव्यक्त करने की कोशिश में उन्नीसवीं शताब्दी की रूसी नाट्य परम्परा से इतना आगे निकल आये थे कि आलोचकों और रंगकर्म के अग्रणी पुरोधाओं को इनकी संश्लिष्ट संरचना और मुखर पक्षधरता दोनों ही रास नहीं आयी और उन्हें तीखी आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा। इनके महत्व का समुचित मूल्यांकन कुछ वर्षों बाद ही जाकर सम्भव हो सका।

'दुश्मन' नाटक के बारे में

1905-07 के क्रान्तिकारी वर्षों में सघन राजनीतिक सक्रियता के साथ-साथ गोर्की ने समाजवादी यथार्थवाद की शानदार और परिपक्व कृतियों की रचना की। जारशाही के विरुद्ध विद्रोह के खुले आहान के चलते उन्हें गिरफ्तार करके पीटर पाल दुर्ग में बन्द कर दिया गया लेकिन विश्वव्यापी विरोध के चलते उन्हें जल्दी ही रिहा कर दिया गया। 1905 की गर्मियों में वे बोल्शेविक पार्टी में शामिल हो गये। इसी दौरान पहले बोल्शेविक कानूनी अखबार *'नोवाया ज़ीज़्न'* के संचालन में, लेनिन के निर्देशन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभायी और

मज़दूरों के प्रतिरोधी दस्तों की हथियारों और धन से मदद भी की। 1906 के शुरू में रूसी क्रान्ति के पक्ष में प्रचार के लिए वे पार्टी की ओर से, गैर कानूनी रूप से अमेरिका गये। अमेरिका प्रवास के दौरान बुर्जुआ जनवाद के ढोंग-ढकोसलों के विरुद्ध लिखे गये उसके लेखों और पैम्फलेटों को विश्वव्यापी लोकप्रियता मिली।

1906 में गोर्की का नाटक *'एनिमीज़'* (दुश्मन) और विश्वप्रसिद्ध उपन्यास *'दि मदर'* कुछ ही महीनों के अन्तराल पर प्रकाशित हुए। *'दि मदर'* उपन्यास की ख्याति देखते ही देखते रूस की सीमाओं के बाहर तक जा पहुँची। काफी हद तक *'दि मदर'* उपन्यास की ख्याति की प्रभाव छाया में 'एनिमीज' नाटक कुछ समय के लिए खोया सा रहा। उसकी महत्ता और उत्कृष्टता का समुचित मूल्यांकन कुछ वर्षों बाद ही पूरी तरह सम्भव हो सका। लेकिन उनके पूर्ववर्ती तीन नाटकों के आलोचकों ने जब इस नये नाटक को भी अपने प्रहारों का निशाना बनाया तो **प्लेखानोव** ने उसकी जमकर हिफाजत करते हुए 1907 में *'आन दि साइकोलॉजी ऑफ दि वर्कर्स' मूवमेण्ट'* शीर्षक अपना सुप्रसिद्ध समालोचनात्मक निबन्ध लिखा।

अपने इस निबन्ध में *'एनिमीज़'* नाटक के बारे में प्लेखानोव ने लिखा थाः *''जहाँ तक मेरी विनम्र राय का सवाल है, मैं सीधे-सीधे कहूँगा कि गोर्की का नया नाटक उत्कृष्ट है। इसकी अन्तर्वस्तु अत्यन्त समृद्ध है और यदि कोई उसे नहीं देख पाता तो उसने जानबूझकर अपनी आँखें बन्द कर रखी हैं।''* गोर्की की प्रतिभा और आधुनिक क्रान्तिकारी साहित्य के विकास में उनके कामों के विचारधारात्मक महत्व के बारे में प्लेखानोव अत्यन्त ऊँची राय रखते थे। खासतौर पर उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सवाल सिर्फ उस वास्तविक सामग्री के महत्व का ही नहीं है जो मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन के बारे में गोर्की ने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। सामग्री तो मात्र एक श्रेष्ठ साहित्यिक कृति के सृजन की सम्भावना उपलब्ध कराता है। यह सम्भावना वास्तविकता में रूपान्तरित हो सके, इसके लिए उक्त सामग्री का उच्चस्तरीय कलात्मक निरूपण अनिवार्य है। इस दृष्टि से अपने प्रभावशाली निबन्ध में प्लेखानोव ने अपना यह मूल्यांकन प्रस्तुत किया कि गोर्की का नया विवादास्पद नाटक *'एनिमीज'* कठोर सौन्दर्यशास्त्रीय अपेक्षाओं पर भी खरा उतरता है। खासतौर पर, उन्होंने इस नाटक में आधुनिक मजदूर आन्दोलन के मनोविज्ञान के शानदार चित्रण की महत्ता को रेखांकित किया।

'दि लोअर डेप्थ्स' के बाद प्रकाशित गोर्की के चारों नाटकों को लेकर चल रही बहस में बुर्जुआ खेमे के लेखकों-आलोचकों द्वारा गोर्की की आलोचना का प्लेखानोव ने आक्रामक प्रत्युत्तर दिया। **कोर्नेइ चुकोव्स्की** ने जब यह टिप्पणी की कि *'गोर्की सिर से पांव तक एक फिलिस्टाइन हैं',* तो इसका प्रतिवाद करते हुए प्लेखानोव ने लिखा कि यह बात वही कह सकता है जो समाजवाद और फिलिस्टाइनवाद के बीच के अन्तर को समझता ही न हो। यही नहीं, कुछ ऐसे लेखक जो विचारों के मामले में गोर्की का समानधर्मा होने का दावा करते थे, उनके द्वारा की जा रही गोर्की की भोंडी-उथली आलोचनाओं का भी प्लेखानोव ने माकूल जवाब दिया। प्लेखानोव गोर्की के कोई अन्ध प्रशंसक नहीं थे। कथा-लेखन की नई सृजनात्मक जमीन उद्घाटित करने वाले एक क्रान्तिकारी सर्वहारा लेखक के रूप में गोर्की का ऊंचा मूल्यांकन रखने के साथ ही उन्होंने उस समय उनके दार्शनिक-वैचारिक विचलनों की तीखी और सटीक आलोचना भी की थी जब गोर्की **माख** के नवभाववादी दर्शन के प्रभाव में **बोग्दानोव, लुनाचार्स्की** आदि के साथ मिलकर *''ईश्वर निर्माण''* के वैचारिक उपक्रम में लगे हुए थे। इस प्रश्न पर लेनिन ने भी गोर्की के भटकावों की कटु आलोचना की थी। बाद में गोर्की ने अपने दार्शनिक भटकावों को समझा-स्वीकारा और ठीक भी किया।

लेकिन अजीब-सी बात यह है कि प्लेखानोव ने एक ही समय में, जहाँ गोर्की की गलत दार्शनिक अवस्थिति की सही आलोचना की, वहीं उनकी सही राजनीतिक अवस्थिति की गलत आलोचना भी की। दरअसल प्लेखानोव ने गोर्की के बारे में जो कुछ भी लिखा है, उनमें से ज्यादातर 1907 से 1911 के बीच लिखा है, जबकि नाटकीय ढंग से राजनीतिक पक्ष-परिवर्तन करते हुए वे स्वयं मेंशेविक अवस्थिति पर जा खड़े हुए थे। इसीलिए गोर्की के कृतित्व का श्रेष्ठ आकलन करते हुए भी कई जगह उन्होंने गोर्की के सुस्पष्ट-सुपरिचित विचारों एवं चरित्रों का गलत एवं विरूपित निरूपण किया है। कई जगह तो ऐसा प्रतीत होता है कि गोर्की के विचारों-चरित्रों की आलोचना करते हुए वे लेनिन के साथ राजनीतिक बहस चला रहे हैं (गोर्की तब बोल्शेविक पार्टी के साथ थे)। *'एनिमीज'* नाटक की उनकी समालोचना पर भी यह बात लागू होती है। कृति का उच्च आकलन करते हुए भी, इसमें उन्होंने प्रकारान्तर से 1905-07 की रूसी क्रान्ति में बोल्शेविकों की कार्यनीति की अपनी आलोचना रख दी है, जैसा कि हम आगे देखेंगे।

'एनिमीज' नाटक की थीम पहले के नाटकों से अलग, एकदम मुखर तौर पर राजनीतिक है। जनसमुदाय के बीच बोल्शेविकों के बढ़ते प्रभाव का वस्तुपरक चित्रण करते हुए गोर्की ने इस नाटक में विश्वसनीय ढंग से यह दर्शाया है कि किस प्रकार मज़दूरों का हड़ताली आन्दोलन एक राजनीतिक संघर्ष के स्तर तक ऊपर उठ जाता है।

'एनिमीज़' नाटक का मूल्यांकन करते हुए प्लेखानोव लेव्सिन, यागोदिन और र्याबत्सोव जैसे वर्ग-सचेत मज़दूर चरित्रों को ऐसे सर्वहारा नायकों के रूप में देखा है जो सही क्रान्तिकारी कार्यनीति के मूर्त रूप हैं। नाटक के ये चरित्र उदात्त आत्म-बलिदान की भावना से ओतप्रोत और जनसमुदाय के उत्कर्ष के महान लक्ष्य से प्रेरित हैं। प्लेखानोव इन चरित्रों के बरक्स भूतपूर्व अभिनेत्री तात्याना लुगोवाया के रूप में एक ऐसे बुद्धिजीवी चरित्र को रखकर देखते हैं जिसका कोई सुनिश्चित विश्व-दृष्टिकोण नहीं है। क्रान्तिकारी मज़दूरों की ईमानदारी भरी शौर्य-भावना तात्याना को आवश्यकता से अधिक सरल और भावावेग से रिक्त प्रतीक होता है। प्लेखानोव के अनुसार, तात्याना लुगोवाया जैसे लोग अतिशयतापूर्ण, अनुचित, गुलाबी आशाओं से स्वयं को धोखा देने के आदी होते हैं। जनता के बीच लम्बा, श्रमसाध्य काम और उसे राजनीतिक चेतना देने की प्रक्रिया उन्हें उबाऊ प्रतीत होती है। उन्हें इसमें कोई भावावेग

या शौर्य दिखाई नहीं देता। इसीलिये तात्याना का साक्षात्कार जब मज़दूरों की सच्ची क्रान्तिकारी चेतना से होता है तो वह उसे समझ नहीं पाती। उनकी कार्रवाइयों में अन्तर्निहित साहस और शौर्य को वह लक्षित नहीं कर पाती। यहाँ तक नाटक की अन्तर्वस्तु और चरित्रों के सही -सटीक व्याख्या-विश्लेषण के बाद प्लेखानोव बोल्शेविकों के साथ जारी अपनी बहस की गर्मी के प्रभाव में इन चरित्रों को अनुचित ढंग से संदर्भित करते हैं और तात्याना के आधारहीन आशावाद का सादृश्य निरूपण 1905-07 के क्रान्तिकारी वर्षों के दौरान बोल्शेविकों की कार्यनीति से करने लगते हैं।

'एनिमीज' समाजवादी यथार्थवादी धारा का पहला परिपक्व राजनीतिक नाटक है। राजनीतिक नाटक यदि अतीत की किसी ऐसी राजनीतिक घटना को केन्द्र में रखकर लिखा जाये जिसके बारे में इतिहास अपना फैसला सुना चुका हो, तो सृजन की चुनौतियाँ सापेक्षतः सुगम होती हैं। लेकिन समकालीन ऐतिहासिक घटनाओं को विषय वस्तु बनाते ही ये चुनौतियाँ अत्यन्त दुष्कर हो जाती हैं। 'एनिमीज' नाटक में गोर्की ने यह जोखिम उठाया है और अपने उद्यम में वे शानदार ढंग से सफल रहे हैं।

एक लम्बा अन्तराल और फिर नये नाटकों की एक पूरी श्रृंखला

1906 के बाद लगभग पच्चीस वर्षों तक गोर्की ने कोई नाटक नहीं लिखा। एक बार फिर 1932 से 1935 के बीच उनके कई नाटक प्रकाशित हुए। इस बीच गोर्की के राजनीतिक विचारों और सृजनात्मक लेखन की एक लम्बी यात्रा थी जो अनेक चढ़ावों-उतारों से भरी रही।

1906 से 1913 के बीच के प्रतिक्रिया के वर्षों में इटली के काप्री द्वीप पर स्वास्थ्य-लाभ करते हुए गोर्की *'व्येर्योद ग्रुप'* के निकट राजनीतिक सम्पर्क में रहे तथा राजनीतिक तौर पर मध्यमार्गी और दार्शनिक तौर पर माखवादी विचलनों के शिकार रहे। लेनिन की तीखी आलोचनाओं ने उन्हें फिर से मार्क्सवादी अवस्थिति पर लाने में विशेष मदद की। उनके वैचारिक भटकाव विशेष तौर पर *'कन्फेशन'* (1909) नामक उपन्यासिका में देखने को मिलते हैं, लेकिन ठीक इसी दौरान लिखी गयी *'दि लास्ट वन्स'* (1908) और *'दि टाउन ऑफ ओकुरोव'* जैसी कृतियों में निरंकुश पुलिस-व्यवस्था के भण्डाफोड़ और बुर्जुआ-फिलिस्टाइन दुनिया के पराभव के चित्रण के साथ ही किसानों और मध्यवर्गीय दायरों में पैठ बना रहे क्रान्तिकारी विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। *'समर'* (1910) और *'लाइफ ऑफ मत्वेई कोझेमकिन'* (1910-11) जैसे उपन्यासों में यह अन्तर्वस्तु और परिपक्व होकर सामने आई है। *'टेल्स ऑफ इटली'* (1911-13) की कहानियों में इतालवी सर्वहारा और मज़दूरों की समाजवादी भावनाओं के गोर्की ने काव्यात्मक चित्र उपस्थित किये, जिनकी लेनिन ने भी सराहना की। 1913 और 1916 में क्रमशः गोर्की की आत्मकथात्मक उपन्यासत्रयी की पहले दो कड़ियाँ *'चाइल्डहुड'* और *'इन दि वर्ल्ड'* प्रकाशित हुई। ये उपन्यास समाजवादी यथार्थवादी उपन्यासों की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण मील के पत्थर माने जाते हैं। 1913 में इटली से स्वदेश वापसी के बाद 1916 तक गोर्की राजनीतिक पत्रकारिता और राजनीतिक कामों में काफी व्यस्त रहे। अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति की तैयारी से लेकर उसके बाद के एक वर्ष के दौरान गोर्की एक बार फिर अनिश्चय और ढुलमुलपन के भँवर में जा उलझे। उन्होंने क्रान्तिकारी सर्वहारा और उसकी पार्टी की सांगठनिक शक्ति एवं क्षमता को कम करके आँका, किसानों के साथ संयुक्त मोर्चे की सम्भावनाओं के प्रति शंका प्रकट की और इस आशंका से ग्रस्त रहे कि छोटे मालिकों की अराजक व्यक्तिवादी भीड़ के दबाव को नवजात क्रान्ति झेल नहीं सकेगी। लेनिन की सतत् मित्रवत आलोचनाओं और ज़िन्दगी की सच्चाइयों ने गोर्की को अपनी गलती समझने में मदद की और 1920 तक आते-आते वे दृढ़तापूर्वक समाजवादी क्रान्ति की बोल्शेविक अवस्थिति के साथ आ खड़े हुए। स्वास्थ्य की तमाम समस्याओं और स्वास्थ्य-लाभ के लिए लम्बे समय तक के लिए विदेश प्रवास के बावजूद गोर्की की रचनात्मक सक्रियता ने गत शताब्दी के तीसरे दशक में नयी-नयी ऊँचाइयाँ छुईं और नये-नये प्रतिमान स्थापित किये। राजनीति और इतिहास के प्रश्नों पर विपुल लेखन और सोवियत लेखकों को संगठित करने तथा युवा पीढ़ी के कलम के सिपाहियों की शिक्षा-दीक्षा मार्गदर्शन के कामों में घनघोर व्यस्तता के बीच आत्मकथात्मक उपन्यासत्रयी की तीसरी कड़ी *'माइ यूनिवर्सिटीज'* (1922) और *'दि अर्तामानोव्स'* (1925) प्रकाशित हुए तथा पूरी दुनिया में चर्चित प्रशंसित हुए।

अपने जीवन के अंतिम ग्यारह वर्षों के दौरान 1925 से 1936 तक, गोर्की लगातार अपने स्मारकीय महाकाव्यात्मक उपन्यास *'दि लाइफ ऑफ क्लिम सामगिन'* पर काम करते रहे जिसके चौथे खण्ड को मृत्यु ने उन्हें पूरा करने का अवसर नहीं दिया। इस महान उपन्यास के अत्यन्त व्यापक फलक पर क्रान्तिकारी परिवर्तन के युग के दौरान के संश्लिष्ट सामाजिक अन्तरविरोधों का निरूपण करते हुए गोर्की ने अक्टूबर क्रान्ति के बाद के वर्षों में रूसी समाज में जारी विकट विचारधारात्मक एवं सामाजिक संघर्ष की जटिल अन्तर्वस्तु को उद्घाटित किया है और बुर्जुआ व्यक्तिवाद के विघटन की प्रक्रिया का अद्भुत कलात्मक इतिहास प्रस्तुत किया है।

साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्तियों के ऐतिहासिक युग की मूल अन्तर्वस्तु और प्रमुख अभिलाक्षणिकताओं का साहित्यिक दस्तावेजीकरण करते हुए मक्सिम गोर्की अपने उपन्यास *'दि लाइफ ऑफ क्लिम सामगिन'* में जिन चिन्ताओं-समस्याओं से जूझते हुए और भौतिक-आत्मिक जीवन की जिन नई-पुरानी परिघटनाओं को समझते तथा उनकी ऐतिहासिक नियतियों परिणितियों को लक्षित करते हुए दीखते हैं, बुनियादी तौर पर उनके वही सरोकार हमें उनके चौथे दशक के नाटकों में अलग-अलग ढंग से तथा अलग-अलग रूपों में देखने को मिलते हैं। चौथे दशक में प्रकाशित गोर्की की नाट्य-कृतियाँ थीं: *'ईगोर बुलिचोव ऐण्ड दि अदर्स'* (1932), 'दोसिगायेव ऐण्ड दि अदर्स' (1933) और *'वास्सा झेलेज्नोवा'*

(1935)। समाजवादी समाज में विघटित होती पुरानी सामाजिक संरचना से सम्बद्ध चरित्रों के मनोविज्ञान और नयी निर्माणाधीन सामाजिक संरचना से सम्बद्ध चरित्रों के मनोविज्ञान का, तथा जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक संघातों का सफल निरूपण करते हुए गोर्की ने अपने इन नाटकों में समाजवाद की विजय और पूँजीवाद के विघटन को इतिहास-विकास की स्वाभाविक परिणति बतलाया है। अन्तर्वस्तु की संश्लिष्टता के ही अनुरूप गोर्की के इन नाटकों की संरचना भी संश्लिष्ट है। इनका ऐतिहासिक पक्ष जितना समृद्ध है। उतना ही इनका मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है। सच पूछें तो गोर्की के इन नाटकों के सम्यक् मूल्यांकन का काम अभी भी अधूरा ही है।

एक सामान्य सिंहावलोकन करते हुए कहा जा सकता है कि व्यवस्थित कालक्रमानुसार, गोर्की के नाटकों में हमें थीम की चार व्यापक श्रेणियाँ क्रमशः देखने को मिलती हैं। पहली श्रेणी पहले दो नाटकों की, यानी *'स्मग सिटिजन्स'* और *'दि लोअर डेप्थ्स'* की है जिसमें गोर्की पूँजीवाद द्वारा जिन्दगी के हाशिए पर धकेल दिये गये लोगों के जीवन के अंधेरे को तथा मनुष्य की उस सर्जनात्मक भव्यता को विषय बनाते हैं, जिसका पूँजीवाद लगातार विनाश करता रहता है। साथ ही इन नाटकों में गोर्की साहित्य के रंगमंच पर पहली बार इतिहास के नये नायक-सर्वहारा वर्ग को ला उपस्थित करते हैं। दूसरी श्रेणी *'दि समर पीपुल'*, *'चिल्ड्रेन ऑफ दि सन'* और *'दि बारबेरियंस'* की है। इन नाटकों में गोर्की बुद्धिजीवी वर्ग के फिलिस्टाइनवाद और जनविमुख आत्मकेन्द्रण को प्रहार का निशाना बनाते हैं और संस्कृति के निर्माताओं से सकर्मक जनपक्षधरता का आग्रह करते हैं। तीसरी श्रेणी में *'एनिमीज'* नाटक आता है जो सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक चेतना और राजनीतिक संघर्ष के विकास को अपनी विषय-वस्तु बनाता है। चौथी श्रेणी में गोर्की के चौथे दशक में प्रकाशित नाटक आते हैं जिनमें वे पूँजी और श्रम के शिविरों के बीच जारी ऐतिहासिक वर्ग-महासमर की व्यापक पृष्ठभूमि में अपने पात्रों को ला खड़ा करते हैं और पूँजीवाद की पराजय और समाजवाद की विजय के प्रति अपनी अविचल आस्था प्रदर्शित करते हैं।

गोर्की के कालजयी उपन्यासों की ही तरह उनके नाटक भी दुनिया की महान साहित्य-सम्पदा की अमूल्य धरोहर में शामिल हैं। एक नाटककार के रूप में गोर्की की प्रयोगधर्मिता और सफलता उतनी ही असंदिग्ध है, जितनी कि एक उपन्यासकार और एक कहानीकार के रूप में। यह एक दीगर बात है कि उनके इस रूप से आम पाठकों का परिचय अपेक्षाकृत कम है। उनके इस पक्ष पर चर्चा भी अपेक्षाकृत कम ही हुई है, यही शायद इसका मुख्य कारण है।

कात्यायनी

पात्र

ज़ख़ार बार्दिन, उम्र पैंतालिस साल।
पोलीना, उसकी पत्नी, उम्र क़रीब चालीस साल।
याकोव बार्दिन, उम्र चालीस साल।
तत्याना, उसकी पत्नी, उम्र अट्ठाईस साल, अभिनेत्री।
नाद्या, पोलीना की भानजी, उम्र अठारह साल।
पेचेनेगोव, अवकाशप्राप्त जनरल, ज़ख़ार बार्दिन और याकोव बार्दिन का मामा।
मिख़ाईल स्क्रोबोतोव, उम्र चालीस साल, एक व्यापारी, ज़ख़ार बार्दिन और याकोव बार्दिन का हिस्सेदार।
क्लेओपात्रा, उसकी पत्नी, उम्र तीस साल।
निकोलाई स्क्रोबोतोव, मिख़ाईल स्क्रोबोतोव का भाई, उम्र पैंतीस साल, सरकारी वकील।
सिन्त्सोव, क्लर्क।
पोलोगी, क्लर्क।
कोन, सेवानिवृत्त फौजी।
ग्रेकोव,
लेव्शिन,
यागोदिन
र्याब्त्सोव
अकीमोव — कामगार
अग्राफेना, घर की देख-भाल करने वाली नौकरानी।
बोबोयेदोव, फ़ौजी पुलिस का कप्तान।
क्वाच, सार्जेन्ट।
फ़ौजी लेफ़्टीनेन्ट।
थानेदार।
पुलिसमैन।
फ़ौजी पुलिसवाले, फ़ौजी, कामगार, क्लर्क और नौकर-चाकर।

पहला अंक

(पुराने और बड़े-बड़े लाइम वृक्षों से आच्छादित बगीचा। बगीचे के बीचोंबीच सैनिकों का एक सफेद तम्बू। दायीं ओर वृक्षों के नीचे एक चबूतरा बना हुआ है और उसके सामने एक मेज है। बायीं ओर के वृक्षों के नीचे नाश्ते की लम्बी मेज लगी है। एक छोटे से समोवार में पानी उबल रहा है। मेज के चारों ओर बेंत की कुर्सियाँ और आरामकुर्सियाँ रखी हैं। अग्राफेना कॉफी तैयार कर रही हैं। एक वृक्ष के नीचे खड़ा और पाइप पीता हुआ कोन पोलोगी से बातें कर रहा है।)

पोलोगी (भद्दे और अटपटे संकेत करते हुए) : बेशक, बेशक, तुम मुझसे बेहतर जानते हो। मेरी क्या पूछ है? बहुत ही तुच्छ प्राणी हूँ मैं तो! मगर हर खीरा मैंने अपने हाथों से उगाया हैं। और अगर मेरी इजाजत के बिना कोई उसे चुराता है, तो उसे इसका जवाब देना ही होगा।

कोन (क्षुब्ध भाव से) : तुमसे कोई इजाज़त नहीं लेगा।

पोलोगी (हाथ छाती पर रखते हुए) : मगर सुनो! अगर कोई तुम्हारा माल चुरा लेता है, तो तुम्हें क़ानून की शरण में जाने का अधिकार तो प्राप्त है न?

कोन : हाँ, हाँ, जाओ क़ानून की शरण में–तुम्हें मना ही कौन करता है! आज वे तुम्हारे खीरे ले गये, कल सिर ले जायेंगे... तुम बैठे रोते रहना कानून को!

पोलोगी : यह तो तुमने अजीब बात कही... अजीब ही नहीं, खतरनाक भी! तुम एक पुराने फ़ौजी हो, सम्मान-पदक लगाये हो और फिर तुम ही कानून की इस तरह खिल्ली उड़ाते हो!

कोन : दुनिया में कानून नाम की कोई चीज नहीं है। है तो सिर्फ हुक्म ही हुक्म। "बायें मुड़ो! आगे बढ़ो!" और बस, तुम चल देते हो! फिर जब हुक्म मिलता है– "रुक जाओ!" तो तुम रुक जाते हो।

अग्राफेना : कोन! अच्छा हो, अगर तुम यह पाइप पीना बन्द कर दो। इसके धुएँ से पत्ते बुरी तरह मुरझा जाते हैं...

पोलोगी : अगर उन लोगों ने खीरे इसलिए चुराये कि वे भूखे थे, तब तो मैं उन्हें माफ़ भी कर सकता हूँ... भूख इनसान को बड़े-बड़े पाप करने के लिए मजबूर कर सकती है यह कहना भी ग़लत न होगा कि बहुत सी नीचताओं की जड़ में, बहुत-से जुर्मों की तह में यही पेट की आग होती है। इनसान जब भूखा है, तब तो खैर...

कोन : देवता लोग तो भूख की इस मुसीबत से आज़ाद है। फिर भी शैतान को चैन न पड़ा। उसने भगवान के खिलाफ अपना झण्डा खड़ा कर दिया था...

पोलोगी (खुश होकर): इसे तो मैं सिर्फ शरारत करना ही कहूँगा!

(याकोव बार्दिन प्रवेश करता है। वह धीरे-धीरे बोल रहा है, मानो अपने ही शब्द सुन रहा हो। पोलोगी झुककर प्रणाम करता है। कोन लापरवाही से फ़ौजी सलामी देता है)

याकोव : हलो! यहाँ खड़े क्या कर रहे हो?

पोलोगी : ज़खार इवानोविच के पास एक मामूली-सी प्रार्थना लेकर आया हूँ..

अग्राफ़ेना : प्रार्थना-वार्थना कुछ नहीं, यह शिकायत करने आया है। पिछली रात कारखाने के कुछ लोगों ने इसके खीरे चुरा लिये हैं।

याकोव : अरे... यह तो तुम्हें मेरे भाई को जरूर बताना चाहिए...

पोलोगी: आपने ठीक फ़रमाया... मैं उन्हीं के पास जा रहा हूँ।

कोन (चिढ़ते हुए) : मुझे तुम कहीं जाते वाते नज़र नहीं आते। यहीं खड़े बड़बड़ाये जा रहे हो।

पोलोगी : बड़बड़ा रहा हूँ, तो तुम्हारा क्या ले रहा हूँ या कुछ ले रहा हूँ? अगर तुम कोई अखबार वग़ैरह पढ़ते होते, तब भी कोई बात थी। तब भी तुम कह सकते थे कि मैं तुम्हें परेशान कर रहा हूँ।

याकोव : कोन, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ...

कोन (याकोव की तरफ़ जाते हुए) : पोलोगी, तुम लालची कुत्ते हो... झगड़ालू और क़ानून के साले हो!

पोलोगी : बस, बस, अपनी ज़बान गन्दी मत करो... शिकायतें करने के लिए ही तो यह ज़बान मिली है...

अग्राफ़ेना: चुप रहो, चुप रहो, पोलोगी... तुम मानो आदमी नहीं, मच्छर हो.

याकोव (कोन से) : यह यहाँ खड़ा-खड़ा क्या कर रहा है? जाता क्यों नहीं?

पोलोगी (अग्राफ़ेना से): अगर मेरी बातें तुम्हारे कानों को परेशान करती हैं, दिल को नहीं छूतीं, तो मैं अब चुप रहा करूँगा। (वह वृक्षों को छूता हुआ धीरे-धीरे बाहर चला जाता है)

याकोव (व्यग्रता से) : हाँ तो, कोन! .. लगता है, कल फिर मैंने किसी के दिल को ठेस पहुँचायी है।

कोन (मुस्कराकर) : लगता तो ऐसा ही है।

याकोव (इधर-उधर टहलते हुए): हुँ... बड़ी अजीब बात है! जब मुझे चढ़ी होती है, तभी मैं लोगों से गुस्ताखी की बातें क्यों करता हूँ?

कोन : ऐसा भी होता है। कभी-कभी लोग पीकर बेहतर इनसान बन जाते हैं। बिना पिये

उनमें वह बात नहीं आती, शराब की तरंग में वे बड़े दिलेर हो जाते हैं–किसी से भी डरते-दबते नहीं हैं। दूसरों की बात तो एक तरफ़, अपने को भी माफ़ नहीं करते... हमारी कम्पनी में एक छोटा अफ़सर होता था। वह जब बिन पिये होता, तो बेकार बक-बक करता, अफ़सरों के पास हमारी चुगलियाँ खाता और लोगों से लड़ाई-झगड़ा मोल लेता फिरता। लेकिन जब पी लेता, तो एक भोले-भाले बच्चे की तरह चिल्लाता–"भाइयो! मैं भी तुम्हारे जैसा इनसान हूँ। मुझ पर थूको, मेरे मुँह पर थूको, भाइयो!" और कुछ लोग सचमुच उसके मुँह पर थूकते भी।

याकोव : उफ़... भला मुझे क्या लेना-देना था

कोन : सरकारी वकील की। आपने उसे ख़रदिमाग़ और गधा कहा था। फिर आपने उससे यह भी कहा था कि डायरेक्टर की बीवी के बहुत से यार हैं।

याकोव : उफ़.. भला मुझे क्या लेना-देना था इस बात से?

कोन : बिल्कुल ठीक। और फिर...

याकोव : बस, बस कोन! इतना ही काफ़ी है... नहीं तो पता चलेगा कि मैंने सभी को कुछ खोटी खरी कह दी है... बुरा हो कमबख़्त वोद्का का। यह उसी की मेहरबानी है..

(मेज़ के पास जाकर बोतलों को घूरता है। फिर एक बड़े गिलास में शराब डालकर धीरे-धीरे पीता है)

(अग्राफ़ेना उसे कनखियों से देखती हुई आह भरती है)

तुम्हें मेरे लिए कुछ अफ़सोस होता है न?

अग्राफ़ेना : अफ़सोस ही नहीं होता, रहम भी आता है... आप सभी के साथ बड़ी सरलता से, बड़ा सीधा-सादा बर्ताव करते हैं। कुलीन लोगों जैसी अकड़ तो आपको छू ही नहीं गयी...

याकोव : मगर इस कोन को तो किसी पर रहम नहीं आता, यह तो बस फ़लसफ़ा छाँटा करता है। बुरे दिनों के काफ़ी झटके लगने के बाद ही इनसान की अक़्ल ठिकाने आती है। क्यों, ठीक है न, कोन?

(तम्बू में से जनरल चिल्लाता है–"ए कोन!")

मेरे ख़्याल में तुम ज़माने के हाथों काफ़ी सताये गये हो, इसीलिए इतने समझदार हो गये हो।

कोन (जाते हुए) : मेरी अक़्ल गुम करने के लिए जनरल साहब के दर्शन ही काफ़ी हैं.

जनरल (तम्बू से बाहर आकर) : कोन, चलो नदी की तरफ़! जल्दी से!

(वे बगीचे में ग़ायब हो जाते हैं)

याकोव (कुर्सी पर आगे-पीछे झूलते हुए) : क्या मेरी बीवी अभी तक सो रही है?

अग्राफ़ेना : नहीं, वह तो जाग गयीं, नदी में तैर आयी हैं।

याकोव : तो तुम्हें मुझ पर रहम आता है, ठीक है न?

अग्राफ़ेना : आपको अपना इलाज करवाना चाहिए।

याकोव : अच्छा, ब्रांडी के दो घूंट तो डाल दो।

अग्राफ़ेना : याकोव इवानोविच, शायद आप नहीं पियेंगे?

याकोव : क्यों नहीं? एक बार न पीने से तो मेरा कुछ भला होने से रहा।

(अग्राफ़ेना निःश्वास छोड़ते हुए ब्रांडी का गिलास भर देती है। मिखाईल स्क्रोबोतोव गुस्से में और चिढ़ा हुआ सा अन्दर आता है। वह घबराया-घबराया सा अपनी नुकीली काली दाढ़ी खींचता है और हाथ में पकड़े हुए अपने टोप को मसोसता है)

मिख़ाईल : ज़ख़ार इवानोविच जाग गये? अभी नहीं? सो तो ज़ाहिर ही होना चाहिए है! अच्छा तो लाओ... कुछ ठण्डा दूध है क्या? धन्यवाद। नमस्ते, याकोव इवानोविच! ... नयी ख़बर सुनी?... वे शैतान के चरख़े अब इस बात पर अड़े हुए हैं कि मैं फ़ोरमैन दिच्कोव को निकाल दूँ! ... वे धमकी देते हैं कि मेरे ऐसा न करने पर काम बन्द कर देंगे... बेड़ा गर्क हो इन शैतानों का...

याकोव : तो फिर सोच क्या रहे हैं? निकाल दीजिये उसे।

मिख़ाईल : यह तो बड़ी आसान बात है। पर दर असल बात यह नहीं है! बात यह है कि इस तरह उनकी धमकियों के सामने सिर झुकाने से वे और भी सिर पर चढ़ जायेंगे। आज वे इस बात की माँग करते हैं कि मैं फोरमैन को निकाल दूँ, तो कल यह माँग करेंगे कि उनके मनबहलाव के लिए मैं खुद फाँसी के फंदे से झूल जाऊँ...

याकोव (धीरे-धीरे) : आप क्या समझते हैं कि वे उस कल का इन्तजार करेंगे?

मिख़ाईल : आप तो मज़ाक में बात उड़ा रहे हैं!

ज़रा वास्ता तो डालकर देखिये इन शरीफ़ज़ादों से–पूरी फ़ौज की फ़ौज है! हज़ार के क़रीब! और फिर इनके दिमाग़ भी तो ठिकाने नहीं रहे। सभी तरह के लोगों ने इनके दिमाग़ बिगाड़ने में मदद दी है। उनमें आपके उदारमना भाई साहब भी शामिल हैं और वे घनचक्कर भी, जो उन्हें भड़काने के लिए इश्तिहार लिखते हैं... **(अपनी घड़ी पर नज़र डालता है)** दस बजनेवाले हैं। वे लोग दोपहर के खाने के बाद अपना तमाशा शुरू कर देंगे... याकोव

इवानोविच, हक़ीकत तो यह है कि मेरा छुट्टी पर जाना बहुत बुरा साबित हुआ है। आपके भाई ने तो सब कुछ चौपट कर डाला है... उन्होंने अपनी ढीली-ढीली नीति से मज़दूरों को बिल्कुल ही बिगाड़ दिया है...

(दायीं ओर वे सिन्त्सोव आता है। उसकी उम्र लगभग तीस साल है उसका चेहरा और व्यक्तित्व बड़ा शान्त और प्रभावशाली है)

सिन्त्सोव : मिख़ाईल वसील्येविच, दफ़्तर में मज़दूरों के कुछ प्रतिनिधि आये हैं। वे कारख़ाने के मालिक से मिलने की माँग कर रहे हैं।

मिख़ाईल : माँग कर रहे हैं? मेहरबानी करके उन्हें जहन्नुम का रास्ता दिखा दीजिये!

(बायीं ओर से पोलीना आती है)

माफ़ कीजियेगा, पोलीना दुमीत्रियेव्ना!

पोलीना (कृपालुता से) : डाँटने-डपटने की तो आपको आदत ही है। इस वक़्त इसकी क्या ज़रूरत आ पड़ी?

मिख़ाईल : ये सर्वहारा ही कोई न कोई मुसीबत खड़ी किये रहते हैं!... अब वे माँग करते हैं!... पहले हाथ जोड़कर प्रार्थना करते थे...

पोलीना : मुझे यह तो कहना ही होगा कि आप लोगों के साथ काफ़ी सख्ती से पेश आते हैं!

मिख़ाईल (निराशा से हाथ झटकते हुए) : यह हुई न बात!

सिन्त्सोव : प्रतिनिधियों से क्या कहूँ?

मिख़ाईल : कहना क्या है, इन्तजार करने दीजिये... आप जाइये!

(सिन्त्सोव धीरे-धीरे बाहर जाता है)

पोलीना : इस आदमी की शक्ल-सूरत काफ़ी अच्छी है। क्या बहुत दिनों से हमारे यहाँ काम कर रहा है?

मिख़ाईल : लगभग एक बरस से..

पोलीना : देखने में तो ढंग का आदमी लगता है कौन है यह?

मिख़ाईल (कंधे झटककर) : चालीस रूबल मासिक पाता है। **(घड़ी पर नजर डालता है, आह भरता है और इधर-उधर देखता है। वृक्ष के नीचे खड़े हुए पोलोगी पर नज़र आ पड़ती है)** तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मुझसे कुछ काम है क्या?

पोलोगी : नहीं, मिखाईल वसील्येविच। मैं तो ज़खार इवानोविच से मिलने आया हूँ...

मिख़ाईल : क्या काम है?

पोलोगी : सम्पत्ति-अधिकारों के उल्लंघन से सम्बन्धित कुछ काम है...

मिख़ाईल (पोलीना से) : यह अभी कुछ समय से ही हमारे यहाँ नौकर हुआ हैं इसे बाग़बानी का शौक़ और इस बात का पक्का विश्वास है कि तमाम दुनिया ने इसके ख़िलाफ साजिश कर रखी है। हर चीज से इसे चिढ़ महसूस होती है- सूरज से, इंग्लैण्ड से, नयी मशीनों से, मेंढकों से...

पोलोगी (मुस्कराते हुए) : माफ़ कीजियेगा, मेंढकों की टर्र-टर्र से तो सभी के नाक में दम हो जाता है...

मिखाईलः जाइये, जाइये, दफ़्तर में जाइये! यह क्या बुरी आदत है आपको – काम-काज बीच में ही छोड़कर चले आते हैं शिकायत करने? मैं यह बर्दाश्त नहीं करूँगा.. जाइये!

(पोलोगी झुककर प्रणाम करता है और बाहर चला जाता है। पोलीना मुस्कराते हुए उसे लोर्नेट्ट* से देखती है)।

पोलीना : बहुत ही सख़्ती से पेश आते हैं आप तो! खासा मज़ेदार आदमी है... विदेशों की तुलना में रूस के लोग अधिक रंगीन हैं।

मिख़ाईल : अगर आप बेहूदा कहतीं, तो मैं आपकी बात मान लेता। पन्द्रह बरस से मैं घास नहीं काट रहा हूँ- रात-दिन इन्हीं लोगों से निपट रहा हूँ... अब मैं इनकी रग-रग पहचानता हूँ। ढोंगी पादरी लेखकों ने दयालु रूसी जनता को जैसे रंग में प्रस्तुत किया है, मैं अब उसका असली रूप अच्छी तरह से समझता हूँ।

पोलीना : पादरी-लेखकों ने?

मिख़ाईल : हाँ, हाँ, यही आपके चेर्निशेव्स्की, दोब्रोल्यूबोव, ज्लातोव्रात्स्की, उस्पेन्स्की वग़ैरह ने... **(घड़ी पर नज़र डालता है)** ज़खार इवानोविच तो बहुत ही देर लगा रहे हैं!

पोलीना : जानते हैं, उन्हें क्यों देर हो रही है? आपके भाई के साथ पिछली रात की शतरंज की बाज़ी खत्म कर रहे हैं।

मिख़ाईल : और उधर वे लोग दोपहर के खाने के बाद काम बन्द करने की धमकी दे रहे हैं... मेरी बात को पत्थर की लकीर मानिये- इस रूस का कभी कुछ नहीं बन सकेगा! सदा यही बेढंगी चाल रहेगी। यह तो गड़बड़-घुटाले का देश है! काम करते तो लोगों को जैसे मौत आती है, यह तो इनके खून में ही नहीं है। और अनुशासन नाम की कोई चीज ये जानते ही नहीं...कानून को अँगूठा दिखाते हैं.

पोलीना : मगर ऐसा होना तो स्वाभाविक ही है! जिस देश में कोई क़ानून ही न हो, वहाँ कानून की इज्जत ही क्या हो सकती है? यह हमारी आपस की बात है, हमारी सरकार..

मिख़ाईल : ओह, मैं किसी की सफ़ाई नहीं दे रहा हूँ! सरकार की भी नहीं! मिसाल के

---

* **लोर्नेट्ट**–एक कम्पनी की चश्मा। –अनु.

लिए अंग्रेजों को ले लीजिये...

(ज़खार बार्दिन और निकोलाई स्क्रोबोतोव अन्दर आते हैं)

किसी देश को बनाने के लिए इससे अच्छा मसाला किसी दूसरी जगह नहीं मिल सकता। अंग्रेज़ लोग सरकस के घोड़ों की तरह कानून के इशारों पर नाचते हैं कानून तो उनकी नस-नस में, उनकी हड्डियों में रच-रम गया है... नमस्ते, ज़खार इवानोविच! हलो, निकोलाई! आपकी उदार नीति ने जो नया गुल खिलाया है, मैं उसी के बारे में आपको बताने आया हूँ। मजदूर इस बात की माँग कर रहे हैं कि मैं फ़ोरमैन दिच्कोव को निकाल दूँ। मेरे ऐसा न करने पर वे दोपहर के खाने के बाद हड़ताल करने की धमकी दे रहे हैं... क्यों, कैसी रही?

ज़खार (माथे पर हाथ फेरते हुए) : हुँ... दिच्कोव?.. यह वही है न, जो हर वक़्त घूंसे ताने रहता है और लड़कियों के पीछे चक्कर काटा करता है? ... उसे तो निकाल ही देना चाहिए! यह तो इन्साफ़ की बात है।

मिख़ाईल (बिगड़ते हुए) : हे भगवान! आदरणीय हिस्सेदार, आप कभी संजीदा भी हो पाते हैं! यह सवाल इन्साफ़ का नहीं, कारोबार का है। न्याय-अन्याय के फ़ैसले निकालाई को करने दीजिये। मैं यह दोहराये बिना नहीं रह सकता कि न्याय का जो मतलब आप समझते हैं, वह व्यापार के लिए घातक है।

ज़खार : मगर यह हो ही कैसे सकता है? ये तो आत्म-विरोधी बातें हैं!

पोलीना : मेरे होते हुए भी आप लोग व्यापार का रोना ले बैठे... और सो भी सवेरे-सवेरे...

मिख़ाईल : माफ़ कीजियेगा, मगर मैं मजबूर हूँ... मामला एक किनारे होना चाहिए। छुट्टी पर जाने से पहले कारखाना इस तरह मेरी मुट्ठी में था। **(मुट्ठी भींचता है)** क्या मजाल किसी की, जो चूँ तक भी कर जाता! इतवार के दिन मनोरंजन होना चाहिए, पढ़ना-पढ़ाना होना चाहिए-आप जानते ही हैं कि मैं कभी इन चीज़ों के हक़ में नहीं था। आज के हमारे हालात में मैं उन्हें बेकार समझता हूँ.. ज्ञान की ज्योति के रूसी लोगों के मन रोशन नहीं होते-हाँ, वे सुलगने लगते हैं, धुआँ छोड़ने लगते हैं...

निकालाई : हमेशा शान्ति से बातचीत करनी चाहिए।

मिख़ाईल (मुश्किल से अपने पर क़ाबू पाते हुए) : नेक सलाह के लिए शुक्रिया। नसीहत तो तुम्हारी अच्छी है, मगर दुर्भाग्य से मैं इस पर अमल नहीं कर सकता! ज़खार इवानोविच, जिस मजबूत ढाँचे कि निर्माण में मैंने आठ बरस लगाये, आपकी छः महीने की ढीली-ढाली नीति से उसकी नींव हिलाकर रख दी। वे मुझे सिर-आँखों पर बिठाते थे, मुझे अपना मालिक समझते थे... अब तो बात ही दूसरी है, एक नहीं, दो मालिक हैं-एक अच्छा, एक बुरा। आप तो खैर अच्छे हैं ही....

ज़खार (सहमते हुए) : मगर... सुनिये न... आप किसलिए ऐसा कह रहे हैं?

पोलीना : यह आपने बड़ी अजीब बात कही मिख़ाईल वसील्येविच।

मिख़ाईल : मैं ऐसा कहने के लिए मजबूर हो गया हूँ... मेरी स्थिति बहुत ही अटपटी हो गयी है! पिछली बार जब यही सवाल उठा, तो मैंने मज़दूरों से साफ़-साफ़ कह दिया था कि मैं कारखाना बन्द करना बेहतर समझूँगा, मगर दिच्कोव को काम से नहीं हटाऊँगा.. उन्होंने मेरे तेवर देखे, तो घुटने टेक दिये। अब शुक्र के दिन, जखार इवानोविच, आपने मजदूर ग्रेकोव से ये कह दिया कि दिच्कोव बड़ा अक्खड़ और बेहूदा आदमी है, और यह कि आप उसे कारखाने से निकाल देना चाहते हैं...

ज़खार (समझाते हुए) : मगर, मेरे भाई, वह भी तो लोगों के नाक में दम किये रहता है, आपको मानना होगा कि यह सब बर्दाश्त नहीं किया जा सकता! हम यूरोपियन हैं, सभ्य लोग हैं!

मिख़ाईल : मगर सबसे पहले हम कारखानेदार हैं! हर छुट्टी के दिन मज़दूर एक दूसरे का मुँह तोड़ते हैं-हमारी बला से! इन मज़दूरों को अच्छे तौर-तरीके, अच्छे सलीके सिखाने का काम आप बाद में कीजियेगा। इस वक्त उनके प्रतिनिधि दफ्तर मे बैठे हुए हैं-वे दिच्कोव को निकाल बाहर करने की माँग करेंगे। आपका क्या करने का इरादा है?

ज़खार : आप क्या समझते हैं कि दिच्कोव के बिना हमारा काम नहीं चल सकेगा?

निकोलाई (रूखे ढंग से) : मेरे ख्याल में यह सवाल सिर्फ दिच्कोव का नहीं, उसूल का है।

मिख़ाईल : बिल्कुल! सवाल यह है कि कारखाने का मालिक कौन है-हम लोग या मज़दूर?

जख़ार (भौचक्का-सा) : यह तो मैं समझता हूँ! मगर...

मिख़ाईल : अगर हम इस बार झुक गये, तो कल वे किस बात की माँग करेंगे, भगवान ही जानता है। ये बड़े बेहया लोग हैं। पिछले छः महीनों से इतवार के दिन जो स्कूल लगाये जा रहे हैं और दूसरे काम हो रहे हैं, अब वे अपने रंग दिखाने लगे हैं-मुझे तो वे भूखे भेड़ियों की तरह घूरते हैं, इधर-उधर कुछ इश्तिहार भी दिखाई दे रहे हैं... इनसे समाजवाद की बू आती है.. हाँ!

पोलीना : हमारी इस दूर-दराज की जगह में... समाजवाद... यह बड़ी दिलचस्प बात है।

मिख़ाईल : सच? श्रीमती पोलीना दमीत्रियेव्ना, बच्चे जब तक बच्चे होते हैं, बड़े दिलचस्प

लगते हैं। मगर धीरे-धीरे वे बड़े होते रहते हैं और फिर एक दिन अच्छे -खासे शैतान के चरखे बनकर सामने आ खड़े होते हैं...

जखार : आप क्या करना चाहते हैं?

मिख़ाईल : कारखाना बन्द करना चाहता हूँ। कुछ दिन इन्हें भूखे रहने दीजिये, फिर ये अपने आप ठण्डे पड़े जायेंगे।

(याकोव उठता है, मेज के पास जाकर कुछ शराब पीता है और फिर धीरे-धीरे वहाँ से चला जाता है)

जैसे ही हम कारखाना बन्द करेंगे कि औरतें सामने आ जायेंगी... वे रोना-धोना शुरू करेंगी। उनके आँसुओं की धारा में इन लोगों के सपने भी बह जायेंगे–देखते ही देखते इनके होश ठिकाने आ जायेंगे!...

पोलीना : यह तो बड़ी बेरहमी होगी!

मिख़ाईल : जिन्दगी में यह सब करना ही पड़ता है।

ज़खार : मगर... देखिये न... ऐसा कड़ा कदम... क्या ऐसा कड़ा कदम उठाना लाजिमी है?

मिखाईल : आप कोई दूसरा रास्ता सुझा सकते हैं?

जखार : अगर मैं जाकर उनसे बातचीत करूँ, तो कैसा रहे?

मिख़ाईल : आप तो जरूर उनके सामने झुक जायेंगे और तब मेरा बिल्कुल कोई मुँह न रह जायेगा... आपकी ढुलमुल नीति को, क्षमा कीजिये, मैं सरासर अपनी बेइज्जती समझता हूँ! उससे जो घपला होता है, उसकी तो खैर चर्चा ही बेकार है...

जख़ार (जल्दी से) : मगर, मेरे दोस्त मैं आपकी बात का विरोध थोड़े ही कर रहा हूँ, मैं तो सिर्फ़ सोच-विचार कर रहा हूँ। आप जानते हैं कि मैं उद्योगपति होने के बजाय जमींदार अधिक हूँ... मेरे लिए ये सभी बातें नयी और उलझी-उलझायी हैं... मैं तो यह चाहता हूँ कि जैसे भी हो सके, इन्साफ़ से काम लिया जाये... मज़दूरों की अपेक्षा किसान अधिक भले स्वभाव के और नम्र होते हैं... उनके साथ मेरी खूब पटती है! मज़दूरों में भी कुछ दिलचस्प लोग हैं, मगर कुल मिलाकर आपकी बात सही है। ये लोग कुछ ज्यादा ही मनमानी करते हैं...

मिख़ाईल : खास तौर पर तब से जब से आपने इन्हें सब्ज़ बाग़ दिखाने शुरू किये हैं. ..

ज़ख़ार : बात यह है कि जैसे ही आप गये, मैं इनमें कुछ बेचैनी महसूस करने लगा. .. कुछ गड़बड़ी भी हुई... हो सकता है कि मैंने असावधानी से काम लिया हो... मगर जैसे-तैसे उन्हें शान्त तो करना ही था। अखबारों में हमें खरी-खोटी सुनायी गयी... हमारी खूब ही खबर ली गयी...

मिखाईल (बेचैनी से) : इस वक्त दस बजकर सत्रह मिनट हुए हैं। हमें जरूर कोई फैसला कर लेना चाहिए- या तो कारखाना बन्द किया जाये या फिर मैं इससे अलग हो जाता हूँ। कारखाना बन्द करने से हमारा कोई नुक़सान नहीं होगा- मैंने सभी आवश्यक प्रबन्ध कर लिये हैं। जल्दी के आर्डरों का सब माल तैयार है और गोदामों में और भी काफी माल जमा है...

ज़खार : हुँह। तो फ़ौरन ही इसका फैसला होना चाहिए... ओह, हाँ, होना ही चाहिए! आपका क्या ख्याल है, **निकोलाई** वसील्येविच?

निकोलाई : मेरे ख़्याल में तो मेरे भाई की बात ठीक है। अगर हम सभ्यता को महत्व देते हैं, तो हमें बड़ी कड़ाई से कुछ सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए।

ज़खार : मतलब यह कि आप भी कारखाना बन्द करने के हक़ में हैं? बड़े दुख की बात है! प्यारे मिखाईल वसील्येविच, मुझसे नाराज मत होइये... मैं कोई... दस मिनट में आपको अपना जवाब दे दूँगा! ठीक है?

मिख़ाईल : ठीक है!

जखार: पोलीना, जरा चलो तो मेरे साथ...

पोलीना (अपने पति के पीछे जाती हुई) : हे भगवान! यह सब क्या मुसीबत है!

ज़खार : सदियों से लम्बे अरसे में किसान लोग कुलीनों की इज्जत करना सीख गये हैं- यह चीज उनकी जिन्दगी का हिस्सा बन गयी है...

(ये दोनों बाहर जाते हैं)

मिख़ाईल (दाँत भींचकर) : बुज़दिल! दक्षिण के किसानों की मार-काट के बाद भी वह यह बात कहता है! उल्लू न हो तो कहीं का!

निकालाई : जरा गुस्से पर काबू पाओ, मिख़ाईल! तुम इस तरह आपे से बाहर क्यों हो रहे हो?

मिख़ाईल : मेरे तो तन-बदन में आग लगी हुई है! मैं कारखाने में जा रहा हूँ और यह अपने साथ लेकर! **(जेब से पिस्तौल निकालता है)** वे लोग अब मुझसे नफ़रत करते हैं- यह इसी पाजी की मेहरबानी है! मगर मैं कारखाने से नाता भी तो नहीं तोड़ सकता। अगर मैं ऐसा करूँ, तो तुम्हीं सबसे पहले मुझे दोषी ठहराओगे। हमारी सारी पूँजी कारखाने में लगी हुई है। अगर मैं किनारा कर लेता हूँ, तो यह गंजा सब कुछ मटियामेट कर डालेगा।

निकोलाई (शान्ति से) : अगर तुम बढ़ा-चढ़ा नहीं रहे, तब तो यह सचमुच ही बहुत बुरी

बात है।

सिन्त्सोव (प्रवेश करते हुए) : मज़दूर आपसे आने का अनुरोध कर रहे हैं..

मिखाईल : मुझसे? क्या चाहते हैं?

सिन्त्सोव : अफ़वाह फैली हुई है कि दोपहर के खाने के बाद कारखाना बन्द कर दिया जायेगा।

मिख़ाईल (अपने भाई से) : सुना तुमने? उन्हें यह कैसे मालूम हुआ?

निकोलाई : शायद याकोव इवानाविच ने बताया होगा।

मिखाईल : क्या मुसीबत है! **(वह चिढ़कर सिन्त्सोव की ओर देखता है। अपना गुस्सा दबा नहीं पाता)** आप इतने परेशान क्यों है, मिस्टर सिन्त्सोव? आपको क्या पड़ी है? यहाँ आते हैं, पूछताछ करते हैं... क्यों?

सिन्त्सोव : मुझे तो मुनीम ने आपके पास भेजा है।

मिख़ाईल : अच्छा? आपको तिरछी नजर से देखने और दाँत निपोरने की यह बुरी आदत क्यों है? आपकी बाछें किसलिए खिल रही हैं?..

सिन्त्सोव : मेरे ख्याल में यह मेरा जाती मामला है।

मिखाईल : मैं यह नहीं मानता... देखिये, अब फिर कभी ऐसा मत कीजिये, मेरे साथ अधिक सम्मान से व्यवहार कीजिये... सुना आपने?

(सिन्त्सोव उसे घूरता है)

अब खड़े किसलिए हैं?

तत्याना (दायीं ओर से आती है) : ओह, डायरेक्टर साहब... जल्दी में हैं? **(सिन्त्सोव को सम्बोधित करते हुए)** हलो, मात्वेई निकोलायेविच!

सिन्त्सोव (स्नेहपूर्वक) : नमस्ते! कहिये, कैसा हाल-चाल है? थक गयी हैं न?

तत्याना: नहीं, ज़रा भी नहीं। डांड चला चलाकर बाँहें जरूर कुछ थक गयी हैं... दफ्तर की तरफ़ जा रहे हैं? चलिये, मैं फाटक तक आपके साथ चलती हूँ। जानते हैं, मैं आपसे क्या कहना चाहती हूँ?

सिन्त्सोव : जाहिर है, नहीं जानता हूँ।

तत्याना (सिन्त्सोव के साथ-साथ जाते हुए) : कल आपने बहुत सी समझदारी की बातें की थी। मगर आप बहुत भावुक हो गये थे और दूसरे आप अपने लक्ष्य को निशाना बना बनाकर तीर चलाते थे... कुछ मामलों में जितना कम भावुक होकर बात की जाती है, प्रभाव उतना ही अधिक पड़ता है... **(उनकी बातचीत सुनाई नहीं देती)**

मिख़ाईल : क्यों, कैसी रही? गुस्ताखी करने के लिए अभी-अभी मैंने जिस कर्मचारी को झाड़ा-फटकारा, वही मेरे सामने याकोव की बीवी से घुल मिलकर बातें कर रहा है... वह शराबी है और यह अभिनेत्री... शैतान ही जानता है कि ये लोग यहाँ आये क्यों!

निकोलाई : यह भी अजीब औरत है। खूबसूरत है, बनी-ठनी रहती है, मन को लुभाती भी है- और फिरभी ऐसा लगता है कि उस दो टके के आदमी से इश्क करती है। इश्क तो निराला है, मगर बेवकूफी से भरा हुआ।

मिख़ाईल (व्यंग्य से) : इसे ही तो कहते हैं उदारतावादी होना। वह गाँव-गँवई की किसी अध्यापिका की बेटी है। कहती है कि साधारण लोगों की ओर वह बरबस खिंच जाती है... बेड़ा गर्क हो इनका! काश मैंने इन जमींदारों से वास्ता ही न डाला होता!...

निकोलाई : मेरे ख्याल में तो तुम्हें शिकायत नहीं करनी चाहिए। इस कारोबार में चलती तो तुम्हारी ही है।

मिख़ाईल : अभी तक नहीं, मगर चलेगी ज़रूर!...

निकोलाई : मेरा ख्याल है कि इस औरत पर बहुत जल्दी डोरे डाले जा सकते हैं... बड़ी गर्म तबीयत की लगती है।

मिखाईल : वह हमारा उदार महानुभाव-वह क्या जाकर सो रहा? नहीं, नहीं, मैं तुम्हें कहे देता हूँ, यह रूस हमेशा ऐसे ही रहेगा, कभी किसी किनारे नहीं लग सकेगा!... यहाँ सभी लोग दिवास्वप्न देखा करते हैं, बांवरे-बांवरे से, बहके-बहके से इधर-उधर घूमा करते हैं, जिन्दगी में किसको क्या करना है, कोई भी तो यह नहीं जानता... जहाँ तक सरकार का सम्बन्ध है, वह तो सिरफिरों की भीड़ है... जले-भुने और मूर्ख लोग हैं वे। न तो कुछ समझते हैं, न ही कुछ करना-धरना जानते हैं...

तत्याना (लौटकर) : चिल्ला रहे हैं? न जाने क्यों यहाँ सभी लोग चिल्लाने लगते हैं..

अग्राफेना : मिखाईल वसील्येविच, जखार इवानोविच आपको याद कर रहे हैं।

मिखाईल : आखिर तो! **(बाहर जाता है)**

तत्याना (मेज के सामने बैठते हुए) : वह इतना परेशान क्यों है?

निकोलाई : मेरे ख्याल में यह जानना आपके लिए दिलचस्प नहीं होगा।

निकोलाई : मेरे ख़्याल में यह जानना आपके लिए दिलचस्प नहीं होगा।

तत्याना (शान्त भाव से) : आपका भाई मुझे एक पुलिस मैन की याद दिला देता है। कोस्त्रोमा में वह हमारे थियेटर में अक्सर ड्यूटी पर रहता था... लम्बाऔर पतला-सा, फैली-फैली आँखोंवाला।

निकोलाई : अपने भाई के साथ मैं उसकी कुछ भी समानता नहीं पा रहा हूँ।

तत्याना : मैं शक्ल सूरत की समानता की बात नहीं कर रही हूँ.. यह पुलिसमैन भी हमेशा हड़बड़ाया रहता था। चलना तो जानता ही न था, हमेशा भागता था। सिगरेट पीने के बजाय,

निगलता था। जीने की तो जैसे उसे फुरसत ही नहीं थी। चौबीसों घण्टे कहीं न कहीं भागता-दौड़ता और लुढ़कता-पुढ़कता रहता था... मगर कहाँ, यह वह खुद भी नहीं जानता था।

निकोलाई : आप सचमुच ऐसा सोचती हैं कि वह यह नहीं जानता था?

तत्याना : मुझे पूरा विश्वास है कि वह यह नहीं जानता था। जब किसी आदमी के सामने कोई निश्चित लक्ष्य होता है, तो वह बड़े आराम से उसकी पूर्ति का यत्न करता है। मगर वह तो हर वक़्त भगदड़ मचाये रहता था। उसकी भगदड़ भी अजीब किस्म की थी। ऐसा लगता था कि जैसे कोई डण्डा लेकर उसका पीछा कर रहा है। अपनी इस हड़बड़ी में वह खुद भी ठोकर खाता था और दूसरों का रास्ता भी रोकता था। वह लालची नहीं था- मेरा मतलब, संकीर्ण अर्थ में लालची नहीं था... वह तो अपने सभी कामों, सभी जिम्मेदारियों से छुटकारा पाने के लिए परेशान रहता था। यहाँ तक कि रिश्वत लेने की जिम्मेदारी से भी। वह रिश्वत लेता नहीं था- बल्कि लोगों से रुपये छीनता था और जल्दबाजी में धन्यवाद तक देना भूल जाता था... जानते हैं, उसका अन्त क्या हुआ? एक घोड़ागाड़ी के नीचे आकर दूसरी दुनिया में पहुँच गया।

निकोलाई : आप यह कहना चाहती हैं कि मेरा भाई बेकार ही दौड़-धूप करता रहता है?

तत्याना : तो यही मतलब निकाला आपने मेरी बात का? खैर, मैं तो यह नहीं कहना चाहती थी... मेरा मतलब सिर्फ इतना था कि आपके भाई को देखकर मुझे उस पुलिसमैन की याद आ जाती है...

निकोलाई : इसमें मेरे भाई की तारीफ की तो कोई बात नहीं।

तत्याना : आपके भाई की तारीफ करने का तो मेरा इरादा भी नहीं था...

निकोलाई : लोगों से चोंचलेबाजी करने का आपका तरीका भी निराला है।

तत्याना : सच?

निकोलाई : सो भी खुशी देने वाला नहीं।

तत्याना (शान्त भाव से) : आपके साथ किसी औरत को खुशी भी हो सकती है?

निकोलाई : अरे, वाह!

पोलीना (अन्दर आती है) : आज हमारे यहाँ कोई भी चीज ढंग से नहीं हो रही। न कोई नाश्ता कर रहा है, सभी खीझे-खीझे हैं... मानो अच्छी तरह से सोये न हों। नाद्या सुबह ही सुबह क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना के साथ खुमियाँ इकट्ठी करने के लिए जंगलों में चली गयी है... मैंने कल उसे मना भी किया था... हे भगवान! ... जिन्दगी मुश्किल होती जा रही है!

तत्याना : तुम बहुत ज्यादा खाती हो...

पोलीना : बात करने का यह कौन सा ढंग है, तत्याना? बड़ा ही अजीब रवैया है तुम्हारा लोगों के प्रति...

तत्याना : सच?

पोलीना : जब इनसान के कंधों पर कोई जिम्मेदारी न हो, जब उसे कुछ करना-धरना न हो, तब वह तुम्हारी तरह चटखारे ले लेकर बातें कर सकता है! लेकिन अगर हजारों लोग रोजी-रोटी के लिए तुम पर निर्भर हों... तब मामला इतना आसान नहीं रहता!

तत्याना : तो तुम उनकी फिक्र करना छोड़ दो, वे जैसे चाहें उन्हें वैसे ही जीने दो... सौंप दो उन्हें ही सब कुछ-कारखाना, जमीन,-और फिर गुजारो आराम की जिन्दगी।

निकोलाई (सिगरेट जलाते हुए) : किस नाटक का वार्तालाप है यह?

पोलीना : मैं नहीं जानती कि तुम ऐसी बातें क्यों करती हो, तत्याना? जरा जाकर देखो कि ज़खार कितना परेशान है... मजदूरों के शान्त हो जाने तक हमने कारखाना बन्द करने का फैसला किया है। मगर जरा कल्पना तो करो कि लोगों को कितनी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा! सैकड़ों लोग बेकार हो जायेंगे। उनके बाल-बच्चे हैं... उफ़, इसकी कल्पना ही बड़ी भयानक है!

तत्याना : अगर यह इतनी भयानक बात है, तो तुम लोग ऐसा कर ही क्यों रहे हो? किसलिए अपने को यातना का शिकार बना रहे हो?

पोलीना : ओह, तत्याना, तुम कैसी कलेजा-फूँक बातें करती हो! अगर हम कारखाना बन्द नहीं करते हैं, तो मजदूर हड़ताल कर देंगे- और यह इससे भी बुरा होगा।

तत्याना : क्या बुरा होगा?

पोलीना : सब कुछ बुरा होगा... किसी हालत में भी उनकी सभी माँगें नहीं मानी जा सकतीं। और वास्तव में वे उनकी माँगें भी नहीं हैं। ऐसे ही कुछ समाजवादियों ने उनके दिमाग़ में अटपटी बातें भर दी हैं। और वही चीख चिल्ला रहे हैं... **(जोश में आकर)** मेरी तो समझ में ही यह बात नहीं आती! विदेशों में समाजवाद की अपनी एक जगह है। समाजवादी खुलेआम सब काम करते हैं... मगर हमारे रूस में ये लोग मज़दूरों को कोनों में ले जाकर कानाफूसी करते रहते हैं। वे यह भी भूल जाते हैं कि राजतंत्र में समाजवाद की कोई जगह नहीं हो सकती! हमें समाजवाद की नहीं, विधान की जरूरत है... आपका क्या ख्याल है, निकोलाई वसील्येविच?

निकोलाई (थोड़ा हँसकर) : मेरा आपसे थोड़ा मतभेद है। समाजवाद एक खतरनाक चीज़ हैं उस देश में इसकी अच्छी जड़ जम जायेगी, जहाँ लोगों का अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण... मेरा मतलब यह कि जहाँ लोगों का अपना कोई नसली फ़लसफ़ा नहीं है, जहाँ हर चीज़ इधर-उधर से उधार ली गयी है... हम अतिवादी हैं... यही हमारी कमजोरी है।

पोलीना : ओह, यह तो आपने बिल्कुल ठीक कहा है! हम लोग अतिवादी हैं।

तत्याना (उठते हुए) : खासतौर पर तुम और तुम्हारे पति। और यह सरकारी वकील

साहब...

पोलीना : तुम नहीं जानतीं, तत्याना, ज़खार को हमारे इलाके में "लाल" समझा जाता है!

तत्याना (इधर-उधर टहलते हुए) : मेरे ख्याल में वह तो सिर्फ शर्म से ही लाल होता है, सो भी कभी-कभी...

पोलीना : तत्याना! हे भगवान, यह तुम क्या कह रही हो!...

तत्याना : क्यों, क्या मैंने कोई बुरी बात कह दी है? मुझे मालूम नहीं था... तुमलोगों की जिन्दगी तो मुझे शौकिया अभिनेताओं जैसी लगती है। गलत लोगों के गलत पार्ट दे दिये गये हैं, प्रतिभा नाम की कोई चीज किसी को छू तक नहीं पायी, हर कोई बेतुका अभिनय करता है.... और नाटक का कोई सिर-पैर ही समझ में नहीं आता...

निकोलाई : आपकी बात में कुछ सच्चाई जरूर है। और सभी शिकायत कर रहे हैं- ओह, नाटक कितना उबा देने वाला है!

तत्याना : हाँ, हम नाटक को विगाड़ रहे हैं। मंच के नौकर-चाकर और छोटे-मोटे अभिनय करने वाले यह बात समझने लगे हैं... किसी दिन ये लोग हमें रंगमंच से एक तरफ कर देंगे...

(जनरल और कोन प्रवेश करते हैं)

निकोलाई : क्या आप राई का पहाड़ नहीं बना रही हैं?

जनरल (पुकारते हुए) : पोलीना! जनरल के लिए कुछ दूध भेज दो! देखना, बर्फ जैसा ठण्डा हो! (निकोलाई से) हलो, कानूनी कफन!... मुझे अपना हाथ तो चूमने दो, मेरी सुन्दर भानजी! कोन, अपना पाठ सुनाओ- फौजी किसे कहते हैं?

कोन (ऊब से) : जो अपने अफसर के इशारों पर नाचना जाने, हुजूर!

जनरल : अगर अफसर यह चाहे कि वह मछली बन जाये, तो?

कोन : फौजी के लिए हर चीज बनना सम्भव होना चाहिए...

तत्याना : प्यारे मामा जी, अभी कल ही तो आपने इस नाटक से हमारा मन बहलाया था... क्या हर रोज ही इसका दोहराया जाना लाजिमी है?

पोलीना (आह भरकर) : नदी में स्नान के बाद हर दिन।

जनरल : हाँ, सचमुच हर दिन! और हर रोज नया नाटक! इस मसखरे को सवाल भी खुद ही तैयार करने चाहिए और जवाब भी।

तत्याना : कोन, आपको इसमें मजा आता है?

कोन : जनरल साहब को मजा आता है।

तत्याना : और आपको?

जनरल : इसे भी मजा आता है...

कोन : सरकस के मसखरे की भी अब मेरी उम्र नहीं रही... मगर पेट की आग बुझाने के लिए सभी तरह के नाच नाचने ही पड़ेंगे...

जनरल : अरे ओ, चालाक बुड्ढे! घूमो और आगे चल दो!...

तत्याना : इस बेचारे बूढ़े का मजाक उड़ा-उड़ाकर क्या कभी आपका मन नहीं भरता?

जनरल : बूढ़ा तो मैं भी हूँ! और आप तो खुद भी ऊबभरी हैं... अभिनेत्री को तो दूसरों को हँसाना चाहिए, मगर आप?

पोलीना : मामा जी, आप जानते हैं कि...

जनरल : मैं कुछ नहीं जानता-वानता...

पोलीना : हम कारखाना बन्द कर रहे हैं...

जनरल : अच्छा! बहुत खूब! कम से कम भोंपू के शोर से तो जान बचेगी! सुबह-सुबह जब हमें मीठी और प्यारी नींद आती है, तभी खलल डालने वाला भोंपू करता है- ऊ-ऊ-ऊ! कर दो बन्द!...

मिखाईल (जल्दी से अन्दर आते हुए): निकोलाई, जरा सुनो तो! कारखाना तो बन्द कर दिया गया, मगर मेरे ख्याल में हमें जरूरी कदम उठा लेने चाहिए। उप-राज्यपाल को एक तार दे दो, संक्षिप्त रूप से उसे सारी स्थिति भी बता दो और लिख दो कि कुछ फौजी भेज दे... नीचे मेरा नाम लिख देना।

निकोलाई : वह तो मेरा भी दोस्त है।

मिखाईल : मैं जाकर उन प्रतिनिधियों को जहन्नुम में भेजता हूँ! ..तुम तार का किसी से जिक्र नहीं करना- वक्त आने पर मैं खुद बता दूँगा... ठीक है न?

निकोलाई : ठीक है।

मिख़ाईल : अपनी मनमर्जी करने में बड़ा मज़ा आता है! उम्र में मैं तुमसे बड़ा हूँ, मगर जिन्दादिली के नाते छोटा, ठीक है न?

निकोलाई : अगर मेरा ख्याल पूछते हो, तो मैं तो इसे तुम्हारी जिन्दादिली नहीं, बल्कि दिल की कमजोरी कहूँगा...

मिखाईल (व्यंग्य से) : यह दिल की कमजोरी है या कुछ और, तुम्हें इसका पता लग जायेगा! तुम खुद अपनी आँखों से देख लोगे! (हँसता हुआ बाहर जाता है)

पोलीना: निकोलाई वसील्येविच, तो उन्होंने फैसला कर लिया?

निकोलाई (बाहर जाते हुए) : लगता तो ऐसा ही है।

पोलीना : हे भगवान!

जनरल : क्या करने का फ़ैसला कर लिया है उन्होंने?

पोलीना : कारखाना बन्द करने का...

जनरलः ओह, तो यह बात है! ...कोन!

कोनः हाजिर हूँ, सरकार!

जनरलः बंसियाँ और नाव!

कोनः सब कुछ तैयार है।

जनरलः मैं तो चल दिया मछलियों के साथ चुप रहने को- इनसानों के साथ ऊबने से तो यही बेहतर है... **(हँसता है)** खूब कहा, क्यों?

(नाद्या भागती हुई अन्दर आती है)

आह, मेरी प्यारी तितली!... क्या बात है?

नाद्या (खुश होते हुए): हम लोग तो एक कारनामा कर आयी हैं! **(पीछे घूमकर पुकारती है)** ग्रेकोव! कृपया इधर आ जाइये! क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना, इसे जाने मत दीजिये! मौसी, जैसे ही हम जंगलों से बाहर आ रही थीं कि अचानक तीन मज़दूरों ने हमें आ घेरा। वे पिये हुए थे।

पोलीनाः देखा न! मैं तो तुम्हें हमेशा चेतावनी देती रही हूँ।

क्लेओपात्रा (पीछे-पीछे ग्रेकोव आता है): कैसी बुरी बात है!

नाद्याः इसमें बुरी बात क्या है? हँसी की बात है!... तीन मज़दूर थे, मौसी... वे मुस्कराये और बोले "हमारी प्यारी महिलाओ!"

क्लेओपात्राः मैं तो जरूर ही अपने पति से कहूँगी कि वह उनकी छुट्टी कर दें...

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए): वह क्यों?

जनरलः यह कौन है... ए... यह कलमुँहा?

नाद्याः नानाजी, हमारा रक्षक, समझे न?

जनरलः कुछ भी समझ में नहीं आ रहा!

क्लेओपात्राः आपका बताने का ढंग भी तो अजीब है।

नाद्याः मैं वैसे ही बता रही हूँ, जैसे बताना चाहिए।

पोलीनाः तुम्हारी बात का तो सिर-पैर ही समझ में नहीं आ रहा, नाद्या!

नाद्याः इसलिए कि आप लोग मुझे बार-बार टोकते जा रहे है!..हाँ, तो वे लोग हमारे पास आये और कहने लगे- "आइये, हम मिलकर गायें..."

पोलीनाः ओह, कैसी गुस्ताखी है!

नाद्याः नहीं, बिल्कुल नहीं! "हम जानते हैं कि आप बहुत अच्छा गाती हैं," उन्होंने कहा "बेशक यह ठीक है कि हम लोग थोड़ी पिये हुए हैं, मगर पीकर ही हम लोग ज्यादा अच्छे हो जाते हैं," उन्होंने कहा और, मौसी, उनकी यह बात है भी सच! पी लेने के बाद वे हमेशा की तरह बुझे-बुझे दिखाई नहीं देते...

क्लेओपात्रा : हमारी खुशकिस्मती से यह नौजवान...

नाद्या : मैं आपसे ज्यादा अच्छी तरह सुनाऊँगी! क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना उन्हें डाँटने-डपटने लगीं... आपने व्यर्थ ही ऐसा किया, यक़ीन मानिये!... और तब उनमें से एक, लम्बे और पतले से मजदूर ने...

क्लेओपात्रा (बिगड़ते हुए) : मैं उसे जानती हूँ!

नाद्या : उसने क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना का हाथ थाम लिया और दर्द भरी आवाज में कहा- "आप तो बड़ी ही प्यारी और पढ़ी लिखी महिला हैं, देखकर मन खिल उठता है और आप हमें डाँट-डपट रही हैं। क्या हमने किसी तरह आपका दिल दुखाया है?" उसने ये शब्द बड़े ही अच्छे ढंग से कहे... लगता था कि जैसे उसके दिल की गहराई से निकल रहे हों!... मगर तभी दूसरा, जो बड़ा अक्खड़-सा था, बोला-"क्यों सिर खपा रहे हो इनके साथ? क्या ये भी कुछ समझ सकती हैं? ये-दरिन्दे हैं!.." हम दरिन्दे हैं- ये और मैं! **(हँसती है)**

तत्याना (व्यंगपूर्ण मुस्कान से) : लगता है कि तुम्हें यह उपाधि बहुत पसन्द आयी है?

पोलीनाः मैंने तुम्हें क्या कहा था, नाद्या?...तुम सभी जगह भागती रहती हो.

ग्रेकोव (नाद्या से) : मैं अब जा सकता हूँ?

नाद्याः ओह, नहीं, अभी नहीं! चाय तो पियेंगे? चाय नहीं, तो दूध? पियेंगे न?

(जनरल हँसता है, क्लेओपात्रा कंधे झटकती है, तत्याना ग्रेकोव की तरफ देखकर धीरे-धीरे गुनगुनाती है, पोलीना सिर झुकाकर चमचों को तौलिये से रगड़-रगड़कर साफ करने लगती है)

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : नहीं, धन्यवाद! मुझे! कुछ भी नहीं चाहिए।

नाद्या (जोर देते हुए) : शर्माइये नहीं!... सच कहती हूँ, ये सभी बहुत भले लोग हैं!

पोलीना (डाँटते हुए) : नाद्या!

नाद्या (ग्रेकोव से) : अभी नहीं जाइये! अभी तो मैंने अपनी बात भी पूरी नहीं की...

क्लेओपात्रा (बिगड़ते हुए) : बताने के लिए और रह ही क्या गया है, इतना ही, कि ठीक मौके पर यह नौजवान वहाँ आ पहुँचा और उसने अपने शराबी दोस्तों को समझाया कि हमें परेशान न करें... मैंने इससे कहा कि हमें घर तक पहुँचा दे, बस...

नाद्या : ओह, कमाल है आपका सुनाने का ढंग भी! अगर बात इसी तरह हुई होती. .. जैसे आप सुना रही हैं, तो सबका ऊब से दम निकल जाता!

जनरल : क्यों कैसी रही?

नाद्या (ग्रेकोव से) : आप बैठ जाइये! मौसी, आप इनसे बैठने के लिए क्यों नहीं कहतीं? और आप सभी लोग रोनी सूरत क्यों बनाये बैठे हैं?

पोलीना (बैठी हुई ही ग्रेकोव को संबोधित करती है) : मैं आपकी बहुत आभारी हूँ, नौजवान...

ग्रेकोव : आभार की कोई बात नहीं।

पोलीना (अधिक रूखेपन से) : इनका रक्षा करके आपने बहुत नेक काम किया है।

ग्रेकोव (शान्त भाव से) : इनकी रक्षा का तो सवाल ही नहीं था... कोई भी इनके साथ बुरे ढंग से पेश नहीं आ रहा था।

नाद्या : मौसी! यह आप कैसी बात कह रही है!

पोलीना : कृपया मुझे सीखे देने की कोशिश मत करो...

नाद्या : लेकिन समझिये तो- किसी ने हमारी रक्षा नहीं की! ग्रेकोव ने तो सिर्फ इतना कहा था- "इन्हें परेशान नहीं करो, साथियो! यह अच्छा नहीं!" इसे देखकर वे बहुत खुश हुए, कहने लगे- "हमारे साथ चलो, ग्रेकोव, तुम बहुत ही समझदार आदमी हो!" और, मौसी यह बात है भी सही.. माफ कीजिये, ग्रेकोव, मगर यह सच है न!...

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : आप मुझे बड़ी अटपटी स्थिति में डाल रही हैं...

नाद्या : इसके लिए मैं नहीं, ये लोग जिम्मेदार हैं, ग्रेकोव!

पोलीना : नाद्या! यह तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही हो... यह सब सुनकर हंसी आती है... बस, अब काफी हो चुका!

नाद्या (गर्म होकर) : तो हँसिये ! तुम लोग भी हँसो ! उल्लुओं की तरह क्यो बैठे हैं ? हँसिये !

क्लेओपात्रा : नाद्या राई का पहाड़ बनाना जानती है और वह भी खूब शोर मचाकर, बड़े उत्साह से। और इस समय, एक अजनबी के सामने तो यह खास तौर पर अच्छा लग रहा है... वह भी इस पर हँस रहा है।

नाद्या (ग्रेकोव से) : आप मुझ पर हँस रहे हैं ? भला क्यों ?

नाद्या (ग्रेकोव से) : मैं तो आपको मुग्ध भाव से देख रहा हूँ, आप पर हँस नहीं रहा हूँ...

पोलीना (हैरान होकर) : क्या ? मामा जी...

क्लेओपात्रा (व्यंग्यपूर्वक) : देखा आपने !

जनरल : बस, बस, काफ़ी हो चुका! लो, यह लो और नौ दो ग्यारह हो जाओ.

ग्रेकोव (मुड़ते हुए) : धन्यवाद... मगर इसकी जरूरत नहीं है।

नाद्या : ओह! आपने यह क्यों किया?

जनरल (ग्रेकोव को रोकते हुए) : ज़रा सुनो तो! मैं तुम्हें दस रूबल दे रहा हूँ...

ग्रेकोव (शान्त भाव से) : तो क्या हुआ?

(घड़ी भर के लिए सब चुप हो जाते हैं)

जनरल (हतप्रभ-सा) : ए...ए...जरा यह भी तो बताओ कि तुम हो कौन ?

ग्रेकोव : एक मज़दूर।

जनरल : लुहार ?

ग्रेकोव : नहीं, फ़िटर।

जनरल (कड़ाई से) : वह तो एक ही बात है! तुम ये रूबल ले क्यों नहीं लेते?

ग्रेकोव : इसलिए कि नहीं चाहता।

जनरल (खीझकर) : यह भी क्या तमाशा है ? तो तुम्हें क्या चाहिए ?

ग्रेकोव : कुछ भी नहीं।

जनरल : शायद तुम इस लड़की से शादी करना चाहते हो? क्यों? **(हँसता है)**

(सभी झेंप जाते हैं)

नाद्या : ओह! आप यह क्या कह रहे हैं!

पोलीना : मामा जी...

ग्रेकोव (बड़े शान्त भाव से जनरल को सम्बोधित करता है) : आपकी उम्र कितनी है?

जनरल (हैरान होकर) : क्या? मेरी?... मेरी उम्र?

ग्रेकोव (उसी लहजे में) : हाँ! कितनी उम्र है आपकी?

जनरल (इधर-उधर देखते हुए) : मैं... मेरी... यही कोई इकसठ... तुम्हें मतलब?

ग्रेकोव (जाते हुए) : इस उम्र में अक़्ल भी कुछ ज्यादा होनी चाहिए थी।

जनरल : क्या ?... मेरी... मेरी अक़्ल भी ज्यादा होनी चाहिए थी?

नाद्या (ग्रेकोव के पीछे भागते हुए) : सुनिये, आप इनकी बातों का बुरा नहीं मानिये ! वह तो बूढ़े हैं। मैं सच कहती हूँ, ये सभी बहुत भले लोग हैं!

जनरल : यह सब क्या बकवास है ?

ग्रेकोव : आप परेशान न हों... इनसे और उम्मीद ही क्या हो सकती है!

नाद्या : इन्हें गपी लग रही है... इसलिए इन सभी के मूड खराब है... फिर मैंने अपना क़िस्सा भी तो बहुत बुरी तरह से सुनाया है।

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : आप चाहे कैसे भी क्यों न सुनातीं, विश्वास कीजिये, ये आपकी बात नहीं समझेंगे।

(वे गायब हो जाते हैं)

जनरल (व्यग्र होते हुए) : उसकी यह मजाल!

तत्याना : आपने रूबल देने की बेकार कोशिश की!

पोलीना : ओह, नाद्या... कैसी अजीब लड़की है यह नाद्या!

क्लेओपात्रा : ज़रा देखो तो सही! बड़ा आया गर्वीला सूरमा! मैं अपने पति से कहूँगी कि वह उसे...

जनरल : कल का छोकरा!

पोलीना : नाद्या तो अच्छी-खासी मुसीबत है! देखो तो, कैसे मुँह उठाकर चली गयी उसके साथ ... वह भी मुझे परेशान किये रहती है!

क्लेओपात्रा : तुम्हारे ये समाजवादी दिन पर दिन ज़्यादा गुस्ताख़ होते जा रहे हैं...

पोलीना : आप ऐसा क्यों सोचती हैं कि वह समाजवादी है?

क्लेओपात्रा : इतना तो मैं समझ ही सकती हूँ! सभी ढंग के मजदूर समाजवादी हैं!

जनरल : मैं ज़खार से कहूँगा... कि इस बदतमीज छोकरे का कान पकड़कर कारखाने से बाहर निकाल दे!

तत्याना : कारखाना तो बन्द है।

जनरल : फिर भी कान पकड़कर निकाल दे!

पोलीना : तत्याना! जाओ, जाकर नाद्या को बुला लाओ ... मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूँ! उससे कहना कि मैं दंग रह गयी हूँ...

(तत्याना जाती है)

जनरल : ओह, जानवर कहीं का! पूछता है– "आपकी उम्र?" यह मजाल!

क्लेओपात्रा : उन पियक्कड़ों ने हमारे पीछे सीटियाँ बजायीं... और आप उन्हें पढ़ा-पढ़ाकर उनके दिमाग खराब कर रहे हैं।

पोलीना : ज़रा ख़्याल करो! अभी वृहस्पति के दिन मैं बग्घी में गाँव जा रही थी। अचानक-सीटियाँ सुनाई दीं। मुझ पर भी सीटियाँ बजाते हैं। बेहूदगी की बात तो एक तरफ–अगर घोड़े बिदक जाते, तो क्या होता!

क्लेओपात्रा (शिक्षा देते हुए) : ज़खार इवानोविच ही इसके लिए बहुत हद तक ज़िम्मेदार है!.. मेरे पति, जैसा कि कहते हैं, वह तो अपने और मज़दूरों के बीच कुछ फ़ासला रखना ही नहीं जानते।

पोलीना : वह बहुत नर्मदिल हैं! सभी के साथ नर्मी से पेश आना चाहते हैं! उनका ख्याल है कि साधारण लोगों से बनाकर रखने में दोनो तरफ की भलाई है... किसानों के मामले में तो उनका ख्याल ठीक है... वे जमीन किराये पर ले लेते हैं, किराया देते रहते हैं और सब ठीक-ठाक चलता रहता है। मगर ये...

(तत्याना और नाद्या आती हैं)

नाद्या! रानी बिटिया! क्या तुम इतना भी नहीं समझ सकती कि यह कितनी बेहूदा बात. ..

नाद्या (गुस्से में आकर) : आप लोग...आप लोग बेहूदा है! गर्मी ने आप सबका मिजाज बिगाड़ दिया है–आप बेकार गुस्से में आ जाते हैं, खीझ उठते हैं। आप कुछ भी तो नहीं समझते!... और आप, नाना जी... ओह, कैसे बुद्धू हैं आप!

जनरल (भड़ककर) : मैं? मैं बुद्धू? अब तुम भी मुझे बुद्धू कह रही हो?

नाद्या : आपने वह बात क्यों कही थी...मुझसे शादी करने की बात? शर्म नहीं आती आपको?

जनरल : मुझे शर्म नहीं आती? बस, बस, अब तो हद हो गयी! आज के लिए यह काफ़ी है! **(पूरे ज़ोर से चिल्लाता हुआ बाहर जाता है)** कौन! तुम पर शैतान की मार! कहाँ जा मरे हो तुम कमबख्त?! अरे ओ गधे, ओ पाजी!

नाद्या : और मौसी, आप! आप विदेशों में रही हैं, राजनीति की बातें करती हैं ! आपने उसे बैठने तक के लिए नहीं कहा, चाय तक के लिए नहीं पूछा! ओह, आप ...

पोलीना (उछलकर खड़ी हो जाती है और चमचा नीचे फेंक देती है) : बस, अब और बर्दाश्त नहीं हो सकता! ...क्या कह ही हो तुम?

नाद्या : और आप... आप, क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना!... रास्ते भर तो उसकी लल्लो-चप्पो और उससे मीठी-मीठी बातें करती रहीं, पर जैसे ही घर पहुँची कि आंखें बदल लीं...

क्लेओपात्रा : तो क्या मैं उसका मुँह चूमती ? मुझे अफ़सोस है कि उसका मुँह गंदा था। मैं आपकी यह डाँट-डपट सुनने को तैयार नहीं हूँ। देखती हैं पोलीना द्मीत्रियेव्ना ? यह है आपके उदारतावाद का–या क्या कहते हैं उसे?–मानवतावाद का फल !... फ़िलहाल यह सारी मुसीबत सहनी पड़ती है मेरे पति को... मगर आपको भी इसका फल चखना होगा।

पोलीना : मैं नाद्या के लिए आपसे माफ़ी चाहती हूँ, क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना।

क्लेओपात्रा (जाते हुए) : इसकी जरूरत नहीं। सवाल सिर्फ नाद्या काही नहीं है... ऐसे वातावरण के लिए आप सभी जिम्मेदार हैं!

पोलीना : सुनो नाद्या! जब तुम्हारी माँ दम तोड़ रही थी और जब उसने तुम्हारी देख-रेख

का भार मुझे सौंपा था, तो...

नाद्या : आप मेरी माँ की चर्चा नहीं करें! उसके बारे में आप हमेशा ही गलत बातें किया करती हैं!

पोलीना (हैरान होकर) : नाद्या! तुम बीमार हो क्या? ज़रा सोचो तो, कह क्या रही हो! तुम्हारी माँ मेरी बहन थी, मैं उसे तुमसे बेहतर जानती थी...

नाद्या (आँसुओं को पीते हुए) : कुछ नहीं जानतीं आप! ग़रीब ग़रीब होते हैं, अमीर अमीर... उनके बीच कुछ भी तो एक जैसा नहीं होता... मेरी माँ ग़रीब थी, भली थी... आप ग़रीबों को नहीं समझतीं! आप तो मौसी तत्याना को भी नहीं समझतीं...

पोलीना : नाद्या! मैं मिन्नत करती हूँ कि तुम यहाँ से चली जाओ! जाओ यहाँ से !

नाद्या (जाते हुए) : चली जाती हूँ!... मगर मैं ही सही हूँ! आप नहीं, मैं!

पोलीना : हे भगवान्!... अच्छी-भली स्वस्थ लड़की है... न जाने इसे अचानक ही यह क्या दौरा-सा पड़ गया है ! बिल्कुल हिस्टीरिया का सा दौरा! माफ़ करना, तत्याना, मगर मुझे यह कहना ही पड़ रहा है कि तुम इसे बुरी तरह बिगाड़ रही हो... तुम इससे सभी तरह की बातें कर लेती हो, मानो वह सयानी हो चुकी हो... तुम इसे हमारे कर्मचारियों के बीच ले जाती हो... हमारे दफ़्तर के लोगों, अजीब-अजीब मज़दूरों के बीच... यह बहुत भद्दी बात है! और फिर ये नावों के सैर-सपाटे...

तत्याना : तुम शान्त हो जाओ... मन को शान्त करनेवाली दवाई की कुछ बूँदें पी लो! तुम्हें यह मानना ही होगा कि उस मज़दूर के साथ तुम ढंग से पेश नहीं आयीं! अगर तुम उसे बैठने के लिए कह देती, तो कुर्सी का कुछ बिगड़ थोड़े ही जाता।

पोलीना : तुम्हारी बात सही नहीं है, सही नहीं है... कोई भी मेरे मत्थे यह दोष नहीं मढ़ सकता कि मैं मज़दूरों के साथ बुरा बर्ताव करती हूँ। मगर मैं, मेरी प्यारी, यह ज़रूर चाहती हूँ कि हर चीज़ सीमा में होनी चाहिए!...

तत्याना : और फिर मैं तो उसे कहीं नहीं ले जाती। जहाँ भी जाती है, वह अपनी मर्जी से जाती है... और मैं ऐसा नहीं समझती कि उसे मना करना चाहिए।

पोलीना : वह अपनी मर्जी से जाती है ! जैसे कि अपना भला-बुरा समझ सकती है !

(याकोव पिये हुए धीरे-धीरे अन्दर आता है)

याकोव (बैठते हुए) : कारख़ाने में बड़ी गड़बड़ होने वाली है...

पोलीना (जैसे तंग आयी हुई हो) : अच्छा, अच्छा, रहने दीजिये, याकोव इवानोविच !...

याकोव : मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ। बड़ी गड़बड़ होने वाली है। वे लोग कारखाने को आग लगा देंगे... और हम सब को ख़रगोशों की तरह भून डालेंगे।

तत्याना (दुखी होते हुए) : लगता है आज इतने सबेरे ही पी आये...

याकोव : इस वक़्त तक मैं हर रोज ही पी लिया करता हूँ... अभी-अभी मैंने क्लेओपात्रा को देखा... बड़ी कमीनी औरत है ! इसलिए नहीं कि उसके बेशुमार आशिक़ हैं... बल्कि इसलिए कि उसके सीने में दिल की जगह एक गुस्सैल और बूढ़ा कुत्ता है...

पोलीना (उठते हुए) : हे भगवान, हे भगवान ! सब कुछ ढंग से चल रहा था और अचानक... **(निरुद्देश्य बगीचे में इधर-उधर घूमती है)**

याकोव : खुजली का मारा हुआ, छोटा-सा कुत्ता। लालची कुत्ता। वह उसके दिल में बैठा गुर्राया करता है... वह पेट भरकर खा चुका है, सब कुछ हड़प चुका है, मगर अभी भी जीभ लपलपा रहा है... क्या चाहता है, यह नहीं जानता... इसीलिए बेचैन रहता है...

तत्याना : चुप रहो, याकोव! लो यह तुम्हारा भाई आ रहा है।

याकोव : मुझे भाई की ज़रूरत नहीं! तत्याना, मैं यह अच्छी तरह समझता हूँ कि मैं प्यार करने लायक़ नहीं रहा... फिर भी मेरे दिल को इससे टेस लगती है। सममुच टेस लगती है... मगर मैं तो तुम्हें प्यार करता हूँ...

तत्याना : ज़रा जाकर ताज़ा दम हो लो... नहा-धो लो...

ज़ख़ार (अन्दर आते हुए) : क्या करख़ाना बन्द करने की घोषणा कर दी गयी है ?

तत्याना : मालूम नहीं।

याकोव : नहीं, अभी घोषणा तो नहीं की गयी, मगर मज़दूर यह जानते हैं।

ज़ख़ार : यह कैसे? किसने उन्हें बताया?

याकोव : मैंने! मैं उन्हें बता आया हूँ।

पोलीना (पास आकर) : भला क्यों?

याकोव (कंधे झटककर) : ऐसे ही... उनके लिए यह दिलचस्पी की बात है। मैं उन्हें सब कुछ बता देता हूँ... अगर वे मरी बात सुनते हैं तो। मेरे ख्याल में वे मुझे पसंद करते हैं। उन्हें यह देखकर खुशी होती है कि उनके मालिक का भाई शराबी है। इससे उन्हें बराबरी का एहसास होता है।

ज़ख़ार : हूँ... याकोव, तुम अक्सर कारख़ाने में जाते हो... मुझे इसमें कोई एतराज नहीं !... मगर मिख़ाईल वसील्येविच का कहना है कि मज़दूरों से बातचीत करते वक्त, तुम कभी-कभी प्रबन्ध-व्यवस्था की आलोचना करते हो...

याकोव : वह झूठ कहता है। प्रवन्ध-व्यवस्था या अव्यवस्था-मैं इस बारे में बिल्कुल कोरा हूँ।

ज़ख़ार : वह तो यह भी कहता है कि कभी-कभी तुम अपने साथ वोद्का भी ले जाते हो...

याकोव : यह झूठ है। वोद्का मैं साथ नहीं ले जाता हूँ, मंगवा लेता हूँ, और सो भी

कभी-कभी नहीं, हमेशा ही। तुम तो समझते ही हो कि वोद्का के बिना मैं उनके लिए दिलचस्प नहीं रहूँगा।

ज़खार : मगर, याकोव, ज़रा खुद ही सोचकर देखो- आखिर तुम कारखाने के मालिक के भाई हो...

याकोव : सिर्फ़ मेरा यही दुर्भाग्य नहीं है...

ज़खार (चिढ़कर) : तो मैं अब और कुछ नहीं कहूँगा! कुछ भी नहीं कहूँगा! न जाने क्यों, सभी मेरे दुश्मन होते जा रहे हैं...

पोलीना : यह बिल्कुल ठीक है। काश, तुमने वह सब सुना होता जो अभी थोड़ी देर पहले नाद्या ने कहा!

पोलोगी (दौड़ता हुआ अन्दर आता है) : मैं यह सूचना देने आया हूँ कि अभी ... कि अभी डायरेक्टर... डायरेक्टर की हत्या कर दी गयी है...

ज़खार : क्या?

पोलीना : आपने... क्या कहा आपने?

पोलोगी : जान से ही मार डाला... वह गिर पड़े...

ज़खार : किसने... गोली किसने चलायी?

पोलोगी : मजदूरों ने...

पोलीना : किसी ने उन्हें पकड़ा?

जखार : डाक्टर कहाँ है?

पोलोगी : मुझे मालूम नहीं...

पोलीना : याकोव इवानोविच!... आप जाइये!

याकोव (हाथों को घुमाते हुए) : कहाँ?

पोलीना : यह सब हुआ कैसे?

पोलोगी : डायरेक्टर साहब गुस्से में थे... उन्होंने एक मज़दूर के पेट में लात मार दी. ..

याकोव : वे लोग यहाँ आ रहे हैं...

(शोर। निकोलाई और अधेड़ उम्र का गंजा मज़दूर लेव्शिन मिख़ाईल स्क्रोबोतोव को दोनों ओर से थामे हुए अन्दर लाते हैं। कई मजदूर और दफ़्तर के कर्मचारी उनके साथ हैं)

मिख़ाईल (थकी-सी आवाज में: मुझे परेशान नहीं करो...मुझे लिटा दो...

निकोलाई : तुमने गोली चलाने वाले को देखा था?

मिखाईल : मैं थक गया हूँ...थक गया हूँ...

निकोलाई (जोर देकर) : तुमने गोली चलाने वाले को देखा था?

मिख़ाईल : मुझे दर्द हो रहा है... कोई लाल बालों वाला था... मुझे लिटा दो.... कोई लाल बालों वाला था...

(उसे चबूतरे पर लिटा दिया जाता है)

निकोलोई (पुलिसमैन से) : सुना आपने? कोई लाल बालों वाला था...

पुलिसमैन : जी, हुजूर!...

मिख़ाईल : ओह! अब इससे फ़र्क ही क्या पड़ता है ?...

लेव्शिन (निकोलाई से) : क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं होगा कि इस वक़्त इन्हें परेशान न किया जाये?...

निकोलाई : चुप रहिये! डाक्टर कहाँ है?... मैं पूछ रहा हूँ, डाक्टर कहाँ है?

(सभी लोग फुसफुसाने और बेकार ही इधर-उधर दौड़-धूप करने लगते हैं)

मिख़ाईल : चिल्लाओ नहीं... हाय दर्द... मुझे आराम करने दो!

लेव्शिन : हाँ, आराम कीजिये, मिखाईल वसील्येविच! आह! हमारी यह जिन्दगी बस, पैसे का फेर है! वही हमें ले डूबता है... वही हमारी जिन्दगी है, वही मौत.

निकोलाई : पुलिसमैन! फ़ालतू लोगों को यहाँ से जाने को कह दीजिये।

पुलिसमैन (धीरे से) : जाओ, भाइयों, जाओ यहाँ से! यहाँ कोई तमाशा नहीं है...

ज़ख़ार (धीरे से) : डाक्टर कहाँ है?

निकोलाई : मिख़ाईल!.. मिख़ाईल!.. **(अपने भाई पर झुक जाता है। बाकी लोग भी ऐसा ही करते हैं)** मुझे लगता है... कि उसका खेल खत्म हो गया...

ज़ख़ार : ऐसा नहीं हो सकता! यह बेहोशी है।

निकोलाई (धीरे-धीरे) : आप समझते हैं ज़ख़ार इवानोविच?.. वह चल बसा.

ज़ख़ार : मगर... आपसे ग़लती हो सकती है।

निकोलाई : नहीं। इसके लिए आप जिम्मेदार हैं—आप ही!

ज़ख़ार (व्यग्र होकर) : मैं?

तत्याना : यह सरासर बेरहमी है... बेहूदा बात है!

निकोलाई (ज़ख़ार की तरफ़ बढ़ते हुए) : हाँ, आप जिम्मेदार हैं!...

थानेदार (तेजी से अन्दर आते हुए) : डायरेक्टर साहब कहाँ हैं? क्या बुरी तरह घायल

हुए हैं?

लेव्शिन : चल बसे! सभी के लिए उतावली मचाये रहते थे, लेकिन अब खुद इन्हें देखिये. ..

निकोलाई (थानेदार से) : उन्होंने हमें इतना जरूर बता दिया है कि किसी लाल बालोंवाले ने गोली चलायी है...

थानेदार : लाल बालोंवाले ने?

निकोलाई : हाँ... आपको फ़ौरन कुछ करना चाहिए!

थानेदार (पुलिसमैन से) : सभी लाल बालोंवालों को पकड़ लो!

पुलिसमैन : जो हुक्म, हुजूर!

थानेदार : सभी को!

(पुलिसमैन बाहर जाता है)

क्लेओपात्रा (दौड़ती हुई आती है) : कहाँ है वह?... मिख़ाईल!... क्या बात है... क्या वह बेहोश हो गया है? निकोलाई वसील्येविच... क्या वह बेहोश हो गया है?

(निकोलाई दूसरी तरफ़ मुँह कर लेता है)

क्या वह चल बसा? चल बसा?

लेव्शिन : अब शान्त हो गये... पिस्तौल दिखा-दिखाकर डराते थे, मगर खुद ही उसका निशाना बन गये।

निकोलाई (धीरे, मगर ग़ुस्से से) : जाइये यहाँ से! **(थानेदार से)** इसे यहाँ से निकाल दीजिये!

क्लेओपात्रा : लेकिन डाक्टर, डाक्टर कहाँ है?

थानेदार (लेव्शिन से, धीरे से) : ए तुम, जाओ यहाँ से!

लेव्शिन (धीरे से) : जा रहा हूँ। धक्के क्यों दे रहे हैं?

क्लेओपात्रा (धीरे से) : तो इसे मार डाला?

पोलीना (क्लेओपात्रा से) : मेरी प्यारी...

क्लेओपात्रा (धीरे, मगर गुस्से से) : मुझसे दूर रहिये! यह आप ही की करतूत है... आप ही की!

ज़ख़ार (दुखभरी आवाज़ में) : मैं अच्छी तरह से समझता हूँ... कि आपको भारी धक्का लगा है...मगर...मगर... आप ऐसी बातें क्यों कह रही हैं?

पोलीना (आँसू भरकर) : ओह, मेरी प्यारी, ज़रा सोचिये तो सही, आप कैसी भयानक बात कह रही हैं!..

तत्याना (पोलीना से) : तुम यहाँ से चली जाओ... डाक्टर कहाँ है?

क्लेओपात्रा : बुरा हो कमबख्त आपकी नर्मी का! यह उसी की मेहरबानी है!

निकोलाई (रूखेपन से) : शान्त हो जाओ, क्लेओपात्रा! हमारे सामने ज़ख़ार इवानोविच से उसका अपराध छिपा थोड़े ही है....

ज़ख़ार (दुखी होकर) : मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा, महानुभावों! आप लोग यह क्या कह रहे हैं? मेरे माथे पर ऐसा कलंक कैसे लगाया जा सकता है?

पोलीना : यह तो बडी भयानक बात है। हे भगवान... सरासर जुल्म है!

क्लेओपात्रा : यह जुल्म है? आप लोगों ने ही मज़दूरों को उसके ख़िलाफ भड़काया, आप ही ने उसके असर को खाक में मिलाया... वे उससे खौफ़ खाते थे, उसे देखते ही उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी... और अब... अब उन्होंने उसे मार डाला... इसके लिए आप ही जिम्मेदार हैं! आपके ही हाथ रंगे हुए हैं मेरे पति के खून से!...

निकोलाई : बस, बस, काफ़ी है.... चिल्लाना ठीक नहीं!

क्लेओपात्रा (पोलीना से) : रो रही हैं? आपकी आँखों से ही बह जाये उसका खून!..

पुलिसमैन (आता है) : हुजूर!...

थानेदार : धीरे बोलो!

पुलिसमैन : सभी लाल बालोंवाले इकट्ठे कर लिये गये हैं!

(बाग़ के पिछले भाग में जनरल दिखाई देता है। वह कोन को अपने आगे धकेलता जाता है और जोर-जोर से हँसता है)

निकोलाई : धीरे!

क्लेओपात्रा : ये हत्यारे हैं?

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

(चाँदनी रात है। बगीचे में बड़ी-बड़ी परछाइयाँ दिखाई दे रही हैं। मेज पर डबल रोटी, खीरे, अण्डे और बियर की बोतलें अस्त-व्यस्त दशा में पड़ी हैं। शमादान जल रहे हैं। अग्राफ़ेना बर्तन धो रही है। यागोदिन हाथ में छड़ी लिये कुर्सी पर बैठा है और सिगरेट पी रहा है। बायीं ओर तत्याना, नाद्या और लेव्शिन खड़े हैं। सभी लोग मानो किसी चीज़ पर कान लगाये हुए फुसफुसाकर बातचीत कर रहे हैं। वातावरण में तनाव है, जैसे कि लोग किसी घटना की प्रत्याशा में हों।)

लेव्शिन (नाद्या से) : इनसानी ज़िन्दगी की हर चीज में पैसे ने जहर घोल रखा है, कुमारी जी! आपका जवान मन इसीलिए दुखी है... सभी को पैसे ने अपने जाल में फँसा रखा है- सभी को, सिवा आपके। इसीलिए आपका यहाँ निबाह नहीं होता। पैसे की छनक सब से यही कहती है- "जैसे अपने से प्यार करते हो, वैसे ही मुझसे भी करो..." मगर आपका इससे कोई मतलब नहीं। पंछी तो न बोता है, न काटता है।

यागोदिन (अग्राफ़ेना से) : लेव्शिन तो साहब लोगों को अक़्ल सिखाने लगा है... बुद्धू कहीं का!

अग्राफ़ेना : तो क्या हुआ? वह सच कहता है। साहब लोगों को भी तो थोड़ी सचाई जाननी चाहिए।

नाद्या : बड़ी मुश्किल ज़िन्दगी है आपकी, लेव्शिन?

लेव्शिन : नहीं, बहुत तो नहीं। बच्चा तो मेरा कोई है नहीं। सिर्फ़ औरत है– यानी मेरी बीवी, और बस! बच्चे सभी मर चुके हैं।

नाद्या : मौसी तत्याना! जब घर में मुर्दा होता है, तो सभी लोग धीरे-धीरे क्यों बोलते हैं?

तत्याना : मुझे मालूम नहीं...

लेव्शिन (मुस्कराते हुए) : इसलिए कि मरने वाले के सामने हम सभी अपराधी होते हैं, कुमारी जी! हर तरह से अपराधी होते हैं...

नाद्या : मगर हमेशा तो ऐसा नहीं होता कि लोगों की... कि लोगों की हत्या ही की जाती है... मगर लोग तो सदा धीरे-धीरे बोलते हैं।

लेव्शिन : हम सभी की हत्या करते हैं ! किसी की गोलियों से, किसी की शब्दों से। हम अपनी करतूतों से सभी की जान लेते हैं। हम लोगों को इस दुनिया से कब्र की तरफ़ धकेलते हैं और न तो यह देखते है, न महसूस करते हैं... मगर किसी को मौत की गोद में सुलाकर हमें अपने जुर्म का एहसास होने लगता है। तब हमें मरने वाले के लिए अफ़सोस होता है, शर्म के मारे हमारा सिर झुक जाता है और हम अपनी आत्मा में डर अनुभव करते हैं... हमें भी उसी रास्ते पर धकेला जा रहा है, हम भी तेज़ी से क़ब्र की तरफ़ बढ़ रहे हैं!

नाद्या : स...च... यह तो बड़ी भयानक बात है!

लेव्शिन : कोई बात नहीं! इस वक्त यह भयानक है, कल भूली-बिसरी बात हो जायेगी। लोग फिर वही रेल-पेल शुरू कर देंगे... जब कोई दम तोड़ देता है, तो थोड़ी देर के लिए सभी चुप हो जाते हैं, चकरा जाते हैं... आह भरकर फिर अपने पुराने रंग-ढंग अपना लेते हैं!... फिर से अपनी राह पर चल देते हैं... अज्ञानता! मगर आप तो अपने को अपराधी नहीं अनुभव करती हैं, कुमारी जी। मुर्दे भी आपको परेशान नहीं करते। आप तो उनके सामने भी ऊँचे-ऊँचे बोल सकती हैं।

तत्याना : दूसरे ढंग से जीने के लिए क्या करना चाहिए? आप जानते हैं?

लेव्शिन (रहस्यपूर्ण ढंग से) : पैसे से छुट्टी पानी होगी... इसे दफ़ना देना होगा! इसके न होने पर हम सोचेंगे–किसलिए की जाये रेल-पेल? क्यों बनाया जाये लोगों को दुश्मन?

तत्याना : बस, इतना ही?

लेव्शिन : शुरू में तो इतना ही काफ़ी है!..

तात्याना : नाद्या! कुछ देर बगीचे में घूमना चाहोगी?

नाद्या (सोचते हुए) : हाँ, घूमा जा सकता है...

(वे बगीचे में दूर जाकर गायब हो जाती हैं लेव्शिन मेज की तरफ़ चला जाता है। तम्बू के नज़दीक जनरल, कोन और पोलोगी दिखाई देते हैं)

यागोदिन : तुम तो बालू में से तेल निकालने की कोशिश कर रहे हो, लेव्शिन... बड़े भोले हो!

लेव्शिन : सो क्यों?

यागोदिन : बेकार माथापच्ची किया करते हो... भला ये कुछ समझने वाली सूरतें हैं! मज़दूर तुम्हारी बातें समझ सकते हैं, मगर कुलीनो पर इनका कुछ असर-वसर नहीं होने का...

लेव्शिन : यह लड़की तो बहुत भली है। ग्रेकोव ने मुझे इसके बारे में बताया था।

अग्राफ़ेना : चाय का एक और गिलास पियेंगे क्या?

लेव्शिन : कुछ हर्ज नहीं।

(शान्ति। जनरल की भारी आवाज़ सुनाई देती है। वृक्षों के बीच से नाद्या और तत्याना की सफ़ेद पोशाकों की झलक मिलती रहती है)

जनरल : या फिर सड़क के बीचोंबीच एक रस्सी फैला दी जाये... इस तरह से कि किसी को दिखाई न दे... कोई राहगीर गुज़रे और अचानक–धड़ाम!

पोलोगी : किसी को इस तरह गिरते देखकर बड़ा मज़ा आता है, हुज़ूर!

यागोदिन : सुना तुमने?

लेव्शिन : हाँ, सुना...

कोन : मगर आज तो हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते। घर में मुर्दा पड़ा हुआ है। घर मे मुर्दा होने पर मज़ाक नही किये जाते।

जनरल : मुझे पाठ नहीं पढ़ाओ ! जब तुम मरोगे, तो मैं नाचूँगा...

(तत्याना और नाद्या मेज़ के पास आती हैं)

लेव्शिन : बूढ़ा आदमी है!

अग्राफ़ेना (घर की तरफ़ जाते हुए) : उन्हें शरारतें करना बहुत पसंद है..

तत्याना (मेज़ के पास बैठते हुए) : लेव्शिन, क्या आप समाजवादी हैं?

लेव्शिन (सरल भाव से) : मैं? नहीं तो। मैं और यागोदिन–हम तो बुनकर हैं। जुलाहे हैं, जुलाहे...

तत्याना : आप समाजवादियों को जानते हैं? उनके बारे में सुना है?

लेव्शिन : हाँ, सुना तो है... जानते किसी को नहीं, मगर उनके बारे में सुना है!

तत्याना : दफ़्तर में वह जो सिन्त्सोव काम करता है, उसे जानते हैं?

लेव्शिन : जानते हैं। दफ़्तर के सभी लोगों को जानते हैं।

तत्याना : कभी उससे बातचीत हुई?

योगोदिन (बेचैन होते हुए) : उससे हमारी क्या बातचीत हो सकती थी? वह ऊपर काम करता है, हम नीचे। अगर हम दफ़्तर में जाते हैं, तो वह हमें यह बता देता है कि डायरेक्टर क्या चाहता है... बस, इतना ही जान-पहचान है !

नाद्या : लेव्शिन, ऐसा लगता है, जैसे कि आप हमसे डरते हों ? डरिये नहीं, हमें सचमुच बहुत ज्यादा दिलचस्पी है...

लेव्शिन : हम भला क्यों डरने लगे? कोई बुरा काम तो नहीं किया हमने। हमें यहाँ गड़बड़ रोकने के लिए बुलाया गया है। हम चले आये। वहाँ लोग गुस्से से पागल हुए जा रहे हैं। वे कहते हैं कि कारख़ाने को आग लगा देंगे, सब कुछ जला डालेंगे- राख के सिवा यहाँ कुछ भी बाक़ी नहीं रह जायेगा। हम ऐसी बेहूदगी के खिलाफ़ हैं। आग भला किसलिए लगायी जाये?... जलाया-फूँका क्यों जायें? खुद हमने अपने हाथों इन्हें बनाया है, हमारे बाप-दादा ने... और अचानक जला डाला जाये!

तत्याना : आप ऐसा तो नहीं सोचते कि हम किसी बुरे इरादे से यह पूछताछ कर रही हैं ?

यागोदिन : आप भला ऐसा क्यों करेंगी? हम तो खुद भी किसी का कुछ बुरा नहीं चाहते!

लेव्शिन : हम तो ऐसा सोचते हैं, लोगों ने जो कुछ अपने हाथों से बनाया है, वह सब पवित्र है। इनसान के खून-पसीने के फलों का हमें सम्मान करना चाहिए, उन्हें जलाना-फूँकना नहीं चाहिए। लोग अज्ञानता के मारे हुए हैं। उन्हें लपटें देखना अच्छा लगता है। गुस्से से बौखलाये हुए हैं। मरने वाला हम लोगों के साथ बहुत सख़्ती से पेश आता था। मुर्दे की बुराई नहीं करनी चाहिए, लेकिन वह हर वक़्त पिस्तौल दिखाता रहता था... धमकाता था।

नाद्या : और मेरे मौसा? वह बेहतर हैं?

यागोदिन : ज़खार इवानोविच?

नाद्या : हाँ! वह दयालु हैं? या वह भी... आपके दिलों को ठेस लगाते हैं?

लेव्शिन : हम ऐसा नहीं कह रहे हैं...

यागोदिन (उदासी से) : हमारे लिए ये सभी एक जैसे हैं। सख़्त और नर्म भी

लेव्शिन (स्नेहपूर्वक) : सख़्त भी मालिक है–नर्म भी मालिक है। बीमारी लोगों के बीच भेद नहीं करती...

यागोदिन (ऊब से) : ज़खार इवानोविच बेशक नर्मदिल हैं...

नाद्या : मतलब यह कि स्क्रोबोतोव से बेहतर है?

यागोदिन (धीरे से) : डायरेक्टर तो अब ज़िन्दा नहीं है...

लेव्शिन : कुमारी जी, आपके मौसा भले आदमी हैं... लेकिन हमारा... हमारा इसी से कुछ विशेष भला नहीं होता।

तत्याना (चिढ़कर) : चलो चलें, नाद्या... देखती नहीं कि ये हमारी बात समझना ही नहीं चाहते?

नाद्या (धीरे से) : हाँ...

(वे दोनों चुपचाप वहाँ से चली जाती हैं। लेव्शिन उन्हें जाते हुए, और फिर यागोदिन की तरफ़ देखता है। दोनों मुस्कराते हैं)

यागोदिन : परेशान कर डाला!

लेव्शिन : इनके लिए यह जानना दिलचस्प है कि...

यागोदिन : शायद ये सोचती होंगी कि हम कुछ बक देंगे।

लेव्शिन : लड़की तो भली है... अफ़सोस कि अमीर है!

यागोदिन : मात्वेई निकोलायेविच से सब कुछ बता देना चाहिए...कि श्रीमती तत्याना हमसे पूछताछ कर रही थीं...

लेव्शिन : और ग्रेकोव को भी बता देंगे।

यागोदिन : जाने नीचे क्या हालचाल है। मालिकों को झुकना पड़ेगा...

लेव्शिन : झुक जायेंगे मगर कुछ अरसे बाद फिर से चोट करेंगे।

यागोदिन : हाँ , हमारा गला दबायेंगे..

लेव्शिन : और तुम क्या समझते हो?

यागोदिन : हाँ..। नींद आ रही है।

लेव्शिन : अभी सोने की बात मत करो... देखो, जनरल आ रहा है।

(जनरल आता है। पोलोगी आदरपूर्वक उसके साथ-साथ पीछे चल रहा है। उनके पीछे कोन है। अचानक ही पोलोगी जनरल का हाथ थाम लेता है)

जनरल : क्या बात है?

पोलोगी : गड्ढा है!

जनरल : ओह!... मेज पर यह सब क्या है? कुछ बेहूदा-सी चीजें! तुम्हीं ने यह सब खाया है?

यागोदिन : जी, हुजूर! कुमारी जी ने भी हमारे साथ खाया है।

जनरल : हाँ तो? तुम लोग रखवाली कर रहे हो न?

यागोदिन : जी, सरकार!... हम पहरे पर हैं।

जनरल : अच्छी बात है। मैं राज्यपाल से तुम्हारी चर्चा करूँगा। कितने हो तुम लोग यहाँ?

लेव्शिन : दो।

जनरल : उल्लू! मुझे दो तक गिनती आती है... तुम कुल कितने लोग हो?

यागोदिन : तीस के क़रीब।

जनरल : हथियार हैं?

लेव्शिन (यागोदिन से) : तिमोफ़ेई, कहाँ है वह तुम्हारी पिस्तौल?

यागोदिन : यह रही।

जनरल : इसे घोड़े से मत पकड़ो... शैतान! कोन, इन पाजियों को पिस्तौल पकड़नी सिखाओ। **(लेव्शिन से)** तुम्हारे पास पिस्तौल है?

लेव्शिन : मेरे पास तो नहीं है!

जनरल : अगर बाग़ी अन्दर घुस आयें, तो तुम लोग गोली चलाओगे?

लेव्शिन : वे आयेंगे ही नहीं, सरकार... योंही जरा-सी देर के लिए भड़क उठे थे और बस।

जनरल : लेकिन अगर घुस आये, तो?

लेव्शिन : बात यह है कि ये लोग जल-भुन गये थे... कारख़ाना बन्द किये जाने के फ़ैसले से... कुछ के तो बाल-बच्चे हैं...

जनरल : यह तुम क्या बक-बक करते जा रहे हो? मैं पूछ रहा हूँ कि गोली चलाओगे या नहीं?

लेव्शिन : हम तो तैयार है, जनाब... चलायेंगे, क्यों नहीं? लेकिन चलाना नहीं जानते। और गोली चलाने के लिए हमारे पास कुछ है भी तो नहीं। कोई बंदूक होती... या फिर कोई तोप होती, तो भी बात थी।

जनरल : कोन ! इधर आओ, इन्हें पिस्तौल चलाना सिखाओ... उधर नदी की तरफ चले जाओ...

कोन (उदासी से) : हुजूर, मैं यह कहना चाहूँगा कि अब रात है। अगर हमने निशानेबाजी शुरू कर दी, तो लोग परेशान हो उठेंगे। यह देखने चले आयेंगे कि मामला क्या है। वैसे, आप जैसा चाहें।

जनरल : कल तक स्थगित कर दो!

लेव्शिन : कल तो सब कुछ शान्त हो जायेगा। कल तो कारख़ाना ही खुल जायेगा...

जनरल : कौन खोल देगा कारख़ाना?

लेव्शिन : ज़खार इवानोविच। इस समय वह मज़दूरों से यही बातचीत कर रहे हैं...

जनरल : बेड़ा ग़र्क! मैं तो सदा के लिए बन्द कर देता इस कारखाने को! सुबह-सुबह इसका भोंपू तो न बजता!...

यागोदिन : कुछ देर से बजे तो हमारे लिए भी अच्छा रहे।

जनरल : और मैं तुम सबको भूखों मारता! तुम्हारे दंगे-फसाद खत्म हो जाते!

लेव्शिन : क्या हम दंगा-फसाद करते हैं?

जनरल : चुप रहो! यहाँ खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? तुमको बाड़ के गिर्द चक्कर लगाना चाहिए... अगर कोई रेंगकर यहाँ आने की कोशिश करे तो गोली मार देना... जिम्मेदारी मेरी होगी!

लेव्शिन : चलो, तिमोफ़ेई! अपनी फ़िस्तौल ले लो।

जनरल (उनके पीछे बडबड़ाते हुए) : फ़िस्तौल नहीं, पिस्तौल.. गधे न हों कहीं के! हथियार का सही नाम भी नहीं जानते...

पोलोगी : हुजूर, मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि लोग-बाग आम तौर पर गंवार और जंगली होते हैं... अपने मामले का ही उदाहरण लेता हूँ-मेरा अपना बगीचा है, मैं वहाँ अपने हाथों से सब्जियाँ उगाता हूँ..

जनरल : यह तो बहुत तारीफ की बात है!

पोलोगी : सारा खाली वक़्त इसी काम में लगा देता हूँ...

जनरल : काम तो सभी को करना चाहिए!

(तत्याना और नाद्या आती हैं)

तत्याना (दूर से) : आप इस तरह चिल्ला क्यों रहे हैं?

जनरल : क्योंकि लोग मुझमें झल्लाहट पैदा करते हैं! **(पोलोगी से)** हाँ, तो?

पोलोगी : मगर लगभग हर रात ये मजदूर लोग मेरी मेहनत पर हाथ साफ़ कर जाते हैं...

जनरल : चुरा ले जाते हैं?

पोलोगी : जी, हुजूर! मैं कानून की दुहाई दे चुका हूँ, मगर बेकार। हमारे इलाके में कानून के रखवाले हैं जनाब थानेदार और वह लोगों की मुसीबतों की रत्ती भर भी परवाह नहीं करते...

तत्याना (पोलोगी से) : सुनिये, आप ऐसी भारी-भरकम भाषा क्यों बोलते हैं?

पोलोगी (घबराकर) : मैं? माफ़ी चाहता हूँ! तो... लेकिन मैं तो तीन बरस तक स्कूल में पढ़ा हूँ और हर रोज़ अख़बार पढ़ता हूँ...

तत्याना (मुस्कराते हुए) : ओह, तो यह मामला है!...

नाद्या : आप बड़े हास्यास्पद आदमी हैं, पोलोगी!

पोलोगी : अगर आपको खुशी मिलती है, तो मैं खुश हूँ! हर आदमी को दूसरों को खुशी देनी चाहिए...

जनरल : आपको मछलियाँ पकड़ना पसंद हैं?

पोलोगी : कभी कोशिश नहीं की, जनाब!

जनरल (कंधे झटककर) : अजीब जवाब है!

तत्याना : किस चीज़ की कोशिश नहीं की... मछलियाँ पकड़ने या किसी को पसंद करने की?

पोलोगी (संकोच से) : मछलियाँ पकड़ने की।

तत्याना : और पसंद करने की?

पोलोगी : वह तो करके देख चुका हूँ।

तत्याना : आप शादीशुदा हैं?

पोलोगी : शादी के तो सपने ही देखा करता हूँ... मगर क्योंकि सिर्फ़ पच्चीस रूबल महीना पाता हूँ, **(निकोलाई और क्लेओपात्रा जल्दी से अन्दर आते हैं)** इसलिए ऐसी हिम्मत नहीं कर पाता।

निकोलाई (गुस्से में) : बड़ी अजीब बात है! बिल्कुल अँधेरगर्दी है!

क्लेओपात्रा : उसने यह किया कैसे! उसकी यह हिम्मत कैसे हुई?

जनरल : क्या मामला है?

क्लेओपात्रा (चिल्लाते हुए) : आपका भानजा—बड़ा ही दब्बू आदमी है! उसने बलवाइयों की—मेरे पति के हत्यारों की—सभी माँगें मान ली हैं!

नाद्या (धीरे से) : मगर क्या वे सभी हत्यारे हैं?

क्लेओपात्रा : यह तो मेरे पति की लाश का मजाक उड़ाया जा रहा है... मेरी खिल्ली उड़ाई जा रही है! उस वक़्त कारख़ाना खोला जा रहा, जब उस व्यक्ति को दफ़नाया भी नहीं गया जिसकी इन कमीनों ने इसलिए हत्या की कि उसने कारखाना बन्द कर दिया था!

नाद्या : मगर मौसा को डर है कि वे आग लगाकर सब कुछ भस्म कर डालेंगे.

क्लेओपात्रा : आप बच्ची हैं... आपको चुप रहना चाहिए।

निकोलाई : और उस छोकरे का भाषण!... खुले तौर पर समाजवादी प्रचार था...

क्लेओपात्रा : एक क्लर्क उनका अगुआ है, वही उन्हें सलाह-मशविरा देता है.. उसने यह कहने की हिम्मत की कि मरने वाले ने ही लोगों को भड़काया था, इसीलिए जुर्म की नौबत आयी!

निकोलाई (नोटबुक में कुछ लिखते हुए) : उस पर मुझे शक होता है। मामूली क्लर्क इतना समझदार नहीं हो सकता....

तत्याना : आप सिन्त्सोव की चर्चा कर रहे हैं?

निकोलाई : हाँ।

क्लेओपात्रा : मुझे तो ऐसे महसूस होता है जैसे कि मेरे मुँह पर थूक दिया गया हो..

पोलोगी (निकालोई से) : मुझे यह निवेदन करने की इजाजत दीजिए कि श्रीमान सिन्त्सोव अख़बार पढ़ते हुए राजनैतिक विषयों की खूब लम्बी-चौड़ी चर्चा किया करते हैं और मालिकों को भला-बुरा कहते रहते हैं...

तत्याना (निकोलाई से) : आपको यह सुनना अच्छा लगता है न?

निकोलाई (चुनौती देते हुए) : हाँ, अच्छा लगता है!... आप क्या मुझे शर्मिन्दा करना चाहती हैं?

तत्याना : मेरे ख्याल से श्रीमान पोलोगी की यहाँ कोई जरूरत नहीं है...

पोलोगी (घबराकर) : मैं माफ़ी चाहता हूँ... अभी जा रहा हूँ! **(जल्दी से बाहर चला जाता है)**

क्लेओपात्रा : लो, वह इधर आ रहा है... मैं तो इसे देखना नहीं चाहती, देख नहीं सकती! **(झटपट बाहर चली जाती है)**

नाद्या : यह सब क्या हो रहा है?

जनरल : मुझ बूढ़े को ऐसे तमाशे देखने की उम्र नहीं रही। हत्यायें और दंगे-फ़साद करते हैं! आराम के लिए मुझे यहाँ बुलाने से पहले ज़ख़ार को इन सभी बातों का ख़्याल कर लेना चाहिए था...

(ज़ख़ार पास आ जाता है। वह उत्तेजित, मगर खुश है। निकोलाई को देखकर वह ठिठक जाता है और घबराकर ऐनक ठीक करने लगता है)

सुनो तो, मेरे प्यारे भानजे, समझते भी हो कि तुमने क्या गड़बड़ कर डाली है?

ज़ख़ार : जरा रुक जाइये, मामा जी... निकोलाई वसील्येविच!

निकोलाई : कहिये जनाब...

ज़ख़ार : मज़दूर लोग बहुत ग़ुस्से में थे...मुझे लगा कि वे सब कुछ तहस-नहस कर डालेंगे...इसलिए मैंने उनकी बात मान ली कि कारखाना बंद नहीं किया जायेगा। दिच्कोव के बारे में उनकी माँग भी मैंने स्वीकार कर ली है... मैंने इस शर्त पर ऐसा किया है कि वे अपराधी को हमें सौंप देंगे। वे मुजरिम की तलाश कर रहे हैं...

निकोलाई (रूखेपन से) : उन्हें इसकी तकलीफ़ करने की जरूरत नहीं। हत्यारे का तो हम उनकी मदद के बिना भी पता चला लेंगे।

ज़ख़ार : मैं तो यही बेहतर समझता हूँ कि वे खुद ही तलाश करके उसे हमारे हवाले कर दें... हमने कल दोपहर के खाने के बाद कारखाना खोलने का फैसला किया है...

निकोलाई : यह "हम" कौन हैं?

ज़ख़ार : मैं...

निकोलाई : आह... सूचना देने के लिए धन्यवाद... मगर मैं यह समझता हूँ कि मेरे भाई की मौत के बाद मुझे और उसकी बीवी को उसकी जगह मिलनी चाहिए। यक़ीनन आपको हम दोनों ही सलाह लेनी चाहिए थी–अकेले ही फ़ैसला नहीं करना चाहिए था...

ज़ख़ार : मगर मैंने आपको बुलाया तो था। सिन्त्सोव आपको बुलाने गया था... लेकिन आपने आने से इनकार कर दिया था...

निकोलाई : भाई की मौत के दिन मुझसे कारोबार की बात करने की आशा करना तो सरासर ज्यादती थी!

ज़खार : मगर कारखाने में तो आप गये ही थे।

निकोलाई : हाँ, गया था। उनके भाषण सुने थे... तो क्या हुआ?

ज़ख़ार : लेकिन समझिये तो–पता चला है कि आपके भाई ने नगर के अफ़सरों को तार दिया था... फ़ौजी भेजने के लिए। उनका जवाब भी आ गया है– कल दोपहर तक फ़ौजी यहाँ आ जायेंगे...

जनरल : आहा! फौजी? यह हुई न काम की बात! फ़ौजी–यह कोई मज़ाक नहीं!

निकोलाई : यह अक्लमंदी का काम है...

ज़ख़ार : कह नहीं सकता! फौजी आयेंगे... मज़दूर और अधिक भड़केंगे... अगर हम कल कारखाना नहीं खोलेंगे, तो भगवान ही जानता है कि क्या नतीजा होगा! मैं समझता हूँ कि मैंने ठीक क़दम उठाया है... कम से कम खून-खराबा तो न होगा...

निकोलाई : मेरा ख़्याल इसके उलट है... मैं समझता हूँ कि आपको... उन लोगों की बात नहीं माननी चाहिए थी–और कुछ नहीं, तो मरनेवाले की स्मृति का आदर करते हुए ही...

ज़ख़ार : ओह, मेरे भगवान... मगर आप इसके बारे में क्यों कुछ नहीं कहते कि ऐसी परिस्थिति के और भी बुरे नतीजे हो सकते थे!

निकोलाई : मेरी बला से।

ज़ख़ार : यह ठीक है... मगर मुझे तो? मुझे तो मज़दूरों के साथ ही निबाह करना होगा! और अगर उनका खून बहाया जायेगा... तो वे कारखाने की ईंट से ईंट बजा देंगे!

निकोलाई : मुझे इसका विश्वास नहीं होता।

जनरल : मैं भी यही सोचता हूँ!

ज़ख़ार (दुखी होकर) : तो आप लोग मुझे ही दोषी समझते हैं?

निकोलाई : हाँ, मैं तो यही समझता हूँ!

ज़ख़ार (निष्कपटता से) : क्या जरूरत है... क्या जरूरत है दुश्मनी की? मैं तो सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि दंगे-फ़साद से, खून-खराबे से बचा जाये। क्या शान्ति और समझदारी के जीवन को व्यावहारिक रूप देना असम्भव है? आप मुझे घृणा की दृष्टि से देखते हैं और मज़दूर अविश्वास की.... लेकिन मैं तो सिर्फ़ भलाई चाहता हूँ, सिर्फ़ भलाई!

जनरल : यह भलाई क्या है, कौन जानता है? यह तो है एक बेतुका-सा शब्द। असली चीज है–काम करो...क्यों, है न यही बात?

नाद्या (आँसू भरकर) : आप चुप रहिये, नाना जी! इनकी बातों पर कुछ ध्यान न दें, मौसा जी... यह कुछ भी नहीं समझते!... निकोलाई वसील्येविच, आप समझते क्यों नहीं यह बात? आप इतने समझदार हैं... आप क्यों नहीं विश्वास करते मौसा पर?

निकोलाई : माफ़ी चाहता हूँ, मगर मैं जा रहा हूँ, ज़ख़ार इवानोविच। कारोबारी मामलों में बच्चों का दख़ल देना मुझे कतई पसन्द नहीं है...(चला जाता है)

ज़ख़ार : देखा तुमने, नाद्या?

नाद्या (ज़ख़ार का हाथ थामते हुए) : कोई बात नहीं, कोई बात नहीं.. असली चीज तो यह है कि मज़दूर सन्तुष्ट हो जायें... वे इतने ज्यादा हैं, हमसे कहीं ज्यादा!

ज़खार : जरा रुको.. मुझे तुमसे कहना ही होगा... मैं बहुत नाराज हूँ तुमसे!

जनरल : और मैं भी!

ज़खार : तुम्हें मज़दूरों के साथ हमदर्दी है... तुम्हारी उम्र में यह स्वाभाविक है। मगर, प्यारी बेटी, तुम्हें एक हद से आगे नहीं बढ़ना चाहिए! आज सुबह तुम उसे- उस ग्रेकोव को- अपने साथ ले आयीं... मैं उसे जानता हूँ। अच्छा समझदार नौजवान है। मगर उसके लिए तुम्हें अपनी मौसी से तो अच्छा खासा तमाशा नहीं करना चाहिए था।

जनरल : अच्छी तरह से खबर लो इसकी!

नाद्या : मगर पूरी तफ़सील तो आप जानते नहीं...

ज़खार : तुम यकीन करो कि तुमसे कहीं ज्यादा जानता हूँ। हमारे लोग बड़े गँवार और उजड्ड हैं... तुम्हारे उँगली पकड़ाते ही वे पंजा पकड़ लेंगे...

तत्याना (धीरे से) : वैसे ही जैसे कि डूबता हुआ आदमी तिनको को पकड़ता है।

ज़खार : वे जानवरों की तरह लालची हैं। हमें उन्हें बिगाड़ना नहीं, सभ्य बनाना चाहिए. ..समझीं! मेहरबानी करके इस बात पर विचार करना।

जनरल : तुम कह चुके, अब मेरी बारी है। अरी ओ लोमड़ी! मेरे साथ तो तुम बहुत बुरे ढंग से पेश आती हो, कल की छोकरी! मैं तुम्हें यह याद दिलाना चाहता हूँ कि कोई चालीस साल बाद तुम्हारी मेरे बराबर उम्र होगी... तब शायद मैं तुम्हें बराबरी के नाते बात करने दूँ। समझ गयी? कोन!

कोन (पेड़ों के बीच से) : यह रहा, सरकार!

जनरल : वह कहाँ गया... क्या नाम है उसका?. वह पेचकस।

कोन : कौन सा पेचकस?

जनरल : वह... मैं उसका नाम भूल गया... वह पो...पो

कोन : ओह, पोलोगी! मालूम नहीं।

जनरल (तम्बू की तरफ़ जाते हुए) : उसे तलाश करो!

(ज़खार सिर झुकाये हुए इधर-उधर टहलता है और अपने रूमाल से ऐनक का शीशा साफ़ करता है। नाद्या विचारों में डूबी हुई कुर्सी पर बैठी है। तत्याना खड़ी-खड़ी उन्हें देखती है)

तत्याना : हत्यारे का पता चल गया?

जखार : वे कहते हैं कि उन्हें मालूम नहीं, मगर पता लगा लेंगे... वे जानते तो ख़ैर सब कुछ हैं। मेरे ख्याल में...**(वह इधर-उधर देखता और धीमी आवाज में कहता है)** : मेरे ख्याल में तो उन सबने मिलकर ऐसा फ़ैसला किया था... साजिश है! यह सच है कि

स्क्रोबोतोव ने उन्हें चिढ़ाया-भड़काया- वह तो उनकी खिल्ली भी उड़ाता था... ताक़त का नशा उसके लिए एक बीमारी बन चुका था.. और इसलिए उन्होंने... बड़ी भयानक बात है, बड़ी सरल-सी लगने वाली, मगर भयानक बात है। आदमी की हत्या कर डाली, फिर भी बड़े विश्वास के साथ इस तरह आँखों में आँखें डालकर देखते हैं मानो उन्होंने कुछ किया ही नहीं... दिल दहलाने वाली सरलता है!

तत्याना : सुना है कि स्क्रोबोतोव गोली चलाने ही वाला था, जब किसी ने उसके हाथ से पिस्तौल छीन ली और...

ज़खार : इससे क्या फ़र्क पड़ता है? गोली तो उन लोगों ने चलायी... स्क्रोबोतोव ने नहीं.

नाद्या : आप बैठ क्यों नहीं जाते?

ज़खार : उसने फ़ौजी क्यों बुलाये? उन्होंने यह मालूम कर लिया... वे सब कुछ जानते हैं! इससे उसकी मौत और भी जल्दी आ गयी। मुझे तो खैर कारखाना खोलना ही पड़ा.. ऐसा न करता, तो बहुत देर के लिए उनके साथ मेरे सम्बन्ध भी बिगड़ जाते। आज के ज़माने में मज़दूरों से ज़्यादा नर्मी से पेश आना चाहिए, उनसे अच्छा बर्ताव करा चाहिए.. कौन जाने, क्या अन्त हो? आज के ज़माने में समझदार आदमी को आम लोगों में अपने दोस्त बनाने चाहिए...

(मंच के पिछवाड़े में लेव्शिन दिखाई देता है)

कौन है वहाँ?

लेव्शिन : हम हैं... पहरा दे रहे हैं।

ज़खार : कहो लेव्शिन, एक आदमी की जान लेकर अब तो कलेजा ठण्डा हो गया तुम लोगों का? हो गये ने शान्त?

लेव्शिन : हम लोग तो हमेशा ही ऐसे शान्त रहते हैं, ज़ख़ार इवानोविच।

ज़खार **(भर्त्सना करते हुए)** : हाँ। और हत्या भी शान्ति से ही करते हैं? अरे हाँ, मैंने सुना है कि तुम कुछ नये-नये विचारों का प्रचार करते रहते हो कि रुपया-पैसा सब बेकार है, मालिकों और अफ़सरों की कोई जरूरत नहीं है, इत्यादि... लेव तोलस्तोय अगर ऐसी बातें करें, तो माफ़ किया जा सकता है... मेरा मतलब, बात कुछ समझ में आती है... मगर, मेरे दोस्त, तुम यह सब बन्द कर दो ! कुछ भला नहीं होगा तुम्हारा इन बातों से।

(तत्याना और नाद्या **दायीं तरफ़ से बाहर चली जाती हैं। वहाँ से सिन्त्सोव और याकोव** की आवाज़ें **सुनाई देती हैं। वृक्षों के पीछे से यागोदिन सामने आता है)**

लेव्शिन (शान्त भाव से) : कौन-सी खास बातें करता हूँ मैं? मैंने भी जीवन बिताया है, कुछ सोचा-विचारा है और वही कहता हूँ...

ज़ख़ार : मालिक दरिन्दे नहीं होते, तुम्हें यह बात समझ लेनी चाहिए...तुम जानते हो, मैं बुरा आदमी नहीं हूँ, हमेशा तुम लोगों की मदद करने को तैयार रहता हूँ, मैं भलाई चाहता हूँ...

लेव्शिन (आह भरकर) : कौन अपनी बुराई चाहता है?

ज़ख़ार : तुम समझो-मैं तुम्हारी, तुम लोगों की भलाई चाहता हूँ!

लेव्शिन : हम समझते हैं...

ज़ख़ार (गौर से उसे देखते हुए) : नहीं, तुम ग़लती कर रहे हो। तुम लोग ऐसा नहीं समझते। बड़े अजीब लोग हो तुम ! कभी दरिन्दे, तो कभी बच्चे...**(बाहर जाता है)**

(लेव्शिन लाठी का सहारा लेकर ज़ख़ार को जाते देखता है)

यागोदिन : एक और उपदेश पिला गया?

लेव्शिन : कुछ भी समझ में नहीं आता... कुछ भी नहीं... न जाने, कहना क्या चाहता है? वह अपने सिवा कुछ भी नहीं समझ सकता...

यागोदिन : कहता है कि भलाई चाहता है...

लेव्शिन : हाँ, हाँ!

यागोदिन : आओ चलें... वे लोग इधर आ रहे हैं!...

(लेव्शिन और यागोदिन बगीचे में दूर चले जाते हैं। तत्याना, नाद्या, याकोव और सिन्त्सोव मंच पर दायीं ओर दिखाई देते हैं)

नाद्या : हम लोग यों ही चक्कर काटे जा रहे हैं, ऐसे चलते जा रहे हैं... मानो सपने में घूम रहे हों।

तत्याना : कुछ खाना पसन्द करेंगे, मात्वेई निकोलायेविच?

सिन्त्सोव : अगर चाय का एक गिलास मिल जाये,तो अच्छा रहे...आज मैं। इतना अधिक बोला हूँ कि गले में दर्द होने लगा है।

नाद्या : आपको किसी चीज़ से डर नहीं लगता?

सिन्त्सोव (मेज़ के पास बैठते हुए) : मुझे? किसी चीज़ से डर नहीं लगता!

नाद्या : लेकिन मुझे डर लगता है!...सभी कुछ गड़बड़-घुटाला हो गया है... अब मेरी

समझ में नहीं आता कि कहाँ अच्छे लोग हैं और कहाँ बुरे।

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए) : सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा। केवल आप सोचने से नहीं घबरायें... निडर होकर और हर चीज़ की तह तक सोचिये!... कुल मिलाकर डरने की कोई बात नहीं है।

तत्याना : आपके ख्याल में मामला ठंडा पड़ चुका है?

सिन्त्सोव : हाँ। मज़दूरों की तो जीत ही कभी-कभार होती है। और फिर मामूली-सी जीत से वे बहुत ज्यादा सतुष्ट हो जाते हैं...

नाद्या : आपको अच्छे लगते हैं ये मजदूर लोग?

सिन्त्सोव : आप अच्छे लगने की बात कह रही हैं। मैं लम्बे अरसे तक इनके साथ रहा हूँ, मैं इन्हें खूब पहचानता हूँ, इनकी ताकत को अच्छी तरह जानता हूँ... मुझे इनकी समझ-बूझ का भी विश्वास है।...

तत्याना : इस बात का भी विश्वास है कि भविष्य इन्हीं के हाथों में है?

सिन्त्सोव : हाँ, इस बात का भी।

नाद्या : भविष्य... मैं इसकी कल्पना करने में असमर्थ हूँ।

तत्याना (व्यंगपूर्वक मुस्कराते हुए) : बड़े चालाक हैं आपके ये सर्वहारा ! मैंने और नाद्या ने उनसे बातचीत करने की कोशिश की... मगर बड़ा अटपटा नतीजा निकला...

नाद्या : हमें वह अच्छा नहीं लगा। बूढ़े ने हमसे यों बातचीत की मानो हम कोई बुरे लोग... कोई जासूस हों। मगर एक और साथी है इनका... ग्रेकोव... वह इस ढंग से पेश नहीं आता। बूढ़ा तो इस तरह मुस्कराता रहता है, मानो हम पर तरस खा रहा हो, जैसे कि हम रोगी हों, बीमार हों!...

तत्याना : तुम इतनी अधिक नहीं पियो, याकोव! देखना भी अच्छा नहीं लगता।

याकोव : तो मैं क्या करूँ?

सिन्त्सोव : तो क्या और कुछ नहीं करने को?

याकोव : कारोबार और कामकाज से मुझे नफरत है... सख़्त नफ़रत है बात यह है कि मैं तीसरी श्रेणी के लोगों में से हूँ...

सिन्त्सोव : वह कैसे?

याकोव : बस, ऐसे ही! लोगों को तीन श्रेणियों में बाँटा जाता है-कुछ उम्रभर काम करते हैं, दूसरे रुपया जोड़ते हैं, तीसरे रोटी कमाने के लिए काम नहीं करते- वे इसे बेकार समझते हैं!- ये लोग रुपया भी नहीं जोड़ सकते, क्योंकि यह बेवकूफी की और बेहूदा बात है। तो मैं तीसरी श्रेणी के इन्हीं लोगों में से हूँ। काहिल, उठाईगीरे, साधु-संन्यासी, भिक्षमंगे और दुनिया के दूसरे निखट्टू इसी श्रेणी में हैं।

नाद्या : आप ऐसी उबा देने वाली बातें क्यों करते हैं, मौसा? आप बिल्कुल ऐसे नहीं हैं।

बड़े नर्मदिल, बड़े दयालु हैं आप।

याकोव : दूसरे शब्दों में किसी काम का आदमी नहीं हूँ। यह तो मैंने स्कूल के दिनों में ही समझ लिया था। बड़े होने से पहले ही लोग इन तीन श्रेणियों में बँट जाते हैं...

तत्याना : नाद्या ने ठीक ही कहा है कि तुम उबा देने वाली बातें करते हो, याकोव..

याकोव : मैं सहमत हूँ मात्वेई निकोलायेविच, आपका क्या ख्याल है, जिन्दगी की कोई शक्ल, कोई सूरत होती है?

सिन्त्सोव : हो सकती है...

याकोव : होती है। सदा जवान चेहरा होता है इसका। अभी कुछ ही वक्त पहले तक जिन्दगी मेरे प्रति उदासीन थी। मगर अब कड़ाई से देखती और पूछती है... पूछती है-"तुम हो कौन? किधर मुँह उठाये जा रहे हो?" **(किसी कारणवश वह भयभीत-सा हो उठता है। मुस्कराना चाहता है, तो उसके होंठ काँपते हैं, वह अपनी बात नहीं कह पाता, उसकी सूरत बिगड़ जाती है और मुद्रा कारुणिक हो उठती है)**

तत्याना : ओह, हटाओ भी, याकोव!.. लो, सरकारी वकील आ रहा है... उसके सामने तुम ऐसी बातें मत करना।

याकोव : ठीक है।

नाद्या (धीरे से) : सभी किसी चीज़ के इंतजार में हैं...और डरते हैं। मुझे मज़दूरों से मिलने-जुलने क्यों नहीं दिया जाता? यह मूर्खता है!

निकोलाई (पास आकर) : चाय का एक गिलास मिल सकता है?

तत्याना : जरूर मिल सकता है।

(कुछ क्षण तक सभी चुप बैठे रहते हैं। निकोलाई खड़ा-खड़ा चाय में चम्मच हिलाता रहता है)

नाद्या : मैं यह जानना चाहती हूँ कि मज़दूर मौसा पर विश्वास क्यों नहीं करते, और कुल मिलाकर...

निकोलाई (खिन्न होकर) : ये लोग उन्हीं पर विश्वास करते हैं, जो इस विषय पर भाषण देते हैं-"दुनिया के मज़दूरों, एक हो!..." इन पर ये खूब विश्वास करते हैं!

नाद्या (धीरे से कंधे झटककर) : जब मैं ये शब्द, मज़दूरों के एक हो जाने का यह नारा सुनती हूँ... तो मुझे लगता है मानो इस दुनिया मे हम-फ़ालतू हैं..

निकोलाई (जोश में आकर) : बिल्कुल ठीक! हर सभ्य आदमी को ऐसा ही अनुभव करना चाहिए... और मेरा ख्याल है कि जल्द ही एक दूसरा नारा सुनाई देगा-"दुनिया के तमाम सभ्य लोगों, एक हो!" अब यह नारा लगाने का वक्त आ गया है! बिल्कुल वक्त आ गया है। ये जंगली और वहशी लोग हजारों बरसों की सभ्यता को तहस-नहस करते, पैरों तले रौंदते हुए आगे बढ़ रहे हैं, सब कुछ हड़प जाने की चाह लेकर...

याकोव : इनकी आत्मायें इनके पेटों में बसती हैं, इनके पिचके हुए भूखे पेटों में... इनके ये पेट देखकर ही जाम की तरह हाथ बढ़ जाता है। **(बियर का एक गिलास ढालता है)**

निकोलाई : लोगों की भीड़ बढ़ी आ रही है, लालच की शिकार होकर, एक ही इच्छा से एकता के सूत्र में बँधती हुई-खाने-हड़पने की इच्छा से प्रेरित होकर!

तत्याना (सोचते हुए) : भीड़... जहाँ देखो, वहीं भीड़ है-थियेटरों में, गिरजाघरों में..

निकोलाई : ये लोग अपने साथ क्या ला सकते हैं? बरबादी, सिर्फ़ बरबादी... और देख लेना कि दूसरों की अपेक्षा हमारे यहाँ यह बरबादी कहीं अधिक बुरी तरह होगी...

तत्याना : इन मज़दूरों के बारे में जब यह सुनती हूँ कि वे अग्रणी लोग हैं तो मुझे हमेशा ही बड़ा अजीब-सा लगता है! यह मेरी समझ के बाहर की बात है.

निकोलाई : और आप श्रीमान सिन्त्सोव... ज़ाहिर है कि आप तो हमसे सहमत नहीं होंगे?...

सिन्त्सोव (शान्त भाव से) : मैं सहमत नहीं हूँ।

नाद्या : मौसी तत्याना, आपको याद है न, पैसे के बारे में उस बूढ़े ने क्या कहा था? कितनी सादगी थी उसकी बात में!

निकोलाई : आप हमसे क्यों सहमत नहीं, श्रीमान सिन्त्सोव?

सिन्त्सोव : क्योंकि मेरा सोचने का ढंग दूसरा है।

निकोलाई : बहुत वाजिब जवाब है! मगर शायद आप हमें अपने विचार बताना चाहेंगे?

सिन्त्सोव : नहीं, मेरा मन नहीं चाहता।

निकोलाई : बहुत अफ़सोस की बात है। मुझे आशा है कि जब हम फिर मिलेंगे, तो आपका मूड बदला हुआ होगा। याकोव इवानोविच, यदि सम्भव हो, तो आपसे अनुरोध करता हूँ कि मुझे घर तक छोड़ आइये! मेरा तो बहुत ही बुरा हाल है- नसें जैसी फटी जा रही हैं...

याकोव (मुश्किल से उठते हुए) : बड़ी खुशी से। बड़ी खुशी से।

(वे बाहर जाते हैं)

तत्याना : यह सरकारी वकील बड़ा ही नीच है। इसके साथ सहमत होना मुझे बुरा लगता है।

नाद्या (उठते हुए) : तो फिर क्यों सहमत होती हैं?

सिन्त्सोव (हँसते हुए) : हाँ, क्यों सहमत होती हैं, तत्याना पाव्लोवना?

तत्याना : इसलिए कि मैं उसी की तरह महसूस करती हूँ...

सिन्त्सोव (तत्याना से) : आप सोचती तो उसी की तरह हैं, मगर महसूस दूसरी तरह करती हैं। आप समझना चाहती हैं, मगर वह ऐसा नहीं चाहता... उसे समझने की जरूरत नहीं है!

तत्याना : शायद बड़ा ही जालिम आदमी है वह।

सिन्त्सोव : हाँ। शहर में वह राजनैतिक मुक़दमों की पैरवी करता है। बहुत ही बुरा रवैया होता है उसका बन्दियों के प्रति।

तत्याना : हाँ, आपके बारे में भी उसने अपनी नोटबुक में कुछ लिखा था।

सिन्त्सोव (मुस्कराकर) : ज़रूर लिखा होगा। पोलोगी से बातचीत करता रहता है... कुल मिलाकर कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता! तत्याना पाव्लोव्ना, मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहता हूँ...

तत्याना : कृपया कीजिये, यक़ीन मानिये, अगर मैं उसे पूरा कर सकती हूँ, तो खुशी से करूँगी!

सिन्त्सोव : धन्यवाद। मेरे ख़्याल में फ़ौजी बुला लिये गये हैं...

तत्याना : हाँ।

सिन्त्सोवा : इसका मतलब है कि घरों की तलाशी ली जायेगी... मेरी कुछ चीज़ें आप अपने पास छिपा सकेंगी?

तत्याना : आपके ख़्याल में वे आपके घर की तलाशी लेंगे?

सिन्त्सोव : बेशक लेंगे।

तत्याना : गिरफ़्तार भी कर सकते हैं?

सिन्त्सोव : ऐसा तो मैं नहीं सोचता। किसलिए?... क्या इसलिए कि मैंने भाषण दिये? ज़ख़ार इवानोवच जानते हैं कि मैंने अपने सभी भाषणों में मज़दूरों से अनुशासन में रहने को कहा है...

तत्याना : और आपका अतीत?... उसमें सब ठीक-ठाक है?

सिन्त्सोव : अतीत तो मेरा है ही नहीं... तो आप मेरी मदद कर सकती हैं? मैं आपको कष्ट तो न देता... लेकिन मेरा ख्याल है कि जो इन चीजों को छिपा सकते हैं, कल उनकी भी तलाशी ली जायेगी। **(धीरे से हँसता है)**

तत्याना (घबराकर) : मैं साफ़-साफ़ बात करना चाहती हूँ... इस घर में मेरी जो स्थिति है, उसके अनुसार मैं अपने कमरे को अपना नहीं मान सकती...

सिन्त्सोव : मतलब यह कि छिपा नहीं सकतीं? खैर, कोई बात नहीं...

तत्याना : कृपया बुरा नहीं मानिये!

सिन्त्सोव : ओह, नहीं! आपके इनकार को समझा जा सकता है...

तत्याना : लेकिन जरा रुकिये, मैं नाद्या से पूछती हूँ...**(बाहर जाती है)**

(सिन्त्सोव उसे बाहर जाते देखता है और मेज पर हाथ से ताल देता है। किसी के फूंक-फूंककर कदम रखते हुए पास आने की आवाज सुनाई देती है)

सिन्त्सोव (धीरे से) : कौन है?

ग्रेकोव : मैं हूँ। आप अकेले हैं?

सिन्त्सोव : हाँ, मगर आस-पास बहुत से लोग हैं... कारखाने की क्या खबर है?

ग्रेकोव (ज़रा हँसकर) : यह तो आपको मालूम ही है कि उन्होंने गोली चलाने वाले को ढूँढने का फ़ैसला किया है। अब वहाँ उसकी तलाश हो रही है। कुछ लोग शोर मचा रहे हैं कि "समाजवादियों ने उसकी हत्या की है!"—कुल मिलाकर कमीने लोग अपना घिनौना राग अलापने लगे हैं।

सिन्त्सोव : आपको मालूम है—किसने गोली चलायी है?

ग्रेकोव : अकीमोव ने।

सिन्त्सोव : सच?... ओह... उससे तो मुझे ऐसी आशा न थी! ऐसा भला और समझदार नौजवान है...

ग्रेकोव : गर्ममिज़ाज है वह। अपने को पेश करना चाहता है... उसकी बीवी है, एक बच्चा है... दूसरा बच्चा होने वाला है... अभी-अभी मेरी लेव्शिन से बात हुई है। वह तो हवाई बातें करता है—कहता है कि अकीमोव की जगह किसी दूसरे, किसी कम जरूरी आदमी को पेश कर देना चाहिए...

सिन्त्सोव : अजीब आदमी है... मगर यह है बहुत अफ़सोस की बात!

(खामोशी)

सुनिये ग्रेकोव, सब कुछ ज़मीन में गाड़ दीजिये... कोई दूसरी जगह नहीं है छिपाने के लिए।

ग्रेकोव : मुझे जगह मिल गयी है। तार-बाबू सब कुछ रखने को तैयार हो गया है। मगर आपको यहाँ से खिसक जाना चाहिए, मात्वेई निकोलायेविच!

सिन्त्सोव : नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊँगा।

ग्रेकोव : आपको गिरफ़्तार कर लेंगे।

सिन्त्सोव : कर लें! मेरे खिसक जाने से मज़दूरों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

ग्रेकोव : यह तो सही है... लेकिन आपके लिए अफ़सोस होता है...

सिन्त्सोव : यह बेकार की बात है। मगर अकीमोव के लिए जरूर अफ़सोस होता है।

ग्रेकोव : हाँ। और हम उसकी कुछ भी मदद नहीं कर सकते। वह अपने को पेश करना चाहता है... हँसी आती है आपको मालिकों की मिल्कियत के रक्षा संचालक के रूप में देखकर!

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए) : मजबूरी जो ठहरी! लगता है कि मेरे साथी सो रहे हैं?

ग्रेकोव : नहीं, इकट्ठे होकर सोच-विचार कर रहे हैं। रात बड़ी सुहावनी है!

सिन्त्सोव : मैं भी यहाँ से चला गया होता... मगर इंतजार कर रहा हूँ... शायद आपको भी गिरफ़्तार कर लिया जायेगा।

ग्रेकोव : इकट्ठे ही जेल काटेंगे! मैं चल दिया। **(बाहर जाता है)**

सिन्त्सोव : अलविदा।

(तत्याना आती है)

तत्याना पाव्लोव्ना, आपको कष्ट करने की जरूरत नहीं। सब इंतजाम हो गया है। अलविदा!

तत्याना : मुझे सचमुच बहुत अफ़सोस है...

सिन्त्सोव : शुभरात्रि **(बाहर जाता है)**

(तत्याना सैंडलों की नोक को देखते हुए चुपचाप इधर-उधर टहलती है। याकोव आता है)

याकोव : तुम सोती क्यों नहीं?

तत्याना : मन नहीं करता। मैं तो यहाँ से जाने की सोच रही हूँ...

याकोव : हूँ। लेकिन मेरे जाने की कोई जगह नहीं... मैं तो सभी महाद्वीप, सभी द्वीप पार कर आया हूँ।

तत्याना : यहाँ जीना मुश्किल है। हर चीज़ डोलती है और अजीब ढंग से सिर चकराता है। झूठ बोलना पड़ता है और मुझे पसंद नहीं।

याकोव : हूँ... तुम्हें यह पसन्द नहीं... यह मेरा दुर्भाग्य है... मेरी बदक़िस्मती है...

तत्याना (अपने आपसे) : मगर अभी-अभी मैंने झूठ बोला है। नाद्या उन चीज़ों को छिपाने के लिए निश्चय ही तैयार हो जाती... लेकिन मुझे कोई अधिकार नहीं है उसे उस राह पर धकेलने का।

याकोव : यह तुम किसकी चर्चा कर रही हो?

तत्याना : मैं? यौंही... सब कुछ बहुत अजीब है... कुछ समय पहले तक हर चीज़ साफ़ और सीधी-सादी लग रही थी, इच्छाएँ स्पष्ट थीं...

याकोव (धीरे से) : प्रतिभाशाली पियक्कड़ों, प्यारे निठल्लों और खुशी देने वाले ऐसे ही दूसरे लोगों में अब दुनिया की दिलचस्पी नहीं रही!... जब तक हम हर दिन की ज़िन्दगी की ऊब मिटाते रहे, लोग हमारी तरफ़ खिंचे रहे... मगर जिन्दगी में दिन पर दिन अधिक उथल-पुथल होती जा रही है... लोग हम पर आवाज़ें कसने लगे हैं -"ओ मसख़रों, ओ मौजियों, मंच से हट जाओ!.." मगर मंच- वह तो तुम्हारा क्षेत्र है, तत्याना!

तत्याना (बेचैनी से) : मेरा क्षेत्र?... मैं सोचती थी कि मंच पर मेरे पाँव अच्छी तरह जमे हुए हैं... मैं काफ़ी ऊपर उठ सकती हूँ... **(दुखी होते हुए, ज़ोर से)** उन लोगों के सामने मेरे दिल को बड़ी ठेस लगती है, झेंप महसूस होती है जो बुझी-बुझी नज़रों से मेरी ओर देखते हैं और चुपचाप यह कहते हैं- "हम यह जानते हैं। यह सब पुराना और ऊबभरा है!" उनके सामने मेरा दिल बैठ जाता है, अपने को निहत्था अनुभव करती हूँ... मैं उन्हें अपने साथ नहीं बहा सकती, उनके दिलों में तूफ़ान पैदा नहीं कर सकती!... मैं डर और खुशी से काँपना चाहती हूँ, मैं आग, जोश और नफ़रत से भरे शब्द बोलना चाहती हूँ... मैं छुरी की तरह तेज़ और लपटों की तरह दहकते शब्द बोलना चाहती हूँ, मैं दिल खोलकर और दहशत पैदा करते हुए लोगों के सामने इनकी बौछार करना चाहती हूँ!.. लोग भड़क उठें, चीखें-चिल्लायें, भागें-दौड़ें!... मगर ऐसे शब्द ही नहीं हैं। मैं उन्हें रोक लूँगी और फिर से आशा, प्यार और खुशी से भरे फूलों की तरह खूबसूरत शब्द उनके सामने बिखरा दूँगी! वे आँसू बहायेंगे... और मैं भी... प्यारे-प्यारे आँसू बहाऊँगी!... वे वाह-वाह कर उठेंगे, मुझे फूलों से लाद देंगे... हवा में उछालेंगे... घड़ी भर के लिए लोग पूरी तरह से मेरी मुट्ठी में होंगे... घड़ी भर के लिए मुझे जिन्दा होने का एहसास हो सकेगा... इसी एक क्षण में मेरी सारी ज़िन्दगी होगी! मगर ऐसे जानदार शब्द ही नहीं हैं।

याकोव : हम सभी केवल क्षणों में जीना जानते हैं...

तत्याना : जो कुछ बढ़िया है, वह सदा क्षणिक ही होता है। कितना चाहती हूँ मैं दूसरे ही ढंग के लोग देखना-दूसरों की मदद को दौड़ने वाले लोग-दूसरे ढंग की ज़िन्दगी, ऐसी दौड़-धूप वाली नहीं.... ऐसी जिन्दगी जिसमें कला सभी के लिए और हमेशा जरूरी हो! ताकि मैं फ़ालतू न मानी जाऊँ...

(याकोव आँखें फाड़-फाड़कर अँधेरे में घूरता है)

तुम इतनी ज्यादा क्यों पीते हो? शराब ने तुम्हें तबाह कर डाला... कभी तुम खूबसूरत आदमी थे...

याकोव : हटाओ...

तत्याना : तुम महसूस करते हो कि मेरे दिल पर क्या गुजरती है ?

याकोव (भयपूर्ण मुद्रा बनाकर) : चाहे मैं कितनी भी क्यों न पिये रहूँ, समझता सब कुछ हूँ... यही मेरा दुर्भाग्य है। कमबख़्त दिमाग़ तो हठपूर्वक काम करता रहता है... हमेशा काम करता रहता है! और हर समय मेरी आँखों के सामने एक तोबड़ा-चौड़ा, बहुत बड़ी-बड़ी आँखों वाला और गन्दा तोबड़ा-उभरता रहता है। वह पूछता रहता है—"तो?" समझती हो, सिर्फ इतना ही पूछा करता है—"तो?"

पोलीना (भागती हुई आती है) : तत्याना!... मैं मिन्नत करती हूँ, जल्दी से उधर चलो, तत्याना... वह क्लेओपात्रा तो बिल्कुल पागल हो गयी है! सभी की बेइज्जती कर रही है... शायद तुम उसे शान्त कर सको।

तत्याना (दुखी होकर) : मुझे तो अपने पचड़ों से अलग ही रहने दो! तुम लोग जल्दी से एक दूसरे को नोच खाओ, मगर इधर-उधर भागते नहीं फिरो, दूसरों के आड़े मत आओ!

पोलीना (चौंककर) : तत्याना! यह तुम क्या कह रही हो? तुम्हें क्या हो गया है?

तत्याना : आप लोग क्या चाहते हैं? क्या चाहिए आपको?

पोलीना : ज़रा उसे देखो तो... वह इधर आ रही है!

ज़ख़ार (मंच पर अभी नज़र न आते हुए) : मैं आपकी मिन्नत करता हूँ, अब तो चुप हो जाइये।

क्लेओपात्रा (मंच से बाहर ही) : आपको... आपको चुप रहना चाहिए मेरे सामने!

पोलीना : वह यहाँ भी चिल्लायेगी... यहाँ ये गँवार घूम रहे हैं... यह बड़ी भयानक बात है! तत्याना, मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूँ...

ज़ख़ार (मंच पर आते हुए) : मुझे लगता है कि मैं पागल हो जाऊँगा!

क्लेओपात्रा (उसके पीछे-पीछे) : आप मुझसे भाग कर नहीं जा सकते, आपको सुननी ही होगी मेरी बात!... आपने मज़दूरों को सिर पर चढ़ाया, आप उनसे इज्जत पाना चाहते हैं और आपने एक इनसानी ज़िन्दगी को उनके सामने ऐसे फेंक दिया, जैसे गुर्राते हुए कुत्तों के सामने मांस का टुकड़ा फेंकता है! आप दूसरों की बलि देकर, दूसरों का खून भेंट करके मानवतावादी बने बैठे हैं!

ज़ख़ार : यह क्या कह रही है?

याकोव (तत्याना से) : यही अच्छा होगा कि तुम यहाँ से चली जाओ! **(खुद जाता है)**

पोलीना : सुनिये, श्रीमती जी! हम बाइज्जत लोग हैं। हम यह हरगिज बर्दाश्त नहीं करेंगे कि आप जैसी नेकनाम औरत हम पर चीखे-चिल्लाये...

ज़ख़ार (डरकर) : पोलीना... भगवान के लिए चुप रहो!

क्लेओपात्रा : किसलिए आप बाइज्जत लोग हैं? इसलिए कि राजनीति की बातें करते हैं? जनता के दुखदर्द का रोना रोते हैं? प्रगति और मानवता का गाना गाते हैं?

तत्याना : क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना!... बस, अब काफ़ी हो चुका!

क्लेओपात्रा : मैं आपसे बात नहीं कर रही हूँ! आपका कोई मतलब नहीं है इस मामले में टांग अड़ाने का! आपका कोई सरोकार नहीं है इस चीज़ से !... मेरा पति एक ईमानदार आदमी था... साफ़गो और ईमानदार... आपकी तुलना में वह आम लोगों को ज़्यादा अच्छी तरह से जानता-समझता था... आप लोगों की तरह बढ़-चढ़कर बातें नहीं करता था... आप लोगों ने अपनी कमीनी हिमाकतों से उसके साथ धोखा किया है, उसे मार डाला है!

तत्याना (पोलीना और ज़ख़ार से) : आप दोनों यहाँ से चले जायें!

क्लेओपात्रा : मैं ही चली जाती हूँ!... फूटी आँखों नहीं देख सकती मैं आपको... आप सभी को! **(बाहर जाती है)**

ज़ख़ार : कैसी सिरफिरी औरत है!..

पोलीना (आँसू भरकर) : हमें सब कुछ छोड़-छोड़कर यहाँ से चले जाना चाहिए... कौन सहन करेगा ऐसी बेइज्जती...

ज़ख़ार : किसलिए यह ऐसे चीख-चिल्ला रही है?... अगर उसे अपने पति से प्यार होता या उसके साथ सुख-चैन की जिन्दगी बिताती होती, तब भी कोई बात थी... मगर यह तो हर साल दो नये प्रेमी बनाती है... और फिर चीख-चिल्ला भी रही है!

पोलीना : कारख़ाना बेच देना चाहिए!

ज़ख़ार (खीझ से) : सब कुछ छोड़ देना चाहिए, सब कुछ बेच देना चाहिए.. बात इतनी आसान नहीं, मामला ऐसे नहीं हैं! हमें अच्छी तरह से सोचना-समझना चाहिए!.. मैं अभी-अभी निकोलाई वसील्येविच से बात कर रहा था.. तभी यह औरत आ धमकी और हमारी बातचीत बीच में रह गयी...

पोलीना : वह हमसे नफ़रत करता है, वह निकोलाई वसील्येविच बड़ा जहरीला आदमी है!

ज़ख़ार (संतुलित होकर) : वह बेहद गुस्से में है, उसे भारी धक्का लगा है, मगर समझदार आदमी है। वह हमसे नफ़रत करे, इसका कोई कारण भी नहीं है। अब, मिख़ाईल की मौत के बाद उसके कुछ हित उसे मेरे साथ एक सूत्र में भी जोड़ते हैं... हाँ!

पोलीना : उस पर मेरा दिल नहीं जमता, मुझे उससे डर लगता है... वह तुम्हें धोखा देगा!

ज़खार : ओह पोलीना, यह बेकार की बात है!... वह चीजों को खूब अच्छी तरह से समझता है... हाँ! हक़ीकत यह है कि मज़दूरों के मामले में मैंने ढुलमुल नीति से काम लिया... यह तो मुझे मानना ही होगा। शाम को जब मैंने उनसे बातचीत की... ओह, पोलीना, बहुत ही ज्यादा दुश्मनी भरी हुई है उन लोगों के दिलों में...

पोलीना : मैंने तुमसे कहा था... कहा था न! ये लोग हमेशा दुश्मन रहेंगे!

(तत्याना बाहर जाती है और धीरे से हँसती है। पोलीना उसकी तरफ़ देखती है और अपनी बात जारी रखते हुए जान-बूझकर ऊँची आवाज़ में कहती है)

सभी हमारे दुश्मन हैं! सभी ईर्ष्या करते हैं... इसीलिए हम पर झपटते हैं!

ज़ख़ार (तेजी से इधर-उधर टहलते हुए) : बेशक... कुछ हद तक तो ऐसा ही है! निकालाई वसील्येविच का कहना है कि यह वर्गों का नहीं, नसलों का संघर्ष है- गँवारों और सभ्य लोगों का! ... जाहिर है कि यह तो बात को बहुत भद्दे ढंग से, बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना होगा... लेकिन अगर सोचा जाये कि हम सभ्य लोगों ने, हमीं ने विज्ञान, कला और दूसरी तरह-तरह की चीजों की सृष्टि की है... समानता... शारीरिक समानता हुँ... खैर, ठीक है। मगर पहले इनसान तो बनो, सभ्य तो हो जाओ... और फिर हम बात करेंगे समानता की!...

पोलीना (ध्यान से सुनते हुए) : यह तो तुम नयी बातें कर रहे हो...

ज़खार : ये बातें अभी कच्ची हैं, अभी मैंने इन पर अच्छी तरह सोच-विचार नहीं किया. .. खुद को समझना चाहिए, यही असल चीज है!

पोलीना (उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए) : तुम बहुत ही नर्मदिल हो, मेरे दोस्त। इसीलिए तुम्हें इतनी परेशानी होती है!

ज़खार : हमारी जानकारी बहुत थोड़ी है और हम अक्सर चकित होते रहते हैं... उस सिन्त्सोव को ही ले लो- उसने मुझे हैरान कर दिया, मैं उसे चाहने भी लगा... कितनी सादगी है उसमें, कितनी सुलझी हुई तर्क-शक्ति है! ... अब पता चला है कि वह समाजवादी है, यही है उसकी सादगी और तर्क शक्ति का रहस्य!

पोलीनाः हाँ, हाँ... लोग उसकी तरफ ध्यान देते हैं... कैसी मनहूस सूरत है उसकी!. .. मगर तुम्हें आराम करना चाहिए... चलें न?

ज़खार (उसके पीछे जाते हुए) : एक और मजदूर है–ग्रेकोव ... बड़ा गुस्ताख है! मैं और निकोलाई वसील्येविच अभी उसी के भाषण की चर्चा कर रहे थे... अभी छोकरा० ही है... मगर ऐसे बात करता है. ऐसी बेहयाई से...

(वे दोनों जाते हैं। निस्तब्धता। कहीं से गाना सुनाई देता है, फिर धीमी-धीमी आवाजें! यागोदिन, लेव्शिन तथा रयाब्त्सोव आते हैं र्याब्त्सोव युवक है, वह बार-बार अपने सिर को पीछे की तरफ़ झटकता है। उसका चेहरा गोल हैऔर उस पर खुशमिज़ाजी नजर आती है। तीनों वृक्षों के निकट रुकते हैं)

लेव्शिन (धीरे और रहस्यपूर्ण ढंग से) : यह सभी की भलाई का सवाल है, पावेल।

र्याब्त्सोव : मैं समझता हूँ...

लेव्शिन : यह सब की भलाई का, इन्सानियत का सवाल है... भैया, आजकल अच्छे लोगों की बड़ी सख्त जरूरत है। लोगों में आजकल जागृति आ रही है, वह ध्यान से दूसरों की बातें सुनते हैं, पढ़ते हैं, सोचते समझते हैं... और जो लोग कुछ समझ गये हैं, वे हमारे लिए बड़ी कीमत रखते हैं...

यागोदिन : यह बिल्कुल सही है, पावेल...

र्याब्त्सोव : मैं यह जानता हूँ... तय हो गया। मैं इसके लिए तैयार हूँ।

लेव्शिन : यों ही तैयार होने की बात नहीं, तुम्हें मामले की तह तक पहुँचना चाहिए.. तुम अभी जवान हो और जुर्म को अपने सिर लेने का मतलब है साइबेरिया...

र्याब्त्सोव : कोई बात नहीं, मैं वहाँ से भाग जाऊँगा...

यागोदिन : हो सकता है कि साइबेरिया जाने की सजा न भी दी जाये!...कालेपानी की सजा के लिए अभी तुम्हारी उम्र नहीं हुई...

लेव्शिन : हमें तो यही मानना चाहिए कि ऐसी कड़ी सजा दी जायेगी! इस मामले में ज्यादा से ज्यादा खतरनाक बात सोचना ही बेहतर है। अगर आदमी साइबेरिया से भी नहीं डरता, तो इसका मतलब है कि उसने पक्का इरादा बना लिया है!

र्याब्त्सोव : मैं पक्का इरादा बना चुका हूँ।

यागोदिन : जल्दी मत करो। अच्छी तरह सोच समझ लो...

र्याब्त्सोव : सोचने-समझने को रखा ही क्या है? हत्या की गयी है और अब किसी को तो उसने खून की कीमत चुकानी ही होगी...

लेव्शिन : हाँ! ऐसा करना ही होगा! अगर कोई एक अपने को पेश नहीं करेगा, तो बहुतों को परेशान किया जायेगा। वे हमारे उन सबसे अच्छे लोगों को तंग करेंगे, पावेल, जो हमारे साझे ध्येय के लिए तुमसे कहीं अधिक महत्व रखते हैं।

र्याब्त्सोव : मैं तो इसका विरोध नहीं कर रहा हूँ। नौजवान होते हुए भी सब कुछ समझता हूँ। हमें एक दूसरे को मजबूती से थामना है... जंजीर की कड़ियों की तरह...

लेव्शिन (निःश्वास छोड़कर) : बिल्कुल ठीक।

यागोदिन (मुस्कराते हुए) : हम एकजुट हो जायेंगे, उनके गिर्द घेरा डाल देंगे, घेरा धीरे-धीरे तंग होकर उन्हें दबाता जायेगा- और बस, किस्सा खत्म।

र्याब्त्सोव : तो तय हो गया। इसमें सोचने की बात ही क्या है? मेरा न कोई आगे है, न पीछे। इसलिए मुझे ही यह काम करना चाहिए। अफ़सोस सिर्फ़ इतना है कि ऐसे खून के लिए...

लेव्शिन : उसके खून के लिए नहीं, अपने साथियों के लिए।

र्याब्त्सोव : नहीं, मेरा मतलब यह था कि वह तो बेहद नफ़रत के लायक था.. बड़ा

जहरीला था...

लेव्शिनः इसलिए जहरीले को ही तो मारना चाहिए। भले लोग अपनी मौत मरते हैं। लोगों को उनसे कोई परेशानी नहीं होती।

र्याब्त्सोवः तो बात खत्म?

योगादिनः हाँ, पावेल! तो कल सुबह तुम उनसे कह दोंगे?

र्याब्त्सोवः कल तक इन्तज़ार करने की क्या ज़रूरत है? मैं अभी जाकर कह देता हूँ।

लेव्शिनः नहीं, कल सुबह ही कहना बेहतर होगा। रात माँ की गोद की तरह होती है। अच्छी तरह सोच समझ लेना...

र्याब्त्सोवः अच्छी बात है... मैं अब जाता हूँ।

लेव्शिनः भगवान तुम्हारा भला करे!

यागोदिनः जाओ भाई, दृढ़ मन से जाओ...

(र्याब्त्सोव धीरे-धीरे जाता है। यागोदिन लाठी को घुमाता हुआ उसे देखता रहता है। लेव्शिन आकाश को ताकता है)

लेव्शिन (धीरे से): आजकल तो बहुत से भले लोग सामने आ रहे हैं, तिमोफेई!

यागोदिनः अच्छा मौसम... अच्छी फसल!

लेव्शिनः अगर ऐसा ही रंग रहा तो हम बाज़ी मार लेंगे।

यागोदिन (दुखी होते हुए): लड़के के लिए दुख होता है...

लेव्शिन (धीरे से): दुख कैसे नहीं होगा! मुझे भी दुख हो रहा है। बेचारा जेल जायेगा- और सो भी खून का जुर्म कबूल करके। उसके दिल को सिर्फ इतनी ही तसल्ली है कि वह अपने साथियों के लिए सब कुछ कर रहा है।

यागोदिनः हाँ...

लेव्शिनः तुम अपने होंठ सिये रहना! ओह!... जाने क्यों पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया अकीमोव ने! खून करने से क्या मिलता है? कुछ भी तो नहीं! एक कुत्ते को मारो कि मालिक झट से दूसरा खरीदकर सामने ला खड़ा करते हैं... बात वहीं की वहीं रह जाती है!

यागोदिन (दुखी होकर): हमारे जैसे कितने लोग मर रहे हैं...

लेव्शिनः चलो, चौकीदार! हमें तो मालिकों की मिल्कियत की रखवाली करनी है!

(वे दोनों जाते हैं)

हे भगवान!

यागोदिनः क्या बात है?

लेव्शिनः बहुत मुश्किल है जिन्दगी! काश, हम इसे जल्दी से सँवार सकते!

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

(बार्दिन के मकान का एक बड़ा कमरा। पीछे का दीवार में चार खिड़कियाँ हैं और एक दरवाजा, जो सभी बरामदे में खुलते हैं। शीशे की खिड़कियों के पीछे बहुत से सिपाही, फ़ौजी पुलिसवाले और मज़दूर दिखाई देते हैं। लेव्शिन और ग्रेकोव भी इन्हीं मजदूरों में हैं। कमरा ऐसे लगता है, मानो वहाँ कोई भी न रहता हो। इसमें थोड़ा सा फ़र्नीचर है और वह भी पुराना और बेढंगा। दीवारों की अबरी जहाँ-तहाँ फटी हुई है। दायीं ओर एक बड़ी मेज टिका दी गयी है। कोन बड़े गुस्से में कुर्सियाँ खींच-खींचकर मेज़ के गिर्द रखता दिखाई देता है और अग्राफ़ेना फ़र्श पर झाड़ू लगा रही है। बायीं और दायीं तरफ़ की दीवारों में दो पल्लोंवाले बड़े-बड़े दरवाजे।)

अग्राफ़ेना: हाँ, तो मुझ पर बिगड़ने की कोई वजह नहीं है...

कोनः बिगड़ नहीं रहा हूँ। मेरी बला से, सब के सब जहन्नुम में चले जायें... शुक्र है भगवान का कि मैं तो जल्द ही कब्र में पहुँचनेवाला हूँ... मेरे दिल की धड़कन रुकती-सी जा रही है।

अग्राफ़ेनाः सभी मर जायेंगे... इसमें डींग हाँकने की कोई बात नहीं...

कोनः बहुत ज़हर पी चुका... अब बिल्कुल तंग आ गया हूँ! पैंसठ साल की उम्र होने लगी... मैं अब और अधिक नहीं पचा सकता झूठी और बेहूदा बातें.. कितने लोगों को इकट्ठा करके बरसात में भीगने के लिए खड़ा कर दिया गया है...

(बायीं ओर के दरवाजे से कप्तान बोबोयेदोव और निकोलाई प्रवेश करते हैं)

बोबोयेदोव (खुश होकर): तो यह कमरा अदालत का काम देगा? बहुत खूब! और आप सरकारी वकील के तौरपर काम कर रहे हैं?

निकोलाईः हाँ, हाँ! कोन, सार्जेन्ट को बुलाओ!

बोबोयेदोवः हाँ, तो अब इस तरह से सजायेंगे हम यह गुलदस्ता- बीच में होगा... अ. ..अ.. क्या नाम है उसका?

निकोलाईः सिन्त्सोव।

बोबोयेदोवः सिन्त्सोव... बहुत खूब! और उसके चारों तरफ होंगे "दुनियाके मजदूर"? तो ऐसी बात है! तबीयत खुश हो रही है इस सब से... इस जगह का मालिक प्यारा-सा आदमी है... बहुत ही प्यारा सा! हमारी तो उसके बारे में दूसरी ही राय थी। मैं इसकी भाभी को जानता हूँ, वह वोरोनेज के थियेटर में अभिनय करती थी... कमाल की अभिनेत्री है वह।

(बरामदे की तरफ़ से क्वाच अन्दर आता है)

क्या खबर है, क्वाच?

क्वाचः सभी की तलाशी ली जा चुकी है, हुजूर!

बोबोयेदोवः अच्छा। तलाशी में कुछ मिला?

क्वाचः कुछ भी नहीं... सब कुछ छिपाया जा चुका था! मैं आपको यह बताना चाहता हूँ, हुजूर, कि थानेदार बहुत उतावली मचाता है- अच्छी तरह से काम नहीं करने देता।

बोबोयेदोवः पुलिसवाले तो हमेशा ही ऐसा करते हैं! गिरफ्तार किये गये लोगों के यहाँ से कुछ मिला?

क्वाचः लेव्शिन के घर से कुछ चीजें मिली हैं। देव-प्रतिमा के पीछे से, हुजूर।

बोबोयेदोवः सब कुछ मेरे कमरे में पहुँचा दो।

क्वाचः जो हुक्म, हुजूर! पलटन से अभी-अभी जो युवा फौजी आया है...

बोबोयेदोवः तो?

क्वाचः वह भी लापरवाही से काम कर रहा है।

बोबोयेदोवः उससे तुम खुद निपट लो। जाओ!

(क्वाच चला जाता है)

बड़ा तेज आदमी है यह क्वाच! देखने में कुछ जँचता नहीं, थोड़ा बेवकूफ भी लगता है, मगर सुराग़ लगाने में एक नम्बर है! शिकारी कुत्ते जैसी नाक है इसकी!

निकोलाईः बोग्दान देनीसोविच, उस क्लर्क की तरफ आप खास तौर पर ध्यान दें...

बोबोयेदोवः सो तो देंगे ही, देंगे ही! अच्छी तरह से ऐंठेंगे उसके कान!

निकोलाईः मैं सिन्त्सोव का नहीं, पोलोगी का जिक्र कर रहा हूँ। मेरे ख्याल में उससे हमारा खासा काम निकल सकता हैं

बोबोयेदोवः जिससे हम बातचीत कर रहे थे? हाँ, हाँ, हम उसे कोई काम सौंप देंगे..

(निकोलाई मेज़ के पास जाकर काग़जात को ढंग से उस पर रखता है)

क्लेओपात्रा (दायीं तरफ़ के दरवाजे से थोड़ा बाहर निकलकर): चाय का एक और गिलास लेंगे, कप्तान?

बोबोयेदोवः कृपया दे दीजिये, धन्यवाद! बड़ी प्यारी जगह है... बहुत ही सुन्दर! मदाम लुगोवाया को तो मैं जानता हूँ! वह वोरोनेज के थियेटर में अभिनय करती थीं न?

क्लेओपात्राः हाँ, शायद करती थीं... तलाशी में आपको कुछ मिला?

बोबोयेदोव (अनुग्रह से): सब कुछ, सब कुछ मिल गया! हमें सब कुछ मिल जायेगा, आप जरा भी चिन्ता नहीं करें! जहाँ कुछ भी नहीं होता, हमें तो वहाँ भी हमेशा कुछ न कुछ मिल जाता है।

क्लेओपात्राः मेरे स्वर्गीय पति इन इश्तिहारों को विशेष महत्व नहीं देते थे... वह कहा करते थे कि कागजों से कभी इन्क़लाब नहीं होता...

बोबोयेदोवः हुँ... बात बिल्कुल तो ऐसी नहीं है!

क्लेओपात्राः वह कहा करते थे कि महामूर्खों के गुप्त कार्यालयों से निकलने वाले ये इश्तियार मूर्खों के लिए उपदेश के रूप में लिखे जाते हैं।

बोबोयेदोवः मजेदार बात है... बेशक सही नहीं है!

क्लेओपात्राः और अब वे इश्तिहारों से गोलियाँ चलाने पर आ गये हैं...

बोबोयेदोवः आप यकीन रखें, हम उन्हें कड़ी सजा देंगे- बहुत कड़ी सजा देंगे

क्लेओपात्राः आपकी बात सुनकर दिल को बहुत तसल्ली होती है। आपके आने से मेरे दिल का बोझ हल्का हो गया... मैं निश्चिन्त सी हो गयी!

बोबोयेदोवः लोगों की हिम्मत बढ़ाना यह तो हमारा कर्तव्य है...

क्लेओपात्राः आप जैसे जिन्दगी से संतुष्ट और स्वस्थ व्यक्ति को देखकर जी खुश हो गया... आजकल तो बहुत कम ही ऐसा होता है!

बोबोयेदोवः ओह, हमारी पलटन के तमाम फ़ौजी बाँकें मर्द हैं!

क्लेओपात्राः तो आइये, खाने की मेज पर चलें।

बोबोयेदोव (जाते हुए): खुशी से! इस साल मदाम लुगोवाया किस थियेटर में अभिनय करनेवाली हैं?

क्लेओपात्राः मालूम नहीं

(बरामदे की तरफ से तत्याना और नाद्या आती हैं)

नाद्या (उत्तेजित सी): तुमने ध्यान दिया, वह बूढ़ा लेब्शिन हमें किस तरह घूर रहा था?

तत्यानाः हाँ...

नाद्याः यह सब कितना... बुरा, कितना लज्जाजनक है! निकोलाई वसील्येविच, यह सब किसलिए कर रहे हैं? किसलिए गिरफ्तार किया गया है इन लोगों को?

निकोलाई (रूखेपन से): इन्हें गिरफ्तार करने के लिए काफी से ज्यादा कारण हैं... और जब तक वे लोग वहाँ हैं... आपसे अनुरोध है कि तब तक बरामदे में नहीं आयें-जायें..

नाद्याः नहीं आयें-जायेंगी... नहीं आयें जायेंगी..

तत्याना (निकोलाई की तरफ़ देखते हुए): सिन्त्सोव को भी गिरफ्तार कर लिया गया है?

निकोलाईः हाँ, श्रीमान सिन्त्सोव को भी गिरफ्तार कर लिया गया हैं

नाद्या (कमरे में इधर-उधर टहलते हुए): सत्रह लोगों को गिरफ्तार किया गया है! उनकी बीवियाँ फाटकों के बाहर खड़ी रो धो रही हैं... और फ़ौजी उन्हें इधर-उधर धकेलते हुए उनकी खिल्ली उड़ा रहे हैं! फौजियों से इतना तो कह दीजिये कि उनके साथ सलीके से पेश आयें!

निकोलाईः मेरा इस मामले से कोई सरोकार नहीं है। फौजियों का इन्चार्ज है लेफ्टीनेन्ट स्त्रेपेतोव।

नाद्याः मैं खुद जाकर उससे प्रार्थना करती हूँ...

(दायीं तरफ़ से बाहर चली जाती है)
(तत्याना मुस्कराती हुई मेज़ के पास आती है)

तत्यानाः सुनिये, कानूनी कब्र,-ऐसे ही बुलाता है न जनरल आपको?

निकोलाईः जनरल की चुटकियां लेने में कमाल हासिल हो, मैं ऐसा नहीं मानता। आपकी जगह मैं उसके मज़ाक दोहराना पसन्द न करता।

तत्यानाः ओह, मुझसे ग़लती हो गयी। कानूनी कब्र नहीं, कानूनी कफ़न- जनरल तो ऐसे ही बुलाता है आपको। आपको बुरा लगता है क्या?

निकोलाईः इस वक़्त मैं मज़ाक के मूड में नहीं हूँ।

तत्यानाः क्या आप बहुत गंभीर हैं?

निकोलाईः मैं आपको यह याद दिलाना चाहता हूँ कि अभी कल ही मेरे भाई की हत्या की गयी है।

तत्यानाः तो आपको इससे क्या फर्क पड़ता है?

निकोलाईः मैं माफ़ी चाहता हूँ, मगर यह आप क्या कह रही हैं?

तत्याना (व्यंग्यपूर्वक हँसते हुए): ढोंग करने की जरूरत नहीं! भाई की मौत का आपको जरा भी अफसोस नहीं है... आपको किसी के लिए अफसोस नहीं होता... मसलन जैसे मुझे भी। रही मौत सो भी अचानक होने वाली मौत से सभी को धक्का सा जरूर लगता है... मगर मैं आपको यह विश्वास दिला सकती हूँ कि सही अर्थों में, सच्चे दिल से आपको अपने भाई के लिए घड़ी भर को भी अफसोस नहीं हुआ... आपमें वह है ही नहीं!

निकोलाई (अपने पर संयम रखते हुए): यह भी खूब रही। लेकिन आप मुझसे चाहती क्या हैं?

तत्यानाः आप यह महसूस नहीं करते कि हम दोनों की आत्मायें एक जैसी हैं? नहीं महसूस

करते? बड़े दुख की बात है! मैं अभिनेत्री हूँ, भावनाहीन प्राणी हूँ, हमेशा सिर्फ यही चाहती हूँ कि कोई बढ़िया भूमिका अदा करूँ। आप भी कोई अच्छी सी भूमिका खेलना चाहते हैं, आप भी संगदिल हैं। यह बताइये, आपको सरकारी वकील होना पसन्द है?

निकोलाई (धीरे से): मैं यह चाहता हूँ कि आप यह चर्चा बन्द कर दें...

तत्याना (तनिक चुप रहकर हँसती है) मुझमें व्यवहारकुशलता बिल्कुल नहीं। मैं एक उद्देश्य से आपके पास आयी थी... मैं चाहती थी आपसे मीठी-मीठी बातें करना, आप पर अपना जादू चलाना... मगर सामनेआते शुरू हो गयी खरी-खोटी सुनाने... आप हमेशा ही मुझे जले भुने शब्द कहने को प्रेरित करते हैं चाहे आप बैठे हों या चल रहे हों, बातचीत कर रहे हों या चुपचाप लोगों की भर्त्सना करते हों.. खैर, मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहती थी...

निकोलाई (जरा हँसकर): मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि यह अनुरोध क्या होगा!

तत्याना: शायद। लेकिन क्या अब ऐसा करना बेकार है?

निकोलाई: अब या पहले- फर्क कुछ न पड़ता।

बात यह है कि श्रीमान सिन्त्सोव इस मामले में बुरी तरह फँसा हुआ है।

तत्याना: मुझसे यह कहते हुए आपकुछ खुशी महसूस कर रहे हैं न?

निकोलाई: हाँ, मैं छिपाना नहीं चाहता।

तत्याना (निःश्वास छोड़कर): देखते हैं कि कैसे हम एक दूसरे के समान हैं। मैं भी बहुत घटिया और बुरी हूँ... यह बताइये कि सिन्त्सोव पूरी तरह आपके हाथों में है? मेरा मतलब आपके ही हाथों में?..

निकोलाई: हाँ, मेरे हाथों में है!

तत्याना: और अगर मैं आपसे उसे छोड़ देने का अनुरोध करूँ तो?

निकोलाई: इसका कुछ भी फायदा नहीं होगा।

तत्याना: अगर मैं बहुत-बहुत अनुरोध करूँ, तो भी?

निकोलाई: कुछ भी फर्क नहीं पड़ेगा इससे... आपकी बातों से हैरानी हो रही है!

तत्याना: सच? किसलिए?

निकोलाई: आप एक बहुत खूबसूरत औरत हैं... यकीनन काफी सूझ बूझ भी रखती हैं। आपका अपना खास मिजाज भी है... आपके पास बड़ी संभावनायें हैं बहुत ऐश आराम से और मजे की जिन्दगी बिताने की... फिर भी आप इस जैसे दो कौड़ी के आदमी के चक्कर में पड़ी हुई हैं! सनक एक बीमारी है। और हर सभ्य आदमी को आपकी यह हरकत बुरी लगेगी... रूप का परवाना और औरतों का दीवाना कोई भी आदमी आपको ऐसी अटपटी बातों के लिए माफ नहीं करेगा।

तत्याना (जिज्ञासा से उसे देखते हुए): तो मुझे आपने फतवा दे दिया न... बड़े अफसोस

की बात है! और सिन्त्सोव की किस्मत का भी फैसला कर दिया गया?

निकोलाई: यह महानुभाव आज रात तक जेल में पहुँच जायेगा।

तत्याना: तो यह तय है?

निकोलाई: हाँ।

तत्याना: औरत के लिए मेहरबानी दिखाते हुए भी कोई रियायत नहीं? विश्वास नहीं होता! अगर मैं बहुत चाहती, तो आप सिन्त्सोव को जरूर छोड़ देते।

निकोलाई (धीरे से): चाहने की कोशिश कर देखिये... कर देखिये।

तत्याना: मैं ऐसी कोशिश कर नहीं सकती। ऐसी कोशिश करना नहीं जानती... मगर सच कहिये- जिन्दगी में एक बार सच बोलना तो मुश्किल नहीं-आप उसे छोड़ देते?

निकोलाई (जरा रुककर): नहीं जानता...

तत्याना: लेकिन मैं जानती हूँ! **(वह जरा चुप रहकर निःश्वास छोड़ती है)** कितने घटिया हैं हम दोनों...

निकोलाई: फिर भी कुछ बातों के लिए तो औरत को भी माफ नहीं किया जा सकता!

तत्याना (लापरवाही से) : ओह, इसमें क्या खास बात है? यहाँ सिर्फ हम दोनों हैं... कोई हमारी बात नहीं सुन रहा। मुझे आपको और अपने को तो यह कहने का अधिकार है कि हम दोनों...

निकोलाई: कृपया चुप रहिये.. मैं और सुनना नहीं चाहता...

तत्याना (दृढ़ता और शान्ति से): फिर भी आपके इन उसूलों की कीमत किसी औरत के एक चुम्बन से कम है!

निकोलाई: मैं पहले ही कह चुका हूँ कि आपकी और बातें नहीं सुनना चाहता।

तत्याना (शान्त भाव से): तो फिर चले जाइये। क्या मैं आपको रोक रही हूँ?

(वह तेजी से बाहर चला जाता है। तत्याना अपने चारों ओर शाल लपेटती है, कमरे के बीचोंबीच खड़ी बाहर बरामदे को देखने लगती है। दायीं ओर से नाद्या और लेफ़्टीनेन्ट अन्दर आते हैं)

लेफ़्टीनेन्ट: मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ कि कोई फौजी कभी किसी औरत के साथ बुरा बर्ताव नहीं करता! फौजी के लिए औरत देवी है...

नाद्या: आप अपनी आँखों से देख लेंगे...

लेफ़्टीनेन्ट: यह असम्भव है! सिर्फ़ फ़ौज में ही औरतों के प्रति पुराने जमाने के सूरमाओं जैसा रवैया बाकी रह गया है...

(दोनों बायीं ओर के दरवाजे से चले जाते हैं। पोलीना, जख़ार और याकोव अन्दर आते हैं)

जख़ार: बात यह है, याकोव...

पोलीना: आप ही सोचिये, इसके सिवा और हो ही क्या सकता था?

जख़ार: हक़ीकत और जरूरत इसी की माँग करती है..

तत्याना: क्या बात है?

याकोव: मेरा मरसिया पढ़ा जा रहा है...

पोलीना: ओह, कैसी बेरहमी है! सभी हम पर बरस रहे हैं! याकोव इवानोविच भी, जो हमेशा इतनी नर्मी से पेश आता है... क्या हमने फौजियों को बुलाया है? और फ़ौजी पुलिसवालों को तो किसी ने भी नहीं बुलाया- ये तो हमेशा अपने ही आप आ धमकते हैं।

जख़ार: इन गिरफ्तारियों के लिए भी तुम मुझे ही दोषी ठहरा रहे हो...

याकोव: मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहरा रहा हूँ...

जख़ार: तुम साफ-साफ नहीं कहते, मगर मैं महसूस कर रहा हूँ...

याकोव (तत्याना से): मैं बैठा हुआ था, इसने मेरे पास आकर पूछा- "क्या हाल है, भाई?" और मैंने जवाब दिया- "बुरा हाल है, भाई!" बस, इतनी ही बात है!

जख़ार: मगर इतना तो समझना चाहिए कि जिस रूप में हमारे यहाँ समाजवाद का प्रचार किया जा रहा है, किसी दूसरी जगह सम्भव नहीं, कहीं भी ऐसा नहीं करने दिया जाता..

पोलीना: राजनीति में दिलचस्पी लीजिये, ऐसा सभी को करना चाहिए, मगर समाजवाद का यहाँ क्या सरोकार है? ज़ख़ार के कहने का यह मतलब है और उसकी बात सही है!

याकोव (उदासी से): वह बूढ़ा लेव्शिन कहाँ का समाजवादी है? ज्यादा काम करके... थकान के कारण झक्की हो गया है...

ज़ख़ार: ये सभी झक्की हैं!

पोलीना: महानुभावों, कुछ तो रहम कीजिये हम पर! किस बुरी तरह से सताये गये हैं हम!

ज़ख़ार: तुम क्या समझते हो कि अपने घर को अदालत में बदला देखकर मुझे दुख नहीं हुआ? यह सारी कारगुजारी निकोलाई वसील्येविच की है, मगर ऐसी दुखद घटना के बाद... उससे भला बहस कौन करता!

क्लेओपात्रा (तेजी से आती है): सुना आपने? हत्यारा मिल गया है... वे अभी उसे यहाँ लाने वाले हैं।

याकोव (बड़बड़ाते हुए): यह लो...

तत्याना: कौन है वह?

क्लेओपात्रा: कोई छोकरा है... मैं बहुत खुश हूँ... शायद इनसानियत के नज़रिये से तो यह अच्छा न हो, मगर मैं खुश हूँ! और अगर वह छोकरा ही है, तो मैं तो यह भी चाहूँगी कि मुक़दमा शुरू होनेसे पहले उसकी हर सुबह खूब अच्छी तरह से खाल उधेड़ी जाये... निकोलाई वसील्येविच कहाँ है?...नहीं देखा?

(बायीं ओर के दरवाजे की तरफ जाती है। सामने से जनरल आता है)

जनरल (उदासी से): देखो तो!... सब के सब कैसे मुँह लटकाये खड़े हैं।

ज़ख़ार: बहुत बुरा लग रहा है, मामा जी...

जनरल: फौजी पुलिसवालों का आना? हाँ.. वह कप्तान खासा बेहया है! मैं तो उससे कोई मज़ाक करना चाहता हूँ... क्या वे रात को यहीं ठहर रहे हैं?

पोलीना: मेरे ख्याल में तो नहीं... किसलिए?

जनरल: बहुत अफ़सोस की बात है! वरना... जब वह रात को बिस्तर में होता, तो मैं उस पर ठण्डे पानी की बालटी गिरवा देता! मेरी पलटन के बुज़दिल फौजियों के साथ ऐसा ही किया जाता था... जब नंगा और पानी से तर-ब-तर आदमी उछलता- कूदता और चीखता-चिल्लाता है, तो बड़ा मजा आता है!...

क्लेओपात्रा (दरवाजे के बीच खड़ी रहकर): आप कैसी ऊल-जलूल बातें किया करते हैं, जनरल! और किसलिए? कप्तान ढंग का और बड़ी लगन से काम करने वाला आदमी है... यहाँ पहुँचते ही उसने सब अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया! हमें इस बात की तो तारीफ करनी चाहिए! **(बाहर जाती है)**

जनरल: हुँ... इसके लिए तो बड़ी-बड़ी मूंछों-वाले सभी मर्द ढंग के आदमी हैं। मगर हर किसी को अपनी असलियत जाननी चाहिए... यही है ढंग की बात! **(बायीं ओर के दरवाजे के पास जाता है)**

कोन!

पोलीना (धीरे से): वह अपने को यहाँ की मालकिन महसूस करती है। जरा इसके रंग-ढंग तो देखिये!... कैसी अक्खड़, कैसी बेहूदा है...

ज़ख़ार: काश यह सब जल्दी से खत्म हो जाये! शान्ति और चैन के लिए... ढंग की जिन्दगी के लिए मन छटपटा रहा है!

नाद्या (भागती हुई अन्दर आती है): मौसी तत्याना, वह लेफ्टीनेन्ट तो एकदम उल्लू है!... मेरे ख्याल में वह अपने फ़ौजियों की पिटाई भी करता है.. चीखता चिल्लाता और भयानक सूरतें बनाता है... मौसा जी, गिरफ्तार किये गये लोगों की बीवियों को उनसे मिलने देना चाहिए... उनमें से पाँच शादी शुदा हैं!... आप जाकर उस फौजी पुलिसवाले से कहिये.. वही इन्चार्ज है।

ज़ख़ार: देखो न, नाद्या...

नाद्या: देख रही हूँ कि आप नहीं जा रहे हैं!... जाइये, जाइये जाकर उससे कहिये!.. उनकी बीवियाँ रो रही हैं... जाइये न!

ज़ख़ार (जाते हुए): मेरे ख्याल में इससे कुछ लाभ नहीं होगा...

पोलीना: नाद्या, तुम तो हर वक्त सभी को परेशान करती रहती हो!

नाद्या: मैं नहीं, आप लोग सभी को परेशान करते रहते हैं...

पोलीना: हम? यह और सुनो...

नाद्या (भावावेश में): हाँ, हम, हम सब मैं, तुम और मौसा जी... हमीं सबको परेशान करते हैं! हम कुछ भी नहीं करते, फिर भी सब कुछ हमारे कारण ही हो रहा है... ये फ़ौजी, ये फ़ौजी पुलिसवाले और यह सब कुछ! ये गिरफ्तारियाँ भी.. औरतें रो धो रही हैं... सब कुछ हमारे कारण ही हो रहा है!

तत्याना: इधर आओ, नाद्या!

नाद्या (उसके पास जाकर): लो, आ गयी... क्या बात है?

तत्याना: बैठ जाओ, अपने को शान्त करो... तुम न तो कुछ समझती हो और न कुछ कर ही सकती हो...

नाद्या: आप तो कुछ कह भी नहीं सकतीं! नहीं होना चाहती मैं शान्त, नहीं चाहती!

पोलीना: भगवान को प्यारी हो गयी तुम्हारी माँ ने तुम्हारे बारे में ठीक ही कहा था कि तुम बहुत बदमिज़ाज हो।

नाद्या: हाँ, उसकी बात ठीक थी... वह खुद कमाकर अपनी रोटी खाती थी। मगर आप. .. आप क्या करती हैं? किसकी रोटी खाती हैं?

पोलीना: लो, हो गयी चालू! नाद्या, मैं तुमसे अनुरोध करती हूँ कि तुम बात करने का यह अन्दाज बदल लो... अपने से बड़ों पर भी कहीं चीखा-चिल्लाया जाता है!

नाद्या: आप लोग बड़े नहीं हैं!..कैसे बड़े हैं आप? आप तो सिर्फ़ बूढ़े हैं!

पोलीना: तत्याना, ये सब तुम्हारे विचार है! और तुम्हें इससे कहना चाहिए कि यह बेवकूफ़ छोकरी है...

तत्याना: सुना तुमने? तुम बेवकूफ छोकरी हो... **(उसका कन्धा सहलाती है)**

नाद्या: बस,आप और कुछ कह ही नहीं सकतीं!... और कुछ भी नहीं! आप लोग तो अपनी वकालत भी नहीं कर सकते... क्या खूब लोग हैं आप! सच, आप तो सब फालतू हैं, यहाँ अपने घर में भी फालतू हैं!

पोलीना (कड़ाई से): तुम जो कुछ कह रही हो, उसका मतलब भी समझती हो?...

नाद्या: ये फ़ौजी पुलिसवाले यहाँ आ धमके हैं, बड़ी-बड़ी मूंछोंवाले घनचक्कर फ़ौजी। ये यहाँ मनमानी करते हैं, चाय पीते हैं, तलवारे खनखनाते हैं, एड़ियाँ बजाते हैं, ठहाके लगाते हैं... लोगों की पकड़-धकड़ करते हैं, उन पर चीख़ते चिल्लाते हैं, उन्हें डराते धमकाते हैं, औरतें रोती धोती हैं.. और आप? कौन पूछता है यहाँ आपको? आप सबको धकेलकर एक तरफ़ कर दिया गया है...

पोलीना: समझती क्यों नहीं कि तुम बिल्कुल बकवास किये जा रही हो! ये लोग हमारी रक्षा करने आये हैं।

नाद्या (दुखी होकर): ओह, मौसी! फ़ौजी बेवकूफी सेकिसी की रक्षा नहीं कर सकते, नहीं कर सकते!

पोलीना (गुस्से से): क्य-आ?

नाद्या (उसकी ओर हाथ बढ़ाकर): आप नाराज नहीं होइये! मैं यह सभी के बारे में कह रही हूँ!

(पोलीना तेज़ी से बाहर चली जाती है)

लो, वह भाग गयी! अब वह मौसा से जाकर शिकायत करेंगी कि मैं बड़ी गुस्ताख हूँ, बेलगाम हूँ... मौसा मुझे ऐसा लम्बा- चौड़ा लेक्चर पिलायेंगे कि सारी मक्खियों का भी ऊब के मारे दम निकल जायेगा!

तत्याना (सोच में डूबते हुए): दुनिया में तुम्हारा गुजारा कैसे होगा? मेरी समझ में नहीं आता!

नाद्या (हाथों को अपने सभी ओर घुमाते हुए): ऐसे नहीं! ऐसे तो किसी हालत में नहीं! मैं क्या करूँगी, यह नहीं जानती... लेकिन आप लोगों के समान कुछ नहीं करूँगी! अभी-अभी मैं उस फौजी अफसर के साथ बरामदे के पास से आ रही थी... ग्रेकोव वहाँ खड़ा सिगरेट पी रहा था। वह हमें देखता रहा... उसकी आँखें जैसे मुस्करा रही थीं। और वह यह जानता है कि जल्द ही उसे... जेल भेज दिया जायेगा? देखा! जो लोग अपने ढंग से जीते हैं, उन्हें किसी चीज़ से डर नहीं लगता... वे खुश रहते हैं! लेश्विन और ग्रेकोव की तरफ़ देखकर मेरी आँखें शर्म से झुक जाती हैं... दूसरों को मैं नहीं जानती, मगर इनको!. .. इनको मैं कभी नहीं भूल सकूँगी?... लो, वह मूछोंवाला उल्लू इधर चला आ रहा है.. .. हू-हू!

बोबोयेदोव (अन्दर आते हुए): ओह, कैसी भयानक आवाज है! किसे डरा रही हैं?

नाद्या: मैं आपसे डरती हूँ... आप औरतों को उनके पतियों से मिलने देंगे न?

बोबोयेदोव: नहीं, नहीं मिलने दूँगा। मैं बुरा आदमी हूँ!

नाद्या: फौजी पुलिसवाले जो ठहरे। क्यों औरतों को आप उनके पतियों से नहीं मिलने देते?

बोबोयेदोव (नम्रता से): इस वक़्त यह असम्भव है! लेकिन बाद में, जब उन्हें जेल भेजा जायेगा, तो मैं उन्हें उनसे मिल लेने दूँगा।

नाद्याः मगर यह असम्भव क्यों है? यह तो आप पर निर्भर है न?

बोबोयेदोवः मुझ पर...यानी कानून पर।

नाद्याः कानून का क्या सरोकार है इससे! आपकी मिन्नत करती हूँ... मिल लेने दीजिये उन्हें!

बोबोयेदोवः क्या कहा, कानून का क्या सरोकार है इससे? आप भी क़ानून से इन्कार करती हैं? छि, छि, छि!

नाद्याः मुझसे ऐसे बातें नहीं कीजिये! मैं बच्ची नहीं हूँ...

बोबोयेदोवः मैं यह नहीं मानता! सिर्फ बच्चे और इन्क़लाबी ही क़ानून से इन्कार करते हैं।

नाद्याः तो मैं इन्क़लाबी हूँ।

बाबोयेदोव (हँसते हुए): ओहो! तब तो आपको जेल भेजना चाहिए... गिरफ्तार करके जेल भेजना चाहिए...

नाद्या (दुखी होते हुए): मज़ाक छोड़िये! उन्हें मिल लेने दीजिये!

बोबोयेदोवः मैं ऐसा नहीं कर सकता... कानून का मामला है!

नाद्याः बेहूदा कानून है!

बोबोयेदोव (गम्भीर होकर): हुँ... ऐसे नहीं कहना चाहिए आपको! जैसा कि आप कहती हैं, अगर आप बच्ची नहीं है, तो आपको यह मालूम होना चाहिए कि हुकूमत ही क़ानून बनाती है। और क़ानून के बिना राज्य नहीं हो सकता।

नाद्या (गुस्से में आकर): कानून, हुकूमत, राज्य! ... छि, भगवान मेरे! लेकिन यह सब लोगों के लिए ही तो है?

बोबोयेदोवः हुँ... मेरे ख्याल में तो ऐसा ही है! यानी सबसे पहले तो व्यवस्था के लिए!

नाद्याः अगर लोग रोते हैं, तो किस काम की है वह व्यवस्था। अगर लोग रोते हैं, तो क्या जरूरत है हुकूमत की, राज्य की! राज्य... क्या बेतुकी बात है यह! क्या जरूरत है मुझे उसकी? (दरवाजे की तरफ जाती है) राज्य! कुछ समझते नहीं और बातें करते हैं! **(बाहर जाती है)**

(बोबोयेदोव हतप्रभ सा रह जाता है)

बोबोयेदोव (तत्याना से): अपने ही ढंग की लड़की है! मगर खतरनाक रास्ते पर बढ़ रही है... लगता है कि इसके मौसा आजाद ख़्यालों के आदमी हैं, ठीक है न?

तत्यानाः आप मुझसे बेहतर जानते होंगे। आजाद ख्याल आदमी किसे कहते हैं, मैं यह नहीं जानती।

बोबोयेदोवः कैसे नहीं जानतीं? यह तो सभी जानते हैं!... हुकूमत की उपेक्षा- यही है आजाद ख्याली! मदाम लुगोवाया, मैंने आपको वोरोनेज में देखा है... आपके बहुत बढ़िया, कमाल के अभिनय पर मुग्ध था मैं तो! शायद आपने भी मुझे देखा हो- मैं हमेशा उपराज्यपाल के पास वाली कुर्सी पर बैठता था। तब मैं प्रशासन का सहायक अधिकारी था।

तत्यानाः मुझे याद नहीं... शायद देखा हो... फ़ौजी पुलिस वाले तो सभी शहरों में हैं न?

बोबोयेदोवः यह भी कोई कहने की बात है! लाज़िमी तौर पर हर शहर में! और मैं आपसे यह कहे बिना भी नहीं रह सकता कि हम अधिकारी लोग ही कला के सच्चे पारखी हैं! शायद सौदागर लोग भी। मसलन अपने मनपसन्द कलाकार को उपहार देने के लिए चन्दे की सूची में फ़ौजी पुलिस के अफ़सरों के नाम आपको जरूर दिखाई देंगे। कहा जा सकता है कि हम लोगों के साथ तो यह परम्परा सी बन गयी है! इस साल आप किस जगह अभिनय करने की सोच रही हैं?

तत्यानाः अभी तय नहीं किया... किन्तु निश्चय ही किसी शहर में, जहाँ कला के सच्चे पारखी होते हैं!... इससे तो बचा ही नहीं जा सकता?

बोबोयेदोव (बात न समझते हुए): ओह, बेशक! वे तो हर शहर में अवश्य ही हैं! लोग अधिक कला प्रेमी भी तो होते जा रहे हैं...

क्वाच (बरामदे में से): हुजूर! वे उसे ला रहे हैं... जिसने गोली चलायी थी! कहाँ लाया जाये उसे?

बोबोयेदोवः यहाँ... सभी को यहाँ ले आओ! सरकारी वकील को भी बुला लो। **(तत्याना से)** मैं माफ़ी चाहता हूँ। कुछ देर का काम काज देखना होगा।

तत्यानाः आप उनसे पूछताछ करेंगे?

बोबोयेदोव (कृपालुता से): थोड़ी-सी, सो भी सतही तौर-पर जरा जान पहचान करने के लिए... एक तरह से उनकी हाजिरी लूँगा!

तत्यानाः मैं यह सुन सकती हूँ?

बोबोयेदोवः हुँ... हमारे यहाँ ऐसा किया तो नहीं जाता... राजनैतिक मुक़दमों में। मगर चूँकि यह फ़ौजदारी का मुक़दमा है, फिर हम अपने स्थान पर नहीं हैं और मैं आपको खुश भी करना चाहता हूँ, इसलिए...

तत्यानाः मैं नज़र नहीं आऊँगी... मैं यहाँ से देखती रहूँगी।

बोबोयेदोवः बहुत खूब! आपके अभिनय से जो आनन्द मिलता रहा है, मुझे खुशी है कि उसके बदले में मैं कुछ तो कर पा रहा हूँ आपके लिए। मैं अभी जाकर कुछ कागजात ले

आता हूँ। (वह बाहर आता है)

(दो अधेड़ उम्र के मजदूर र्‌याब्त्सोव को अन्दर लाते हैं। उनके साथ-साथ कोन है, वह बहुत गौर से कैदी को देख रहा है। उनके पीछे-पीछे लेव्शिन, यागोदिन, ग्रेकोव और दूसरे मज़दूर हैं। फिर फ़ौजी पुलिस वाले आते हैं)

र्‌याब्त्सोव (गुस्से से): मेरे हाथ क्यों बाँध दिये हैं? खोलिये... सुनते हैं?
लेव्शिन: भाइयो, खोल दीजिये इसके हाथ!.. किसलिए बुरा बर्तावकर रहे हैं?
यागोदिन: कहीं भागेगा नहीं!
मज़दूर: व्यवस्था की दृष्टि से आवश्यक है! कानून माँग करता है कि हाथ बाँधे जायें.

र्‌याब्त्सोव: मैं ऐसा नहीं चाहता! खोल दीजिये मेरे हाथ!
दूसरा मज़दूर (क्वाच से): खोल दूँ, सरकार? बड़ा शान्त सा नौजवान है... हमें तो हैरानी हो रही है... कि उसने यह काम कैसे किया?
क्वाच: हाँ, खोल दो इसके साथ... कोई बात नहीं!
कोन: इसे तो आप व्यर्थ ही पकड़ लाये!... गोली चलने के वक्त तो यह नदी पर था. मैंने इसे अपनी आँखों से देखा था और जनरल ने भी! **(र्‌याब्त्सोव से)** तुम चुप क्यों हो, उल्लू? कहते क्यों नहीं कि तुमने गोली नहीं चलायी... बोलते क्यों नहीं?
र्‌याब्त्सोव (दृढ़ता से): मैंने ही चलायी थी गोली।
लेव्शिन: फ़ौजी, तुमसे वह यह बेहतर जानता है कि किसने चलायी थी गोली.
र्‌याब्त्सोव: मैंने।
कोन (चिल्लाते हुए): यह झूट है! कुत्ते का पिल्ला...

(बोबोयेदोव और निकोलाई स्क्रोबोतोव प्रवेश करते हैं)

गोली चलने के वक्त तुम नदी में नाव चला रहे थे, गाने गा रहे थे... ठीक है न?
र्‌याब्त्सोव (शान्ति से): यह... बाद की बात है।
बोबोयेदोव: यही है?
क्वाच: जी, सरकार!
कोन: नहीं, यह नहीं है!
बोबोयेदोव: क्या? क्वाच, इस बूढ़े को बाहर ले जाओ! कौन है यह बूढ़ा?
क्वाच: जनाब, यह जनरल का अर्दली है!

निकोलाई (र्‌याब्त्सोव को गौर से देखकर): जरा ठहरिये, बोग्दान देनीसोविच... इसे यहीं रहने दीजिये, क्वाच!
कोन: मुझे हाथ नहीं लगाओ! मैं भी फ़ौजी हूँ!
बोबोयेदोव: रुक जाओ, क्वाच!
निकोलाई (र्‌याब्त्सोव से): कारखाने के मालिक की हत्या तुमने की है?
र्‌याब्त्सोव: मैंने।
निकोलाई: किसलिए?
र्‌याब्त्सोव: इसलिए कि वह हमारे साथ बहुत बुरी तरह से पेश आता था।
निकोलाई: तुम्हारा नाम क्या है?
र्‌याब्त्सोव: पावेल र्‌याब्त्सोव।
निकोलाई: हुँ! कोन, आप कह रहे थे कि...
कोन (विह्लता से): इसने हत्या नहीं की है! उस वक्त यह नदी पर था!.. मैं क़सम खाने को तैयार हूँ!... मैंने और जनरल साहब ने भी इसे देखा था... जनरल साहब ने तो यह भी कहा था- "अगर हम इसकी नाव उलट दें, तो खूब मज़ा रहे.. यह पानी से तर-ब-तर हो जाये..." अरे, ओ छोकरे! यह तुम क्या कर रहे हो?
निकोलाई: कोन, आप इतने विश्वास से कैसे कह रहे हैं कि हत्या के समय यह नदी पर ही था?
कोन: इसलिए कि जहाँ यह उस समय था, कारखाने से वहाँ एक घण्टे में भी नहीं पहुँचा जा सकता।
र्‌याब्त्सोव: मैं भागकर आया था।
कोन: यह नाव चला रहा था और गाने गा रहा था। किसी का खून करने के फ़ौरन बाद कोई गाने नहीं गाता!
निकोलाई (र्‌याब्त्सोव से): तुम्हें यह मालूम है न कि मुजरिम को बचाने की कोशिश करने वाले या झूठी गवाही देने वाले को कानून बड़ी सख्त सजा देता है?... तुम्हें यह मालूम है न?
र्‌याब्त्सोव: मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं है।
निकोलाई: अच्छी बात है। तो तुम्हीं ने खून किया है डायरेक्टर का?
र्‌याब्त्सोव: हाँ, मैंने ही।
बोबोयेदोव: कैसा वहशी है!..
कोन: यह झूट बोल रहा है!
लेव्शिन: आपका यहाँ कोई मतलब नहीं है, फ़ौजी!
निकोलाई: क्या कहा?

लेव्शिनः मैंने कहा कि इस आदमी का इस मामले से कोई सरोकार नहीं है, योंही अपनी टाँग अड़ाये जा रहा है...

निकोलाईः और तुम्हारा इस मामले से सरोकार है? हत्या में तुम्हारा भी हाथ है न?

लेव्शिन (हँसता है): मेरा हाथ? जनाब, मैं तो एक बार लाठी से एक खरगोश मार बैठा था- बाद में उसी के ग़म में घुलता रहा...

निकोलाईः चुप रहो! **(र्‍याब्त्सोव से)** तुमने जिस पिस्तौल से गोली चलायी थी, वह कहाँ है?

र्‍याब्त्सोवः मालूम नहीं।

निकोलाईः वह कैसी थी? बयान करो!

र्‍याब्त्सोवः मालूम नहीं।

निकोलाईः वह कैसी थी? बयान करो!

र्‍याब्त्सोव (जरा घबराकर): कैसी?... कैसी होती हैं वे? वैसी ही जैसी होती है।

कोन (खुश होते हुए): कुत्ते का पिल्ला! इसने तो पिस्तौल भी नहीं देखी!

निकोलाईः कितनी बड़ी थी वह? (हाथों से आधगज़ का इशारा करता है) इतनी थी न?

र्‍याब्त्सोवः हाँ... कुछ कम..

निकोलाईः बोग्दान देनीसोविच, कृपया इधर आइये।

(बोबोयेदोव को एक तरफ ले जाता है और धीमी आवाज में कहता है) दाल में जरूर कुछ काला है, कोई तिकड़म की जा रही है। हमें इस छोकरे के साथ ज़्यादा कड़ाई बरतनी होगी... जाँच-अफ़सर के आने पर ही इससे बातचीत करेंगे।

बोबोयेदोवः भला क्यों?.. वह अपने जुर्म का इक़बाल तो कर रहा है।

निकोलाई (समझाते हुए): हम दोनों को इसके असली मुजरिम होने का शक है। इसको किसी दूसरे की जगह पेश किया जा रहा है, समझे न?

(याकोव शराब के नशे में सावधानी से तत्याना के नज़दीक दरवाजे से जरा निकलकर खड़ा हो जाता है। वह चुपचाप देखता रहता हैं कभी-कभी उसका सिर झुक जाता है, जैसे ऊँघ रहा हो; फिर चौंककर झटके के साथ सिर ऊपर उठाता है। डरी-डरी सी सूरत बनाये वह इधर-उधर देखता है)

बोबोयेदोव (बात न समझते हुए): अच्छा... अरे हाँ, हाँ, हाँ! देख रहे हैं न?.

निकोलाईः यह साजिश है! सबका मिलकर किया हुआ जुर्म है...

बोबोयेदोवः कैसा बदमाश है यह छोकरा, है न?

निकोलाईः सार्जेन्ट से फ़िलहाल इसे ले जाने को कहिये। किसी को भी इससे मिलने-जुलने

न दिया जाये! मैं ज़रा सी देर को जा रहा हूँ... कोन, आप मेरे साथ चलिये! जनरल कहाँ है?

कोनः जमीन खोदकर कीड़े निकाल रहे हैं...

(दोनों बाहर जाते हैं)

बोबोयेदोवः क्वाच, इसे ले जाओ। इस पर कड़ी नजर रखना! कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिए, समझे!

क्वाचः जी, सरकार! चल रे, छोकरे!

लेव्शिन (बड़े स्नेह से): नमस्ते, पावेल! नमस्ते, प्यारे!...

यागोदिन (दुखी होकर): नमस्ते, पावेल!...

र्‍याब्त्सोवः नमस्ते... सब ठीक है!...

(र्‍याब्त्सोव को बाहर ले जाया जाता है)

बोबोयेदोव (लेव्शिन से): तुम इसे जानते हो, बुड्ढे?

लेव्शिनः जानूँगा कैसे नहीं? हम साथ काम करते हैं।

बोबोयेदोवः तुम्हारा नाम क्या है?

लेव्शिनः येफ़ीम येफ़ीमोव लेव्शिन।

बोबोयेदोव (धीरे से तत्याना से): अब जरा देखती जाइयेगा कि क्या होता है! (लेव्शिन से) लेव्शिन, तुम बुजुर्ग और सयाने आदमी हो, तुम्हें अफ़सरों से सच-सच बात कहनी चाहिए...

लेव्शिनः भला झूठ किसलिए बोला जाये...

बोबोयेदोव (द्वेषपूर्ण खुशी से): ठीक। तो तुम मुझे ईमानदारी से यह बताओ कि तुम्हारे घर में देव प्रतिमाओं के पीछे क्या छिपा हुआ है? सच बोलना!

लेव्शिन (शान्ति से): कुछ भी नहीं

बोबोयेदोवः क्या यही सच है?

लेव्शिनः हाँ, यही...

बोबोयेदोवः शर्म करो, लेव्शिन! तुम्हारी चाँद गंजी हो गयी है, बाल पक गये हैं और फिर भी तुम किसी छोकरे की तरह झूठ बोल रहे हो!... तुम्हारी करतूतें ही नहीं, अफसर तो वह भी जानते हैं जो कुछ तुम्हारे दिल दिमाग में है। बहुत बुरी बात है, लेव्शिन! मेरे हाथों में क्या है?

लेव्शिनः देख नहीं सकता... नज़र कमजोर हैं

बोबोयेदोवः मैं तुम्हें बताता हूँ। ये सरकार द्वारा गैरकानूनी घोषित की गयी किताबें हैं। इनमें लोगों को अपने जार के खिलाफ विद्रोह करने को उकसाया गया है। ये किताबें तुम्हारे घर में देव-प्रतिमाओं के पीछे से मिली हैं... अब बोलो?

लेव्शिन (शान्त से): अच्छा।

बोबोयेदोवः तो तुम मानते हो कि ये तुम्हारी ही हैं?

लेव्शिनः हो सकता है, मेरी ही हों.. किताबें भी सभी एक जैसी होती हैं...

बोबोयेदोवः तुम बुढ़ऊ होकर भी झूट बोल रहे हो।

लेव्शिनः हुज़ूर, मैंने तो बिल्कुल सच बोला है। आपने पूछा था कि मेरे घर में देव प्रतिमाओं के पीछे क्या है, और अगर आप यह पूछ रहे हैं तो इसका मतलब है कि अब वहाँ कुछ भी नहीं है यानी जो कुछ था, वहाँ से निकाल लिया गया है। इसीलिए मैंने जवाब दिया था कि वहाँ कुछ भी नहीं है। आप मुझे शर्मिंदा क्यों कर रहे हैं? मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।

बोबोयेदोव (झेंपकर): सच? सुनो, तुम बहुत बढ़-चढ़कर बातें नहीं करो... मेरे साथ चालाक बनने का नतीजा अच्छा नहीं होगा! किसने दीं तुम्हें ये किताबें?

लेव्शिनः आपको क्या लेना है यह जानकर? यह मैं नहीं बताऊँगा। मैं तो यह भी भूल चुका हूँ कि मुझे ये कहाँ से मिली थीं... आप अपने को परेशान नहीं करें।

बोबोयेदोवः अच्छा... यह बात है? ठीक है... अलेक्सेई ग्रेकोव! ग्रेकोव कौन है?

ग्रेकोवः मैं हूँ।

बोबोयेदोवः तुमसे स्मोलेन्क के कारीगरों में इन्क़लाबी प्रचार के सिलसिले में पूछ-ताछ की गयी थी?

ग्रेकोवः हाँ, की गयी थी।

बोबोयेदोवः इतने जवान और ऐसे प्रतिभाशाली हो? तुमसे मिलकर खुशी हुई!... फौजी पुलिसवालों, इन लोगों को बाहर बरामदे में ले जाओ.. यहाँ बड़ी घुटन हो रही है। याकोव विरियापेव? हाजिर है... आन्द्रेई स्विस्तोव?

(फौजी पुलिसवाले इन्हें बरामदे में ले जाते हैं और हाथ में सूची लिये हुए बोबोयेदोव भी वहाँ जाता है)

याकोव (धीरे से): मुझे ये लोग पसन्द हैं!

तत्यानाः मुझे भी। मगर ये लोग इतने सीधे सादे क्यों हैं?... ऐसे सीधे सादे ढंग से बात करते हैं, सीधे-सादे ढंग से देखते हैं? भला क्यों? इनमें जोश क्यों नहीं? मर्दानगी क्यों नहीं?

याकोवः क्योंकि वे अपनी सचाई में सहज विश्वास करते हैं...

तत्यानाः इनमे ज़रूर जोश होना चाहिए! ज़रूर बहादुरी होनी चाहिए! लेकिन यहाँ.. तुम महसूस करते हो वे सभी को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं!

यकोवः खूब है लेव्शिन!... उसकी आँखे कैसी सब कुछ समझनेवाली, उदास और स्नेहमयी है। वह तो यह कहता लगता है–"क्या रखा है इन बातों में? काश, आप हमारे रास्ते से हट जायें... हमें आज़ादी दे दें... काश, आप एक तरफ़ हो जायें!

जखार (दरवाजे में से झाँकते हुए) : क़ानून के ये ठेकेदार ख़ासे बुद्धू महानुभाव हैं! यहाँ अदालत खोल बैठे हैं.... निकोलाई वसील्येविच तो विजेता बना फिरता है...

याकोवः ज़ख़ार, तुम्हें तो सिर्फ़ यह एतराज है न कि यह सारा क़िस्सा तुम्हारी आँखों के सामने हो रहा है?

ज़ख़ारः हाँ, मुझे तो ये लोग इस ख़ुशी से बख़्श सकते थे!... नाद्या का दिमाग़ बिल्कुल चल निकला है.. वह पोलीना और मेरे साथ गुस्ताखी से पेश आयी, क्लेओपात्रा को उसने "कटखानी बिल्ली" कहा और अब मेरे कमरे में सोफ़े पर पड़ी हुई रो रही है... भगवान ही जानता है कि यह सब क्या हो रहा है!...

याकोव (सोच में डूबते हुए): और जो,कुछ यहाँ हो रहा है, मेरे लिए वह अधिकाधिक बेतुका और घृणित होता जा रहा है।

ज़ख़ारः हाँ, मैं यह समझता हूँ... मगर किया क्या जाये? अगर हमला होता है, तो अपना बचाव तो करना ही चाहिए। घर में चैन की सांस लेने की कोई जगह नहीं रही... सब कुछ उलट-पुलट हो गया है! आज बड़ी नमी है, ठण्ड है... यह बारिश!... बहुत जल्दी आ रही है पतझड़!

(निकोलाई और क्लेओपत्रा बड़े उत्तेजित-से आते हैं)

निकोलाईः अब मुझे पक्का यक़ीन हो गया है कि उन्होंने उसकी मुट्ठी गर्म करके उसे अपने साथ मिला लिया है...

क्लेओपात्राः यह बात खुद उन्हें नहीं सूझ सकती थी... इनके पीछे ज़रूर कोई अच्छा दिमाग़ काम कर रहा है।

निकोलाईः आपके ख़्याल में... सिन्त्सोव है?

क्लेओपात्राः और कौन हो सकता है? लो, यह रहे श्रीमान बोबोयेदोव...

बोबोयेदोव (बरामदे में खड़े हुए) : क्या ख़िदमत कर सकता हूँ?

निकोलाईः मुझे पक्का यक़ीन हो गया है कि उस छोकरे की मुट्ठी गर्म करके उसे साथ मिला लिया गया है... **(फुसफुसाकर बात करता है)**

बोबोयेदोव (धीरे से) : ओ हो? हुँ...

क्लेओपात्रा(बोबोयेदोव से) : आप समझ गये न?

बोबोयेदोव : हुँ... कैसे बदमाश हैं!

(निकोलाई और कप्तान ऊँचे-ऊँचे बातचीत करते हुए दरवाज़े से बाहर जाकर ग़ायब

हो जाते हैं। क्लेओपात्रा को मुड़कर देखने पर तत्याना नज़र आती है)

क्लेओपात्रा : ओह... आप यहाँ है?

तत्याना: क्या कोई और बात हो गयी?

क्लेओपात्रा : मेरे ख्याल से यह सब आपकी बला से... सिन्त्सोव के बारे में सुना?

तत्याना: हाँ, सुन लिया।

क्लेओपात्रा (चुनौती-सी देती हुई) : हाँ, उसे गिरफ़्तार कर लिया गया है! मैं खुश हूँ कि आख़िर तो उन्होंने कारख़ाने का सारा कूड़ा-करकट साफ़ कर डाला है... और आप?

तत्याना : मेरे ख़्याल में मैं कुछ भी महसूस करूँ, आपकी बला से....

क्लेओपात्रा (दुर्भावनापूर्ण प्रसन्नता से): आपको तो हमदर्दी थी न उस सिन्त्सोव से! **(तत्याना की तरफ़ देखकर उसके चेहरे पर कुछ नर्मी आ जाती है)** कैसे अजीब-अजीब ढंग से देख रही हैं आप... चेहरा भी उतरा-उतरा हुआ है... भला क्यों?

तत्याना: शायद मौसम का असर है।

क्लेओपात्रा (उसके पास जाकर) : सुनिये... हो सकता है कि ऐसा कहना मूखर्ता हो. .. मगर मैं हमेशा साफ़ बात कह देती हूँ! बहुत जिन्दगी देखी-भाली है मैंने! बहुत कुछ सहा है... और बहुत जल-भुन गयी हूँ! मैं यह जानती हूँ कि सिर्फ़ औरत ही औरत की दोस्त हो सकती है...

तत्याना: आप मुझसे कुछ पूछना चाहती हैं?

क्लेओपात्रा: पूछना नहीं, बताना चाहती हूँ! आप मुझे पसन्द हैं... आप लोगों से बुतकल्लुफ़ी से मिलती-जुलती हैं, हमेशा बनी-ठनी रहती हैं... और मर्दों से मिलते हुए झिझक महसूस नहीं करतीं। मुझे आपसे ईर्ष्या होती है.... कैसे आप बातचीत करती है, कैसे चलती-फिरती हैं... लेकिन कभी-कभी आप मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती... यहाँ तक कि मैं आपसे नफ़रत भी करने लगती हूँ!

तत्याना: यह दिलचस्प बात है। वह किसलिए?

क्लेओपात्रा (अजीब-सी आवाज़ में) आख़िर आप है कौन?

तत्याना: यानी?

क्लेओपात्रा: मैं यह समझ नहीं पाती कि आप हैं कौन? मैं लोगों को उनके सही रूप में देखना चाहती हूँ, मुझे यह जानना पसन्द है कि वे क्या चाहते हैं? जो लोग यह नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, शायद वे ख़तरनाक होते हैं! उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता!

तत्याना : बड़ी अजीब बात कह रहीं आप! आपके विचार जानने की मुझे क्या ज़रूरत है?

क्लेओपात्रा (घबराकर और जोश से): ज़रूरत है, ताकि लोग घी-खिचड़ी होकर, मिल-जुलकर रहें, ताकि वे एक दूसरे पर भरोसा कर सकें! देख रही हैं न कि वे हमें जान से मारने लगे हैं, हमें लूट लेना चाहते हैं! आप देखती है न कि गिरफ़्तार किये गये लोगों के कैसे उठाईगीरों जैसे तोबड़े हैं? ओह, वे जानते है कि वे क्या चाहते हैं, वे यह जानते हैं! और वे घुल-मिलकर रहते हैं, एक दूसरे पर भरोसा करते हैं... मैं उनसे नफ़रत करती हूँ! मुझे उनसे डर लगता है! और हम जीते हैं एक दूसरे का गला काटते हुए, किसी चीज़ पर भरोसा न करते हुए, एक-दूसरे से किसी तरह भी न जुड़े हुए, हर कोई अपने लिए जी रहा है... हम फ़ौजी पुलिसवालों और सिपाहियों के सहारे जीते हैं-वे अपने बल पर... और वे हमसे अधिक शक्तिशाली हैं!

तत्याना: मैं भी आपसे एक बात साफ़-साफ़ पूछना चहती हूँ... आप अपने पति के साथ सुखी थीं?

क्लेओपात्रा: आप किसलिए यह पूछ रही हैं?

तत्याना: यों ही। जिज्ञासावश!

क्लेओपात्रा (घड़ी भर सोचकर): नहीं। वह मुझे भूलकर हमेशा दूसरे ही झंझटों में उलझा रहता था...

पोलीना (अन्दर आते हुए): सुना आपने? अब पता चला है कि वह क्लर्क सिन्त्सोव समाजवादी हैं! और ज़ख़ार तो उसे सब कुछ बता देता था, यहाँ तक कि सहायक मुनीम भी बनाना चाहता था! ख़ैर, यह मामूली-सी बात है, मगर ज़रा सोचिऐ कि जीना कितना मुश्किल होता जा रहा है! हमारे उसूली दुश्मन हर घड़ी हमारे साथ बने रहते हैं और हमें पता भी नहीं चलता!

तत्याना: कितनी अच्छी बात है कि मैं अमीर नहीं हूँ।

पोलीना: बुढ़ापे में ऐसे कहना! **(नर्मी से)** क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना, आपसे फ्राक को एक बार फिर पहनकर यह देख लेने का अनुरोध किया जा रहा है कि वह फिट है या नहीं... और क्रेप भी आ गयी है...

क्लेओपात्रा : मैं अभी जाती हूँ... तबीयत अच्छी नहीं... घबराहट से दिल धक-धककर रहा है... बीमार होना मुझे पसन्द नहीं!

पोलीना: कहें तो मैं आपको दिल की धड़कन दूर करने की दवाई दे सकती हूँ? ज़रूर फ़ायदा होगा उससे।

क्लेओपात्रा (जाते हुए): मेहरबानी होगी!...

पोलीना: आप चलिये, मैं आ रही हूँ। **(तत्याना से)** हमें इसके साथ और भी अधिक प्यार से पेश आना चाहिए, इससे इसे शान्ति मिलती है। तुमने अच्छा किया कि इससे कुछ बातचीत की... वैसे मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है, तत्याना... तुम्हें खूब बढ़िया ढंग आता है बीच का, सुविधाजनक रास्ता अपनाने का!... मैं जाकर उसे दवाई देती हूँ।

(अकेली रह जाने पर तत्याना बरामदे की तरफ़ देखती है, जहाँ फ़ौजियों की निगरानी में गिरफ़्तार किये गये लोग हैं। याकोव दरवाजे में से झाँकता है)

याको व (हँसते हुए) : मैं दरवाजे के पीछे खड़ा हुआ सुनता रहा हूँ।

तत्याना (अनमने मन से): कहते हैं कि छिपकर दूसरों की बातें सुनना अच्छा नहीं...

याकोवः आम तौर पर भी लोगों की बाते सुनकर मन दुखी होता है। उन पर तरस आने लगता है.... सुनो, तत्याना! मैं यहाँ से जा रहा हूँ...

तत्याना : कहाँ?

याकोव : फिलहाल... यह नहीं जानता... अलविदा!

तत्याना (स्नेह से): अलविदा!... ख़त लिखना!

याकोव : यहाँ तो अब दम घुटता है!

तत्याना (स्नेह से) : तुम कब जा रहे हो?

याकोव (अजीब ढंग से मुस्कराते हुए) : आज... तुम भी चली जाओ... क्या ख़्याल है?

तत्याना : हाँ, मैं भी चली जाऊँगी। तुम मुस्करा क्यों रहे हो?

याकोव : यों ही... शायद अब फिर कभी न मिलें...

तत्याना : फ़जूल की बात कह रहे हो!

याकोव : भूल-चूक के लिए माफ़ी चाहता हूँ!

(तत्याना उसका माथा चूमती है। याकोव उसे दूर हटाते हुए धीरे से हँसता है) तुमने मुझे मुरदे की तरह चूमा है... **(धीरे-धीरे जाता है)**

(तत्याना उसे देखती है, उसका मन होता है कि उसके पीछे-पीछे जाये, मगर तनिक हाथ झटककर रुक जाती है। नाद्या हाथ में छाता लिये आती है)

नाद्या : कृपया आइये बगीचे में चलें... दर्द से मेरा सिर फट जा रहा है... मै अभी मूर्ख की तरह रोती रही हूँ, रोती रही हूँ! अगर मैं बगीचे में अकेली जाऊँगी तो फिर से रोना शुरू कर दूँगी।

तत्याना : किसलिए रोती हो, गुडिया? रोने की कोई बात ही नहीं!

नाद्या : मेरा मन बहुत परेशान है। कुछ सिर-पैर समझ में नही आता। जाने कौन सही है? मौसा कहते हैं वह सही है... मगर मैं ऐसा महसूस नहीं करती! मौसा रहमदिल हैं? पहले मुझे विश्वास था कि वह रहमदिल हैं... मगर अब नहीं जानती! जब वह मुझसे बात करते हैं, तो मुझे लगता है कि मैं खुद बुरी और बुद्धू हूँ... मगर जब मै उनके बारे में सोचती हूँ... और अपने से सभी तरह के सवाल पूछने लगती हूँ... तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता!

तत्याना (उदासी से) : अगर तुम अपने आप से सवाल पूछने लगोगी तो क्रान्तिकारी हो जाओगी...और इस गड़बड-झाले में नष्ट हो जाओगी, मेरी रानी!.

नाद्या : कुछ तो बनना ही चाहिए, कुछ तो!

(तत्याना धीरे से हँसती है)

आप किसलिए हँस रही हैं? कुछ तो बनना ही चाहिए! उम्र भर बुद्धू बने रहने और मुँह बारे घूमने में तो कोई तुक नहीं!

तत्याना : मुझे इसीलिए हँसी आ गयी कि आज सभी ऐसा कह रहे हैं... सभी, अचानक ही!

(वे बाहर जाती है और रास्ते में उन्हें जनरल और लेफ़्टीनेन्ट मिलते हैं। लेफ़्टीनेन्ट फुर्ती से एक ओर को हट जाता है)

जनरल : आम भरती बहुत ज़रूरी चीज़ है, लेफ़्टीनेन्ट! इससे दो मसले एकसाथ हल होते हैं... **(नाद्या और तत्याना से)** तुम दोनों कहाँ जा रही हो?

तत्याना : घूमने

जनरल : अगर तुम्हें रास्ते में कही वह क्लर्क मिल जाये... क्या नाम है उसका? लेफ़्टीनेन्ट, क्या कुलनाम है उस आदमी का जिससे अभी-अभी मैंने आपका परिचय करवाया था?

लेफ़्टीनेन्ट : पोलो.... पोलोगी, हुज़ूर!

जनरल (तत्याना से) : उसे मेरे पास भेज देना। मैं खानेके कमरे में लेफ़्टीनेन्ट और ब्रॉडी के साथ चाय पीने जा रहा हूँ.... हा-हा-हा! **(अपने मुँह पर हाथ रखकर एक अपराधी की तरह इधर-उधर देखता है)** धन्यवाद लेफ़्टीनेन्ट! खूब है आपकी यादाश्त! यह बहुत अच्छा है! अफ़सर को तो अपनी पलटन के हर फ़ौजी का नाम और उसकी सूरत याद होनी चाहिए। फ़ौजी जब रंगरूट होता है, तो खासा मक्कार दरिन्दा होता है-मक्कार, मूर्ख और सुस्त। अफ़सर उसकी आत्मा में घुसकर उसे दरिन्दे से समझदार और कर्त्तव्यनिष्ठ आदमी वनाता है..

(ज़ख़ार परेशान-सा अन्दर आता है)

ज़ख़ार : मामा जी, आपने कहीं याकोव को देखा?

जनरल : नहीं, मैंने नहीं देखा... वहाँ चाय है?

ज़ख़ार : है, है!

(जनरल और लेफ़्टीनेन्ट जाते हैं। खीझा और ग़ुस्से से भरा हुआ कोन बरामदे की तरफ़ से आता है)

कोन, आपने मेरे भाई को देखा है?

कोन (रुखाई से) : नहीं। आज से मैंने अपनी ज़बान को ताला लगा लिया है। किसी को देखूँगा, तो भी नहीं बताऊँगा.... चुप रहूँगा... खैर! जितना बोलना था, बोल चुका...

पोलीना (आती है) : किसान आये हैं। वे फिर से लगान स्थगित करने की प्रार्थना कर रहे हैं।

ज़ख़ार : वाह! खूब वक़्त चुना है उन्होंने भी...

पोलीना : वे शिकायत कर रहे हैं कि फ़सल अच्छी नहीं हुई और उनके पास लगान अदा करने के लिए कुछ भी नहीं है।

ज़ख़ार : वे हमेशा ही ऐसे रोते रहते हैं!... तुमने याकोव को तो कहीं नहीं देखा?

पोलीना : नहीं। उनसे क्या कहूँ मैं?

ज़खार : किसानों से? उन्हें दफ़्तर में भेज दो... मैं उनसे बात नहीं करूँगा!

पोलीना : मगर दफ़्तर में तो कोई है ही नहीं! तुम्हें मालूम ही है कि हमारे यहाँ हर चीज़ गड़बड़ हुई पड़ी है। दोपहर के खाने का वक़्त होने वाला है, और वह कप्तान चाय पर चाय माँगता जा रहा है.... समोवार खाने के कमरे में ही सुबह से अब तक उबल रहा है। कुल मिलाकर पागलख़ाने की सी ज़िन्दगी है!

ज़ख़ार : जानती हो, याकोव अचानक यहाँ से कहीं जाना चाहता है?

पोलीना : मैं यह कहने के लिए माफ़ी चाहती हूँ, पर उसका कहीं चले जाना अच्छा ही होगा...

ज़ख़ार : हाँ, बेशक। वह बहुत ही तंग करने लगा है–उलटी-सीधी बातें करता रहता है... कुछ ही देर पहले वह मेरे पीछे पड़ गया, पूछने लगा कि मेरी पिस्तौल से कौए को भी मारा जा सकता है या नहीं? बहुत ही गुस्ताख़ी से पेश आ रहा था। आख़िर चला गया और पिस्तौल भी अपने साथ ले गया... चौबीसों घण्टे नशे में धुत्त रहता है...

(दो फ़ौजी पुलिसवालों और क्वाच की निगरानी में बरामदे की तरफ़ से सिन्त्सोव आता है। पोलीना लोर्नेट्ट में से उसे देखकर बाहर चली जाती है। ज़ख़ार घबराकर अपनी ऐनक ठीक करता है, फिर पीछे की ओर हट जाता है)

(तिरस्कारपूर्वक) बड़े दुख की बात है, श्रीमान सिन्त्सोव!... बहुत अफ़सोस है मुझे.. आपके लिए, बहुत ही!

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए) : आप बिल्कुल परेशान न हो... इसकी कोई ज़रूरत भी नही हैं?

ज़ख़ार : ज़रूरत है! लोगों को एक दूसरे से हमदर्दी होनी चाहिए...मेरे विश्वासपात्र ने चाहे मुझसे विश्वासघात ही किया हो, बुरे दिनों का शिकार होने पर उससे हमदर्दी करना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ... हाँ! अच्छा, तो विदा, श्रीमान सिन्त्सोव!

सिन्त्सोव : अलविदा।

ज़ख़ार : आपको मुझसे... मुझसे तो कोई शिकायत नहीं है न?

सिन्त्सोव : बिल्कुल शिकायत नहीं है।

ज़ख़ार (झेंपकर) : तो ठीक है। विदा! आपकी तनख़्वाह आपको भेज दी जायेगी... **(बाहर जाते हुए)** नाक में दम आ गया है! मेरा घर तो घर ही नहीं रहा, फ़ौजी पुलिस का दफ़्तर बन गया है!

(सिन्त्सोव व्यंग्यपूर्वक मुस्कराता है। क्वाच बड़े ध्यान से उसे घूरता रहता है, विशेष रूप से उसके हाथों को। सिन्त्सोव उलटे क्वाच की आँखों में झाँकता है। क्वाच व्यंग्यपूर्वक मुस्कराता है)

सिन्त्सोव : ऐसे घूर क्यों रहे हो? क्या बात है?

क्वाच (खुश होकर) : कुछ नहीं... कुछ नहीं!

बोबोयेदोव (आता है) : श्रीमान सिन्त्सोव, आपको अभी शहर भेजा रहा है।

क्वाच (ख़ुश होते हुए) : हुजूर, यह तो श्रीमान सिन्त्सोव है ही नहीं, दूसरा आदमी है!...

बोबोयेदोव : क्या मतलब? साफ़-साफ़ बात करो!

क्वाच : मैं इसे जानता हूँ। यह ब्रयान्स्क कारखाने में काम करता था। वहाँ इसका नाम **मक्सिम मार्कोव** था!.... जनाब, दो बरस पहले हमने इसे वहाँ गिरफ़्तार किया था!.... मैं जानता हूँ कि इसके बायें अँगूठे का नाखून गायब है! अब अगर यह यहाँ किसी दूसरे के नाम से रह रहा है, तो जरूर ही जेल से भाग आया है!

बोबोयेदोव (खुशीभरे आश्चर्य से): क्या यह सच है, श्रीमान सिन्त्सोव?

क्वाच : बिल्कुल सच है, सरकार!

बोबोयेदोव : तो आप सिन्त्सोव हैं ही नहीं! खूब, बहुत खूब...

सिन्त्सोव : मैं कोई भी क्यों न होऊँ, आपको मेरे साथ शराफत से पेश आना होगा. .. यह याद रखिये!

बोबोयेदोव : ओहो! साफ पता चलता है कि आप मामूली हस्ती नहीं हैं। क्वाच, तुम इसे अपनी निगरानी में रखना!... खूब चौकन्ने रहना!

क्वाच : जो हुक्म, सरकार!

बोबोयेदोव (खुश होकर) : तो श्रीमान सिन्त्सोव, या जो भी हो आपका नाम, हम आपको शहर भेज रहे हैं। **(क्वाच से)** शहर पहुँचते ही अफसर को इसके बारे में जो कुछ जानते हो, सब बता देना। फौरन ही इसका पुराना रिकार्ड तलब करना... खैर, यह मैं खुद करूँगा! जरा रुको, क्वाच... **(जल्दी से बाहर जाता है)**

क्वाच (खुशमिजाजी से) : तो हमारी फिर मुलाकात हो गयी!

सिन्त्सोव (व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए) : आपको खुशी हो रही है न?

क्वाच : खुशी कैसे नहीं होगी? पुराने परिचित ठहरे!

सिन्त्सोव (नफरत से) : अब तक आपको यह धन्धा छोड़ देना चाहिए था। आपके बाल पक गये हैं, मगर अभी एक कुत्ते की तरह आप लोगों का पीछा करते रहते हैं... क्या आपको यह घटिया काम नहीं लगता?

क्वाच (खुशमिजाजी से) : ऐसा कुछ नहीं, मुझे इसकी आदत हो गयी है! तेईस बरस से यही कर रहा हूँ... और सो भी कुत्ते की तरह नहीं! अफसर मेरी बड़ी इज्जत करते हैं–सम्मान-पदक देने का वचन दे रखा है उन्होंने! अब जरूर दे देंगे!

सिन्त्सोव : मेरे कारण?

क्वाच : हाँ, आपके कारण! आप भागे किस जगह से थे?

सिन्त्सोव : बाद में पता लग जायेगा।

क्वाच : सो तो लग ही जायेगा! ब्रयान्स्क कारखाने में काम करने वाले उस आदमी की याद है–जिसके काले बाल थे और जो चश्मा लगता था? अध्यापक सावीत्स्की की? कुछ समय पहले उसे भी हमने फिर से गिरफ्तार कर लिया था... मगर वह जेल में चल बसा... बहुत बीमार था! मुट्ठी भर लोग ही तो है आप!

सिन्त्सोव : थोड़ा सब्र कीजिए... बहुत हो जायेंगे हम!

क्वाच : सच? यह अच्छी बात है! जितने अधिक राजनैतिक क़ैदी होंगे, हमारे लिए उतना ही अच्छा होगा!

सिन्त्सोव : अधिक इनाम मिलेंगे, ठीक है न?

(दरवाज़े में बोबोयेदोव, जनरल, लेफ़्टीनेन्ट, क्लेओपात्रा और निकोलाई दिखाई देते हैं)

निकोलाई (सिन्त्सोव की तरफ़ देखते हुए) : मै ऐसा ही महसूस कर रहा था... **(चला जाता है)**

जनरल : खूब आदमी निकला यह!

क्लेओपात्रा : अब साफ़ हो गया है कि कहाँ से यह हवा चली!

सिन्त्सोव (व्यंग्य करते हुए) : सुनिये श्रीमान कप्तान, क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि आप बेहूदा व्यवहार कर रहे हैं?

बोबोयेदोव : मुझे... मुझे अक़्ल नहीं सिखाइये!

सिन्त्सोव (जोर देकर) : मगर मैं ऐसा करूँगा! यह वाहियात तमाशा बन्द कर दीजिये!

जनरल : ओ-हो... क्या तेवर है?

बोबोयेदोव (चिल्लाते हुए) : क्वाच! ले जाओ इसे यहाँ से!

क्वाच : जो हुक्म, सरकार! **(सिन्त्सोव को वहाँ से ले जाता है)**

जनरल : कोई दरिन्दा ही है, है न?... देखिये तो... कैसे चीखता है!

क्लेओपात्रा : मुझे यकीन है कि यह सारी आग इसी की लगायी हुई है!

बोबोयेदोव : यह मुमकिन है... बहुत मुमकिन है!

लेफ़्टीनेन्ट : इस पर मुक़दमा चलाया जायेगा न?

बोबोयेदोव (व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए) : इन्हें तो हम नमक-मिर्च लगाये बिना ही डकार जायेंगे... ऐसे ही काफ़ी ज़ायकेदार है ये तो!

जनरल : यह खूब कहा ज़िन्दा घोंघे की तरह... मुँह में डाला-हड़प!

बोबोयेदोव : बिल्कुल ऐसे ही! तो हुज़ूर, हम जल्द ही शिकार पर हाथ साफ़ करके आपको इस बकझक से निजात दिला देंगे! निकोलाई वसील्येविच, आप कहाँ है?

(सभी बाहर जाते हैं। बरामदे की तरफ़ से थानेदार दाखिल होता है)

थानेदार (कोन से) : पूछ-ताछ यहाँ की जायेगी?

कोन (उदासी से) : मुझे मालूम नहीं... मुझे कुछ भी मालूम नहीं!

थानेदार : मेज़ और काग़ज़ात तो यहाँ हैं... मतलब यह कि पूछ-ताछ यहीं होगी! **(बरामदे में किसी से कहता है)** इन सबको यहाँ ले आइये! **(कोन से)** मरनेवाले से गलती हो गयी-उसने तो यह बताया था कि किसी लाल बालोवाले ने गोली चलायी है, मगर मुजरिम निकला काले बालोवाला!

कोन (बड़बड़ाते हुए) : ग़लतियाँ तो ज़िन्दा लोगों से भी होती हैं...

(गिरफ़्तार किये हुए लोगों को बरामदे से लाया जाता है)

थानेदार : यहाँ खड़ा कर दो इन्हें... क़तार में! बुड्ढे, तुम सिरे पर खड़े हो जाओ!

तुम्हे शर्म नहीं आती! शैतान बुड्ढे!

ग्रेकोव : आप ऐसी गन्दी ज़बान का क्यों इस्तेमाल कर रहे हैं?

लेब्शिन : तुम कुछ परवाह नहीं करो, अलेक्सेई!... कुछ भी कहने दो इसे.

थानेदार (धमकाते हुए) : मैं तुम्हारी अक्ल ठिकाने करूँगा!

लेब्शिन : कोई बात नहीं! इनकी नौकरी ही ऐसी है... लोगों की बेइज़्ज़ती करने की।

(निकोलाई और बोबोयेदोव आते हैं, मेज़ के सामने बैठ जाते हैं। जनरल कोने में पड़ी हुई एक आराम कुर्सी पर बैठ जाता है और लेफ़्टीनेन्ट उसके पीछे खड़ा हो जाता है। क्लेओपात्रा और पोलीना दरवाज़े में खड़ी होती हैं। उनके पीछे तत्याना और नाद्या भी आ खड़ी होती हैं। दुखी-सा ज़खार उनके कन्धों के ऊपर से देखता है। पोलोगी हिचकिचाता हुआ और सम्भल-सम्भलकर अन्दर आता है, मेज़ के सामने बैठे लोगों को नमस्कार करता है और घबराकर कमरे के बीच में ही खड़ा रह जाता है। जनरल उँगली से इशारा करके उसे अपने पास बुलाता है। वह पंजों के बल चलता हुआ जनरल की आरामकुर्सी के पास पहुँचकर वहीं खड़ा हो जाता है। र्याब्त्सोव को लाया जाता है)

निकोलाई : हम कार्रवाई शुरू करते हैं। पावेल र्याब्त्सोव!

र्याब्त्सोव : क्या है?

बोबोयेदोव : "क्या है" नहीं, गधे, बल्कि यह कहो-"क्या हुक्म है, हजूर!"

निकोलाई : तो आप अब भी अपनी इसी बात पर अड़े रहना चाहते है कि आपने ही डायरेक्टर की हत्या की है?

र्याब्त्सोव (नाराज़गी से) : मैं कह तो चुका हूँ... अब और क्या चाहते हैं मुझसे?

निकोलाई : आप अलेक्सेई ग्रेकोव को जानते हैं?

र्याब्त्सोव : वह कौन है?

निकोलाई : वह, जो आपके साथ खड़ा है!

र्याब्त्सोव : वह हमारे साथ काम करता है।

निकोलाई : मतलब यह कि इससे जान-पहचान है?

र्याब्त्सोव : हम सभी एक दूसरे को जानते-पहचानते हैं।

निकोलाई : बेशक। मगर क्या आप इसके घर आते-जाते थे, इसके साथ घूमने-फिरने जाते थे,... दूसरे शब्दों में, क्या आप इससे काफ़ी घुले-मिले हुए हैं? अच्छे दोस्त हैं?

र्याब्त्सोव : मै तो सभी के साथ घूमता-फिरता हूँ। हम सभी दोस्त हैं।

निकोलाई : सच? मेरे ख़्याल में तो आप झूठ बोल रहे हैं! श्रीमान पोलोगी, हमें बताइये कि र्याब्त्सोव और ग्रेकोव के आपसी सम्बन्ध कैसे हैं?

पोलोगी : पक्की दोस्ती के सम्बन्ध... यहाँ दो दल हैं। जवान लोगों के दल का मुखिया है ग्रेकोव। यह अपने से ऊँचे लोगों के प्रति काफ़ी गुस्ताख़ी का रवैया रखता है। बड़ी उम्र के लोगों के दल का नेता येफ़ीम लेब्शिन है... यह शख़्स लोमड़ी की तरह मक्कार है और बड़ी ऊँची-ऊँची बातें करता है...

नाद्या (धीरे से) : ओह, कैसा कमीना है!

(पोलोगी घूमकर नाद्या की तरफ़ देखता है और फिर निकोलाई पर प्रश्नसूचक दृष्टि डालता है। निकोलाई भी नाद्या की तरफ़ देखता है)

निकोलाई : आप कहते जाइये!

पोलोगी **(उसांस लेकर)** : इन दोनों दलों के बीच की कड़ी है श्रीमान सिन्त्सोव, उसके इन सभी से बहुत अच्छे सम्बन्ध हैं। यह हज़रत सारधारण दिमाग़ रखनेवाला मामूली आदमी नहीं है। वह तरह-तरह की किताबें पढ़ता है और हर चीज़ के बारे में अपना दृष्टिकोण रखता है। मेरे फ़्लैट के सामनेवाले इसके फ़्लैट में तीन कमरे हैं....

निकोलाई : ऐसी तफ़सीलों की ज़रूरत नहीं है...

पोलोगी : मैं माफ़ी चाहता हूँ... मगर सचाई पूरी बातों के ज़िक्र की माँग करती है! सभी तरह के लोग इसके फ्लैट में आते-जाते हैं उनमें से कुछ यहाँ भी हाज़िर है, जैसे कि ग्रेकोव.

निकोलाई : ग्रेकोव, क्या यह सच है?

ग्रकोव **(शान्ति से)** : मुझसे कोई सवाल न पूछा जाये-मैं जवाब नहीं दूँगा।

निकोलाई : कुछ फ़ायदा नहीं होगा इससे!

नाद्या **(ऊँची आवाज में)** : शाबाश, ग्रेकोव!

क्लेओपात्रा : यह क्या हो रहा है?

ज़ख़ार : नाद्या, प्यारी बिटिया!...

बोबोयेदोव : शी...

(बाहर बरामदे में शोर सुनाई देता है)

निकोलाई : जिन लोगों का इस मामले से सम्बन्ध नहीं, ऐसे लोग यहाँ फ़ालतू हैं...

जनरल : हुँ... कौन है यहाँ फ़ालतू?

बोबोयेदोव : क्वाच, जाकर देखों, यह शोर कैसा है?

क्वाच : हुज़ूर, कोई ज़बरदस्ती अन्दर आने की कोशिश कर रहा है! वह भला-बुरा कह

रहा है और भीतर घुसना चाहता है!

निकोलाई : उसे क्या चाहिए? वह है कौन?

पोलीगी: मैं अपना बयान जारी रखूँ या रुक जाऊँ?

नाद्या : ओह, नीच कहीं का!

निकोलाई : जरा रुक जाइये... जिन लोगों का यहाँ कोई सरोकार नहीं, ऐसे फ़ालतू लोगों से मैं जाने का अनुरोध करता हूँ!

जनरल : इसका... इसका क्या मतलब समझा जाये?

नाद्या (जोर से चिल्लते हुए) : यहाँ आप ही फ़ालतू हैं! मैं नहीं, आप! आप हर जगह फ़ालतू हैं... मैं यहाँ आपने घर में हूँ! यह तो मैं इस बात की माँग कर सकती हूँ कि आप यहाँ से चले जायें...

ज़ख़ार (उत्तेजित होकर नाद्या से) : जाओ यहाँ से! फ़ौरन.... चली जाओ!

नाद्या : सच? तो यह बात है!... तो मतलब यह है कि मैं... सचमुच मैं ही फालतू हूँ यहाँ! मैं जाती हूँ, मगर जाने से पहले यह कह देना चाहती हूँ...

पोलीना : इसे मना कीजिए.. वरना यह जरूर कोई भयानक बात कह देगी!

निकोलाई (बोबोयेदोव से) : फौजी पुलिस वालों से कह दीजिए कि दरवाजा बन्द कर दें।

नाद्या : आप सभी बेहया लोग हैं... अपके पास दिल नहीं है... सभी दयनीय ... अभागे हैं...

क्वाच (खुश-खुश अन्दर आता है) : हुज़ूर! एक और अपने जुर्म का इक़बाल करना चाहता है!

बोबोयेदोव : क्या?

क्वाच : एक और हत्यारा आ गया है!

(बड़ी-बड़ी मूंछों और लाल बालोंवाला नौजवान अकीमोव धीरे-धीरे मेज़ की तरफ़ बढ़ता है)

निकोलाई (अनचाहे उठते हुए) : आप क्या चाहते हैं?

अकीमोव : डायरेक्टर की हत्या मैंने की है।

निकोलाई : आपने?

अकीमोव : हाँ, मैंने।

क्लेओपात्रा : **(धीरे से)** : ओह.. नीच! इसके पास आत्मा भी है!...

पोलीना : हे भगवान! ये कैसे भयानक लोग हैं!

तत्याना (शान्ति से) : आखिर जीत इन्हीं लोगों की होगी!

अकीमोव (नाक-भौंह सिकोड़कर) : तो अब क्या बाक़ी रह गया? लीजिए, मैं हाज़िर हूँ! मैंने हत्या की है।

(सभी लोग हतप्रभ हो जाते हैं। निकोलाई बोबोयेदोव के कान में झटपट कुछ फुसफुसाता है। बोबोयेदोव चकराया-सा मुस्कराता है। गिरफ़्तार किये हुए लोगों में ख़ामोशी छाई रहती है, सभी निश्चल खड़े रहते हैं। नाद्या दरवाज़े में खड़ी-खड़ी अकीमोव को देखती और रोती है। पोलीन और ज़ख़ार कुछ खुसुर-फुसुर करते हैं। खामोशी में तत्याना की धीमी-सी आवाज साफ़ सुनाई देती है)

तत्याना (नाद्या से) : रोओ नहीं, आखिर जीत इन्ही लोगों की होगी!

लेव्शिन : ओह, अकीमोव, व्यर्थ ही तुमने...

बोबोयेदोव : ख़ामोश!

नाद्या (अकीमोव से) : आपने ऐसा क्यों किया? क्यों किया?

लेव्शिन : चिल्लाइये नहीं, हुज़ूर। मैं आपसे उम्र में बड़ा हूँ।

अकीमोव (नाद्या से) : आप यहाँ कुछ नहीं समझ पायेंगी-यही बेहतर है कि बाहर चली जायें...

क्लेओपात्रा : और यह शैतान बूढ़ा कैसा महात्मा बन रहा था!

बोबोयेदोव : क्वाच!

लेव्शिन : अब तुम चुप क्यों हो, अकीमोव? बोलो तो! बता दो कि कैसे डायरेक्टर ने तुम्हारी छाती पर पिस्तौल रख दी थी और तब तुमने उस पर...

बोबोयेदोव (निकोलाई से) : सुना आपने, यह बूढ़ा इसे क्या पट्टियाँ पढ़ा रहा है? ओह, झूठा बुड्ढ़ा!

लेव्शिन : मैं झूठा नही हूँ।

निकोलाई : और अब आपको क्या कहना है, र्याब्त्सोव?

र्यब्त्सोव : मुझे क्या कहना है...

लेव्शिन : चुप रहो। तुम-चुप रहो! ये बहुत चालक लोग हैं, शब्दों का हममे कहीं अधिक अच्छा इस्तेमाल करना जानते हैं...

निकोलाई (बोबोयेदोव से) : धक्के देकर इसे यहाँ से निकाल दीजिए!

लेव्शिन : धक्का देकर अब आप हमें बाहर नहीं निकाल सकेंगे! लद गये वे ज़माने-बहुत धक्के दे चुके! बहुत अरसे तक हम क़ानूनी अन्धेरेगर्दी के वातावरण में जी लिये! अब हम खुद ज्वाला की तरह भभक उठे हैं-इस ज्वाला को नहीं बुझा पायेंगे! किसी भी तरह की धमकियों से नहीं बुझा पायेंगे इस ज्वाला को!

(परदा गिरता है)